







श्रीम्य कुन्यकुन्यामार्थं विरक्ति— पंचास्तिकाय टीका द्वितीय खण्ड

ि नवपदार्थंदर्भण।

टीमानार — श्रीमान् निनर्गप्रमुख पर्वदिवासर-

प्रश्नाचारी चीतल्यमाद्वी, विद्यान, दोवंदर संग्वित्यक व्यवस्थाति कानुसर चर्म, मानुष्के, प्राचित वैद्यालक भारति स्ववस्था

्रियात्राचीयात्री सामा विसेक्षामध्ये तेत्र स

लयनकांन सामा सामा जिनेश्वरतानका केन, सुपुत्र स्वर साला विशेषस्माधकीको सोरसे, अदेने तिसक समस्यार्थ गाँउनाम्ब गाँव ४८ वे

वर्षरे द्वार संदर्भ नेट १

00000 4 G4

प्रकाशक-मूछचन्द् किसनदास कापडिया, काशक 'जैनमित्र' व मालिक दि॰ जैन पुस्तकालय, चंदावाडी-सुरत ।



मुदक-भूलचन्द्र किसनदास कापद्विया, "तैर्नातत्रय" त्रेग, रासाध्या रेकला, तामनाठाको शेष-सुरता।

都就是然



श्री निनेन्द्रके परणकानके प्रतापने इत पंचारिनद्वाच श्रंम ही संस्टन वृत्ति वयदीना वार्यकी देशामाको पूर्वता इस सन्धर्म होन्द्र है वर्षों है इस दिनीय मानमें सुन्धताने नव परापाँका सद्भव है। इत्तिन्देव देशका नाम नवपद्रिपर्यक्ष वस्ता गया है। नो आलिक आनन्द्रके रामेनी है व हार्तिके अपास्कर रेज्य है। स्रीकृत्युन्तायार्थ स्वाचीनीक सर्व ही ग्रम्मको पुनः पुनः पट्टा वाहिये और नमन करना आदिये। यह आवार्य विश्वम संक्ष्य भर्मे होगए हैं। सिन्धुन्दे जिल्ला स्वाचीनी सर्व ही क्ष्यां कि स्वाचीनी स्वाचीन स्वाचीनी स्वाचीन स्वाची

हुन है वर्षने पर्सा अनुपन करणजानका जान है। हम अपने हो बहुन कृतार्थे मानने हैं जो हमारे हारा परन अनुभवी आवार्थेशी कर नीचे किये बार म्राम्थेशि संस्कृत वृत्तियी

देशमाश होगई है किनकी भाषा अबनक नहीं हुई थी---१-श्री नियमसार, मेन्टन वृत्ति पद्मयममरुपारी रहन

२-श्री समयसार " त्रवमेनाचार "

२-श्री मनचनसार " " " भाग तीन मार्गोमें ज्ञान, जेय तथा चान्त्रितस्वदीपिका। ४-श्री पंचास्तिकाय दो भागेमि-पचास्त्रिकायर्गण »

४-श्री पंचास्तिकायः दा भागाम-पंचास्त्रकायद्वणः -नवपदार्थदर्पत्र ।

संक्षिप्त जीवनचरित्र-

श्रीमान् स्वर्गीय लाला विशेश्वरनायजी जन

श्रीमान् लाला विशेश्वरनाधनी लखन्ऊमें एक धर्मात्मा प्रति-वित व्यक्ति थे ।

रईस-लखनड ।

आपका जन्म विक्रम मण १९१६में हुआ था। आपके पिता लाला भरोप्रमादनी मित्तलगोत्र यद्यदान दि॰ जैन अच्छी नियदिके

गृहस्य थे। ला॰ भैरोपमावनीके ४ पूत्र जीर २ उथी भी मामे बड़े पुत्र हा॰ लड़ीमलबी, उनमें होटे रा॰ दें - रजी, उनमें छोटे ला॰ मभूत्रबालनी बमबमे होटे जावनाहर है । दरस्ता पूर्वा ने।

आपके बडे माई ला ब्लारीसल ने - केन्द्र वास्टि-अलीशाहके यहा (बलकता) महिया पुरवने कानान हेरे थे | निप्त वक्तसे नवाय साहब लरानऊ हो ऋग महिस्तान वाने लगे थे.

त्रमें उनकी भी अभनी दुकान भटा के कार र " ' येकी-मलती, ला॰ प्रभुद्धशालकी और ला॰ दिलेगार ता विज्ञान संया वताजीका दाम अलग २ करने थे। आप शावनगरमे गुलपदनके वरी

थान बंगेरा लाइर लचनडमे बेचने थे। लखडानमे कपटेपर चिक्र-मका काम गनवादर कलकता वर्गस्टमें बेचने थे। आप बाज अप-म्थामे ही बहुत उद्योगी थे। आपड़ी धर्मधी तरफ भी विशेष रुचि थी । आपके बड़े भाई हाला ल्झागलभीके २ पत्र और २ पत्रियां थीं। वहे पुत्र श्रीमान स्वर्शीय लाला दामोटरदायनी थे जिनका





श्री० स्व० व्याचा विशेषस्नाधनी जैन रईम-उखनऊ।

श्राः स्वः लाजा विशिष्यस्तायना नन रहम-उत्तन भन्म-सं• १९१६ स्वर्गवास-मः १९८६



श्रीमान लाला जिनेश्वरदामजी जैन. मृषुत्र श्रीः लाला विद्येश्वरमाधजी-स्टब्स्स ।

..



त्रके ब्राह्कोंको मेट किया है। ठाळा निनेधरदासमीके २ सुपुत्र चिरंमीब मोतीचन्द्र व ताराचन्द्र हैं और २ पुत्रियां हैं।कार्ल विशेक्षरमायमी व ठाळा दामोदरदासमी व ठाळा दुर्गामशादनीका

संग कारोबार एकडीमें बहुत वर्षीसे चल रहा है। मिस वक्त छखनऊके नवाव वानिदभली साहबका स्वर्गवास हीगमा था उस बक्त आपके बड़े माई लाला लखीमलनीको बहुत नुकप्तान उठाना पड़ा था। ठाठा लझीमलनी दुकान उठाकर छल-नऊ नानेनी तथ्यारी कररहे थे। इतिफान्नसे लाला विशेधरनाथनी चिकनका माल नेचने कलकता पहुंच गये । आपने वहांकी हालत देलकर अपने बड़े माई लाला उल्लीमनवीमें कहा कि आप सल-मऊ न नाइये । यहां कलकत्तामें ही चिक्रनके मालकी दुकानकर लीनिये । इम भाप यहां रहेंगे और छड़के खलनऊसे चिकनका माल बनवाहर मेमा हरेंगे। ला॰ हरूरीमलमीने बाएकी बात मान ली । आपटी इन्द्रतेमें ही छोड़ा और आप दलनऊ चले आए भीर अपने बड़े पुत्र श्रीमान ला॰ दामोदश्दासमीसे बहा कि अब तुमको परना छोडना होगा और यहां अपने दोनों भारपेकि नामसे दुष्टान अनी होगी । हम इन्तरतेमें दुष्टान करेंगे तम यहांसे मान बनवाकर मेमा करना । ठा • दामोदरवासमीने अपने पिताकी मात्रा मानकर परना छोड़ दिया और रुखनऊमें दागोदरदास दरगामसा-दहे नाममे दहान खोख दी । हा॰ हरूनीमलभीने इतहते माहर

तुःगपट्टी बानारमें एक दृष्टान किराये पर लेक्टर विशेधरनाम दागी-

दरदायके जामसे दृष्टान सील दी । आपकी कलकतेवाली दृष्टान म लगनजनानी दुवानने गुन सम्बी की | स्थानजकी दुवानसे चिक्रका मान बलक्लेकी दुकानके बनावा और भी बहुत दूर बड़ेर शहरों (वंदरें, बहमदाबाद, दिखी बादि स्थानों)में माने लगा ! आपके मनी है लाला दामोदरदासभी बहुत बुद्धिमान व परोपकारी थे । लगना नेन समाके मंत्रित्वका कार्य २१ वर्षतक स्तान्ता दामोद्रदानजीने बहुत उत्तव रीतिने दिया था । स्लनऊमें त्री कुछ पर्मेंद्री रीनक है वह राजा दायोदरश्रामणीके ही गार् प्रयत्नदा फल है । लाला दामीदरदासनी कचदरीके कार्योंने भी बड़े चतुर ये, बढीने हो भी आपकी सम्मतिमें लाभ पहुंचता या । शेतांपर मैन समानक साथ जो श्री सम्मेदशिसम्ब्री पुनाका मुक्दमा चला था उसमें लाला दामोदरदासमीकी पामाणिक गवाहीका हाईकोर्टके ननीपर भी असर पड़ा था । जाप धर्मके कार्मोर्ने हरतरहसे मुस्तैद रहते थे। हा॰ वामोदरदासमीने ही हा॰ निनेदरदासमीकी ध्यापरका कार्य निगाकर बहुत होशियार कर दिया था। छा • विदी-व्यरनायनीने १ मन्तवा श्री सम्मेदशिलरतीकी बाबा की भी, और भी बहुतमें तीथोंकी जाप बाजा धर चुके वे । आपने अपनी ६० वर्षकी उमरने ही रात्रिमें धान पानी वर्गेरह कुल चीमेंका त्याग कर दिया था । आप हर षष्टमी, चतुर्दशीको एकश्चना करते थे । भापने अपनी कोटी छापाबाजारमें एक मनोज्ञ चैत्यालय श्री चन्द्र-भमु मगदानका बनवाया या उसमें रोजाना आप पूजन करते थे । आपक्षे डाक्टरी दबाईका भी जनमपर्यन्त त्याग वा । बानारकी कुल भिटाई व पूरी बगैरहका भी आपको त्याग था। इसके भलावा

हो. मैं (इसी ही बान नहीं मानूंगा | जब आप (इसी) तरह नहीं

माने तब ला॰ बरातीलालनी, जनिवाद्यमसे जपने मामा श्रीमान नेन प॰ मू॰ प॰ दि॰ ब्रह्मचारी शीतन्त्रसाइनीको हे आपे (उस साल ब्रह्मचारीमीने लखनऊमें चातुर्माम किया था) ब्र॰नीके समझानेसे बहुत मुश्किलसे आपने दवाई व पानी ग्रहण किया था। स्रापके परिणाम अन्त समय तक बहुत उत्तम रहे । बापने अपने कटम्बीमनींसे स्वर्गवास होनेके चार बांच मडीने पडलेडीसे ममस्व -स्याग दिया या ह अब हम पाठकोको कुछ आपके सुपुत्र श्रीमान् लाला जिनै-भरदासनीका परिचय करा देशा उचित समझते हैं। श्रीमान हाला निनेश्वरदासनी योग्य हैं, लाए इल इतावाली दुशनके अलावा -छलनऊमें भी ५ दुकानें शो निम्न नामसे हैं उन सबका काम -सम्हालनेमें योग देते हैं। दामोदरदास दुर्गापमाद, अहिबागन । दामीदरदास निनेधरदास, कोठीकपडा छापाबानार । मिनेदबादास गोटेवाले, विवट्रियाप्ट्रीट | बरातीलाल जैन एण्ड कंपनी, बहियागंज }

भरातीकार जैन कोटी बरतन, वमीनागद । दृक्तानीके वकावा व्यवनदर्भे बहुतसी दृक्ताने व मकानात किरायेपर वकते हैं उनका भी मवंच रखते हैं। संवत १९८१ साधगासमें व्यवनदर्भे भी भा• व• दि॰ जैन परिवरके व्यविदेश- कहे अवसरपर भी जैनवमंबदर्शनी समा करनजर वार्षिक उस बगर आप समापनि एक सातके बातने पुने गये हैं विशास मासा आरने अपने ग्रुपुत विश्तेष जोशीचरफ विशाह जनविधिसे बहु पुस्तवाके सार श्रीमार काना ग्रुपता वर्षामा अस्ति होतुर्थों है सा

विया था। यसेवी राज्य भी भाषधी विरोध रुपि है। माद अपन बोटीक विन्यानकों रोजाना पूजन बरते हैं। इस श्रीकोने वार्य-बाने हैं कि भाष विशास होकर हमेरा धर्म व जानित्री सेवा करं हहें। आपने अपने विशासान्य विद्यापरनारसीकी स्मृतिमें हा

येवास्निकाय शकाके हितीयभाग-जवक्यायेदर्गेगडी प्रशस्ति कराह झानदानका महायामनीय कामें किया है है

यह अन्य निर्वामिक उन सब आहर्यों हो मेरने दिया भए हैं भी बी॰ स॰ १४९६में निर्नामिक आहरू थे। माशा है अन् श्रीमान भी ऐसे अपूर्व सानदानका अनुबहुत ब्रोसे ।

शुद्ध्यशुद्धि । ^{असुद} ^{अनसे}

1 प सन्तु त्य सानु त्य प्रित्य प्रित्य सान्त्य प्रित्य स्था प्रित्य प्रित्य सान्त्य प्रित्य सान्त्य प्रित्य सान्त्य स				
12 6 जानती आनती 11 1 वर्ग जानता हुए जानत 12 12 14 धेरर प्रतित देशर संसार 12 15 वर्ग जानता हुए जानत 13 वर्ग जानता हुए जानत 13 वर्ग जानता हुए जानता 14 वर्ग वर्ग जानता 15 वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग	đ٥	न्यक	अ गुद	সূত্র
१६ १४ सेम्प्रास्ति सेम्प्र सोमागा १६ प बल्दु स्पर् स्वाद्ध स्	13	ę,	ञानदो	आनदो
१६ प महिनम् पहिनम् १९ ८ महिनम् पहिनम् १९ ८ महिनम् १९ ४ निर्मा सेटिय प्रीव क्ष्मित्र स्थान्य । १९ ६ निर्मा सेटिय प्रीव क्ष्मित्र स्थान्य । १९ ६ प महिन्दे उददर्ग दिनी महिन्द स्थान्य । १९ ६८ प्राप्तिक उददर्ग दिनी महिन्द स्थान्य । १९ ६८ प्राप्त स्थान्य प्राप्तक । १९ ६८ प्राप्तक प्राप्तक । १९ ६८ प्राप्तक । १९ ६८ प्राप्तमा । १९ ६८ प्राप्तमा । १९ ६८ प्राप्तमा । १९ १८ प्राप्तमा । १९ प्राप्तमा ।	11	•	जल जाना	লত জনা
भू प्रिकृति प्रितिक प्रातिक प्रितिक प्रातिक प्रितिक प्रातिक प	25	14	योग्य शक्ति	क्षेत्रः योगगन्धि
तीर जो इतिय और क्लेटिय तथा मेर प्र मित्र विदेश सन महित प्र मित्र उदरने दिनी मित्र प्र मित्र उदरने दिनी मित्र प्र मित्र विदेश प्र मित्र प्र मित्र प्र प्र प्र मित्र प्र प्र प्र प्र मित्र प्र प्र प्र प्र प्र प्र प्र प्र प्र	31	4	बाग, रूप,	वापु हप
प्र'प १२ सब महिन दिदंच सब महिन प्रा प्रमादिक उदरिये दिली मिनेस प्रमादका मोता में प्रे १८ वाला पणदन प्रमादका मोता में प्रे १८ वाला पणदन प्रमादका मेंग्रिये के दियात भिष्ठ वाला पणदन प्रमादिक मित्र भिष्ठ वालामा प्रमादिक प्रमादिक मार्गिक वालामा प्रमादका अवस्थारि प्रमादका अवस्थारिक प्रमादका अवस्थारिक प्रमादका अवस्थारिक प्रमादका अवस्थारिक प्रमादका अवस्थारिक प्रमादका अवस्थारिक प्रमादका अवस्थारिक प्रमादका अवस्थारिक प्रमा	٧.	c	गिडितम्	पदितम्
पृष्ठ व पातिके उद्दर्भ दिली गरिन पराज पराज पराज पराज पराज पराज पराज पराज	69	•	और नो इदिय	और क्षेत्रिय तथा नोहरिय
भूग रहवा गिंगा है भूग १८ पालन पहल पहल पहल पहल पहल पहल पहला पहला पहला	٧'٩	12	मन महित तिर्देच	सन महित
५१ दे वेला प्रदेश ०० १६ वोटिया वेटिया ०६ २३ वाडमा वाडमा वाडमा ६५ ० विश्विता म्थानित म्थानित ६५ १३ वा वार्या प्रशेष प्रशेष प्रशेष अवस्थाप अवस्थाप </th <th>80</th> <th>4</th> <th>य गतिके उददमे किसी</th> <th>यनिन</th>	80	4	य गतिके उददमे किसी	यनिन
०० १६ बोटियाँ केटियाँ २६ किंग्र मिंग्र १५ २३ बाग्रमा बाउस्म १५ २३ बाग्रमा बाउस्म १५ १३ स्वा बचीं। द्वारा गोन्यत्वे सारिया प्राणीति ०० आस्त्रमण अवस्थाएँ ०५ अवन्य अनुस्य ३० अग्य आस्त्रम्य ५५ १० जनी है चा अर्थे १६० जनी है पा अर्थे १६० जनी है पा अर्थे १६० जनी है पा अर्थे १६० जनी है स्था अर्थे १६० जनी है स्था अर्थे १६० चीं दें १३ वीं स्था दें ११ हम द्व			दम रहना होता है	
, २१ मिड मिड़ ५६ २३ खाडमा बाइमा बाइमा १९ ० हिनीना मन्तरिकं था पर्योग ज्यान मोर्गन्ते धार्मिक मार्गी है ०१ ० आन्तरा अवस्थाएँ ०१ ० अन्तरा अनुसय ॥ ३ अन्तरा आनुसय ॥ ३ अन्तरा आनुसय ॥ ३ अन्तरा अनुसय ॥ ३ अन्तरा आनुसय ॥ ३ विद्यानों नि पद्दे आर्थिक होती है ०१ १३ वीडगाइ नीनिस्तर्य २१ ११ हम द्व	4.9	96	पंतरम	पलटन
पूर्व २३ वाउमा शाउल ११ ७ विशिता प्रश्नांत्रेड १५ १३ वाध स्वीतं प्रश्नांत्रेड वाधार्येन प्रशान केंद्रस्ते १५ ७ आयन्त्रमा अवस्थाएं १५ ५ अवृत्य अञ्चलय ११ अप्तरं आहार्य ११ वाद जाती है तथा है विश्वादे १४ वाद जाती है तथा है विश्वादे १४ वाद जाती है तथा होती है १९ १३ वीदस्या ने तोस्वयत १३ १५ द्रम द्रम	40	3 4	कोटिय ी	के दिशाय
१९ ७ हिनिः। स्थिति स्याचिति स्थिति स्याचिति स्थिति स्याचिति स्थिति स्याचिति स्थिति स्याचिति स्थिति स्याचिति स्थिति स्याचिति स्थिति स्य		₹1	मिक	मिक
६५ १३ ह्या समीने इसार होनेपाले ह्यांग्यामार्गि हैं ६४ व्यांग्यामार्गि अवस्थाएं ६४ अनुनार अनुसार १४ अनुनार आहारण हैं १४ अनुनार आहारण हैं १४ अनुनार आहारण हैं १४ विकास के स्थिति पीननेप्या १४ विकास ने नेप्याप १३ विकास ने प्रमार्थ	u, q	₹3	बाउसः	नास्त
सारियोः गामि हैं बर्ग कर अवस्थाएं अवस्थाएं अवस्थाएं अवस्थारं अवस्यारं अवस्थारं अवस्थारं अवस्थारं अवस्थारं अवस्थारं अवस्थारं	52	v	रि ननि + 1	ঃম্বলিক
७१ ७ आरान्याः अवस्थाः, ७५ ५ अनुनय आहम्यः ॥ ३ अगस्य आहम्यः ७० ३ शत्यानी नि चाई जानी है स्था अभि चित्रेद्धः प्रिनेदेशः होती है ७१ १३ नीहम्यः सेनोहम्यः ८३ ११ हम द्व	64	23	तथा वसीने उसार होते	रत्ये
७५ ५ अनुसर अनुसर ॥ अगण्य आगण्य ॥ १००० जानी १८ पद्मे क्या के किसी १ १००० जानी १८ पद्मे क्या के किसी १ १००० जानी १८ भी किसी १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १०० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १०० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १०० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १०० जानी १८ १००० जानी १८ १००० जानी १८ १०० जानी १०			शरीगडे गामी है	
, भगर आहार । 4.7 जानी रि- पार्ट जानी है स्था में । 4.7 जानी रि- पार्ट जानी है स्था में । 4.7 जानी रि- पार्ट जानी है स्था में । 4.7 जान पार्ट जानी पार्ट जानी । 4.7 जान पार्ट जानी पार्ट जानी । 4.7 जानी पार्ट जानी । 4.7 जानी पार्ट जानी 4.7 जानी पार्ट जानी पार्ट जानी 4.7 जानी पार्ट जानी पार्ट जानी 4.7 जानी पार्ट जानी पार्ट जानी पार्ट जानी 4.7 जानी पार्ट जान	06	v	व <u>स्त्रम्यः</u> ग	अवस्थार्
७० ३ का जानो नि चार्र जानी है सथा धर्म श्वेदिरचे पीनलेखा होती है ७४. १३ वीं हम्मा ने नी संस्था ८३ १४ हम इत १० १३ १३४ १३४	৬৭	٧.	अन्नर	अनुभय
विधिक्त वीननेत्रण होती हैं ७. १३ नीतवार ने नीतवार ८३ १४ हम इत १. १६ १३४ १३५	,,,	3		
होती है ७: १३ नीरवार नी नोरवार ८३ १४ इस इन १: १३ १३४ १३५	60	ą.	¶েন্ন বি হি−	
७: १३ नीरमा नी नीरमाय ८३ १४ इस इन १० १२ १३४ १३४				पचेदियोः पीनलेखाः भी
दर्भ दि हम हम ५० मर १३४ - ११५				
40 98 936 984 80 936 934	٠.	13		
936 939	< 3	14		
" It 35c 35/	٠,٠	91	936	35%
	,,	11	૧૨ -	25%

यः साः		(11)	
25 8		मगुद्ध	
A1 6		श्रम सन	गुक
106 50		\$4	यान यान
100 1		भगुभ	र्वामे विमो
M 4		परार्थ -	समृ <i>श</i>
lee ly		₹ q	पाप पाप
111 1		स्य	हुए मानकी
1111 1		वो	£A
110 29	9(2):	ffe	ची
150 93	Re fi	विका	सर्वीक
758 9.	(ca)	P	कि जीव निवय
746	SEL SEL		ऐसा
749	भागन		लोभ
143 52	हेह		भाराभना
रर्भ २०	यापा बाद-		देव
110	State		पापवाद:
•	राग विनास		पें क्नक
122	नम		थेग विनाध
145 54	प्रमे		वास
1 + y - 2 3 1 + 3 - 3 4	युग		det
1.3 14	Als:		यभा
1 - 1	राष्ट्र		पानी
	7 19		्यन्त्र
1-1 12	रहस् ™व		R A
130 10			पडे <i>ग</i>
, · ·	सम्या सनुभवायो	मधुषान जिल्	₽l4 <u>.</u>
	. प्रत्यात्तुः सन्द	मनम	<i>वान्त्रो</i> :

भगुद पु॰ सा॰ नन्यम्य नन्दमयः 964 আর্টাবিয় भागदियं 77 वरभागो परभवी 146 1 इमी कार्यो 963 ٩1 पामें परम 158 अप्रमाही अल्याची 156 92 अनीन्द्रिय सुन भनीन्द्रय 900 9'5 तपापि अमेरन तवाधि भेदनय 103 4 वसम बग 90 * ति ,यो है **निपयोगे** 306 31 शेष ह्य 2 - 5 ٤. शुभ रूप श्ह मा 313 15 शुह मुद् **1 3 मुनिः ম্বলি: 210 2. र्धार्य धरीर्थ 234 34 जारा की शाग कर् 42. ٠, सुबीसयोग **श्**भो प्रयोग 221 3 वरीगर वशिवद 326 35 श्रुव नारिष शन करिय ... 144 4470 410 अषगर Mater 4 6 W 1 2 PIFFE er4 2 4 4 **-->>⊙**€€•-

. . . .

য়ুহ

n 3× 11

श्रीपत वुन्कृन्दस्तामी विरचित-

श्री पंचास्तिकाय दीका

दितीय खण्ड। ^{अर्थार}

धी नकपदार्धदर्धणः। मंगलावरणः।

श्रीभिनेन्द्र चौबीमको, बारबार सिर नाय । परमातमिसद्धानको भक्त, सुमर्क वमगाय ॥ १ ॥ आपारम बम्हाय ग्रान, परणक्तमको ध्याय । स्माय बिश्रम बोहको, हरू हानगुण पाय ॥ २ ॥ कुन्दुन्द्र सुनिनामको, परमक्षमयी मान । कमा नायध्याभिनके, बंद चर वर मान ॥ ३ ॥ अध्यानगर्थ भावको, स्वन्तगरी सुक्ष कार । जो जाने वाने गुधी, अनुभव चाने सार ॥ ४ ॥ परमेनाचारन नयू. विकार गुणवान । निनकी छाया नेयकर, हिन्दी निन्धं मयाण ॥ ३॥ सार्य नव व्यामीध्यमस्त्री न्याव्या निन्धी भानी है-पीटिका मुचीनता-पहरें गोध्यन द्वय बक्क्यका होन्छ । है उसके कार "क्रियेदिज्य सिराम" हर नायको आदि लेक्स

(१८) अगुद्ध बन्यभयः

आणदिय

वेश ह्या

1<4 1

" ა

216 20

264 6

शुद

आणिदिय

4444

eggref

·

मन्यमप

145	3	प्रश्नी	परभाषा
143	31	₹ार्यो	क्मी
158		परम	वरमें
1.5	13	अध्यादी	अप्रमासी
94.0	915	সনীবিহ্ন	শ শী-িহয় ¶
143		तपापि भेदनय	तथारि भनेर
,	10	वग	व्यवस
316	4.1	विषयोगे	दि ,योहे
205	٤٠	ब्रांग्ड	रीग
112	15	श्व मप	शुभ स्प
111	4	गर	गुव
410	4.	र्मानः	गुनिः
216	10	थारियं	धारदे
12.	4,	शाश वा	बारा की
156		शभीपयोग	ह्य बीलगोग
226	33	वृश्चित्र	शीनप्
991	1.	गन करिय	शव नारिष
210		5fe -%	171

4444

804

श्रीमत् बु-कुन्दस्तामी विरचित-भी पंचास्तिकाय टीका

दितीय खण्ड।

की सक्पदार्थदर्भण।

मंगलाचरण ।

श्रीजिनेन्द्र चौनीसको, बारवार सिर नाय। परमातपसिद्धानको मञ, धुमरू वसगाय ॥ १ ॥ आचारज उनद्माप गुरु, चरणकमलको ध्याप । संज्ञय विश्रम मोहकों, हरूं ग्रानगुण पाप ॥ २ ॥ कुँदकुंद मुनिरानको, परमनपस्ती जान। कर्चा कायपंचात्तिके, बँहू घर उर मान ॥ ३ ॥ अध्यातमके भावको, बलकायो ससकार । भो भाने माने मुधी, अनुमन पाने सार ॥ ४॥ नयसेनाचारम नम्, दृचिकार गुणवान । निनकी छापा लेयकर, हिन्दी लिखें ममाण ॥५॥ बागे नव पदार्थाधिकारकी ध्याख्या हिस्ती भावी है-पीटिका म्चनिका-पहले भे इयन द्रव्य सक्क्षण्डा होनुका सके जागे "अभिविदिज्ञण सिरसा" इस गायाको जादि सेकर

श्री पंचास्त्रिकाय टीका । पाठ क्रमसे पचास गाया तक या (बमृतचंद्र कृत) टीकांके मनि

7]

भागसे अड़ताडीस गाया तक नीवादि नव पदार्थों हो बतानेवा दूसरा महा अधिकार मारम्भ किया जाता है। इसके भीतर भी द खेतर अधिकार हैं। उन दश अधिकारोंके भीतर वहले ही नमस्कार गायाको आदि लेकर पाठ क्रमसे चार गाया तक व्यवहार मीक्

मार्गकी मुख्यतासे आचार्य व्याख्यान करते हैं। इसतरह मध्म अंत अधिकारमें समुदाय पातनिका है । उत्पानिका-अब श्री कुंट्कुन्दाचार्य अंतिम चीबीसर्वे तीर

कर परमदेवकी नमस्कार करके पंचास्तिकाय और छः द्रव्य संक जो नव पदार्थीका मेदरूप मोशमार्थ है उसको कहंगा ऐर मविशा करते हैं।

अभिनंदिकण सिरसा अपुणस्भवकारणं महावीरं । त्तेसि प्रयत्यभगे मामं भोक्खस्स बोच्छामि ॥१९२॥ अभिवय शिरमा अपूनभैवद्यास महासीरम् । तेपां पदावभद्रं मार्ग मोक्षम्य वश्यामि ॥ ११० ॥

अन्वय सहित सामान्यार्थ-(अपूज्ञश्व हारण) निम्न पर्द पानेसे फिर जन्म न लेना पड़े ऐसे शोशके लिये जो निमित्त कार 🛢 ऐमे (महाबीरं) श्रीमहाबीर भगवानको (सिरसा) मस्त

डाुफाका (अ मधेदिऊण) नमस्कार करके (नेसि) उन पहले कहे ग पांच अस्तिकाम और छः दृश्यके (प्यत्यम्य) नव पदार्यमई भेरकं (मोश्यत गग्ग) को मोक्षका मार्ग बताता है (बोच्छाबि) आगे कहगा विशेषार्थ-इम गावामें पहली आधी गायासे संधका^त मंगलके जिये सपने इष्टदेवताको नमस्हार किया है। इसमे यह र्म स्चित किया है 👫 श्री महाबीरस्वामीका कथन बमाण है वर्धीकि उन्दोंने इस रत्नत्रव नई पर्नतिमें आए हुए महा बर्मेक्सी तीर्यका उपदेश किया या इमलिये के कंतिम तीर्थकर श्री महाबीरम्यामी मीश-सुस रूपी अग्रतसके पाने कव श्रीवेकि किये, वस्पताने मनंन शान चादि यणोंकी मानिकार मोशके लिये सदकारी कारण हैं। इसके पीछे आपी गायामें संयक्तीने यह अनिका की है कि में मथ पदार्थीका बर्णन करूंगा की व्यवहार मोक्षमार्गक अंश सम्यग्दरीन और सम्बाहानके विषय है। यह व्यवदार मोक्रमानी निश्चय मोक्षमार्गेका परण्यराने कारण है । नहां शुद्ध सामाची रुचि, प्रतीति व निश्रष्ठ अनुगृति होती है उसे अभेद राज्यव मा निश्चय मोक्षमार्ग कटने हैं। इस झन्यमें यचवि बागे चनिकार्में मीक्षमार्गका विदीप व्यावन्यान है समापि वह पदार्थीका संदीप कथन बतानेके लिये यहां भी कहा है क्योंकि ये यब पदार्थ व्यवहार मोशमार्गके विषय हैं, यह अभिपाय है !

भाषार्थ-इस व्यवसर्विजीक्षणमें वर्तनेवाचे वीदीस सीवेक्टों-मेंसे अनिम गीर्थकर श्री महाबीर अगतान हो सल है निन्मेने होग्नसर्विच स्वास्त्रात्त किम था। वर्णी संस्थान वरावर वया हा रहा है, हमीर्थ (सावनसे मनेक अगतीन स्वास्त्रा व्यासीह हत। मैंने मानस्वा तथा वरने तृत्व वर्णे- नसे अपनाको हिन्द वरने हैं नक्षा हमीद सावनसे में भी वर्णी पानोसित कर रहा हु। स्व प्रसार क्या द्वाराको विवास हम स्पन्न की बुत्तस्वा हु। स्व मानस्वासके हुँदिये श्री सह वीस्थानिक सम्बन्ध हिन्द है। इसने दर भी सनक्या है कि में भी बुत्त कहना वह उक्क है। इसने

٠.,



श्री पंचास्तिकाय टीका । ٤]

भावार्थ-निश्चयनयसे नीवादि नी पदार्थ जाने हुए सम्यक्त होने हैं अर्थात् नो इनमें जीव और पुद्रलको भिन्न देखकर पुद्रलको

त्याग नीवको ग्रहण कर छेता है वही सम्यकका घारी होता है ।

करते हैं~

उत्यानिका-आगे शयम ही मोक्षमार्गकी सुचना संशेपमें

सम्पत्तवाणज्ञुचं चारिचं रागदोसपरिहीणं।

सम्बन्धस्यज्ञानयुक्तः नारित्र रागदोपपरिहीनं ।

·· अन्यव सहित सामान्यार्थे~(ङब्धवुद्धीर्ण) जात्मज्ञान प्राप्त '(भव्याणां) भव्य जीवेंकि लिये (सम्मत्तवाय्युतं) सन्यय्दर्शन और सम्यन्त्रान सहित तथा (रागदोसपरिहीणं) रागद्वेष रहित (नारिसं) चारित्र (मोन्खस मग्गो) मोक्षका मार्ग (इयदि) होता है। 🗇 विशेपार्थ-शुद्ध आत्माके अनुभवको रोक्रनेवाला वंध है जब कि अपने आरमाकी प्राप्ति रूप शोक्ष है। मोक्षरूपी नगर चनंतज्ञान आदि गुणरूपी अमृस्य रत्नोंसे मरा है । उसी नगरका मार्ग सम्यक्त और सम्यकान सहित बीवराग चारित्र है। इस मार्गपर वै मव्य भीव ही चल सक्ते हैं निनको शुद्ध आत्मस्वरूपकी पगट-वाकी योग्यता है तथा जिनको विकार रहित स्वसंवेदन ज्ञानरूप वुद्धि प्राप्त हो चुकी है। यह मोक्षमार्ग उन अमध्योंको नहीं मिलता निनमें शुद्ध आत्माके स्वमावकी भगटताकी बोग्यता नहीं है तया टन भय्योंको भी नहीं मिलवा निनमें मिथ्या श्रदान सहित राग आदि परिणातिकाप विषयानंदगई स्वसंवेदनकाप कुनुद्धि पाई नाती

मोक्खस इवदि मग्गो मञ्चाणं रुद्धबुद्धीणं ॥ ११३॥ मोक्षस्य भवति मार्गो मन्याना खब्धवुद्धीनां ॥ ११३॥



<] श्री पंचास्तिकाय टीका । स्या उनहींको होता है निनके आत्मज्ञान हो जुड़ा है । (८) इम् मार्पकी पूर्णता क्याय रहित पूर्ण शीतरागी नीवोंके ही होती हैं।

इस गावामें यह दिखला दिया है कि जनतक कोई मध्यनीय रुचियान होकर आत्मा और व्यनत्माका मेद असे प्रकार न संगर्स खेगा, और मेदजानके अस्थाससे स्वानुसवको न प्राप्त कर लेगा

तपतक उसे मोक्षमार्ग नहीं मिल सक्ता है। जब न्यानुसय होता है तब ही सम्बग्दर्शन और सम्बग्धानको प्रयत्वा होती है तथा ऐसा सम्बग्धानी भीव भी जवतक ब्यायोंके नाशका उत्तम न करेगा और बीततागी न होगा तबतक बद्द मोक्षमार्गकी ऐसी दुर्गटा नहीं प सक्ता निसमे आत्माके स्वमायकी प्रगटताकर केयन्यानकरी मार्ग-

मोसचा लाम हो सके। अत्तर्व मो बोसकी मानि करना चार्रे उनके लिये यह उपित है कि तत्वोंकी रुचि पेना करें और अध्या-रिमक्ज़ानमें रमण करनेके अध्याती बनें। निनको महसे सिस दूप दिसता है ये ही हम दूच पी सक छोड़ देने हैं। हमी तरह मिनको

दिसता है मेही हंम दूष थी मळ छोड़ देने हैं। हमी तरह निनक्षे पुत्रकमें भिन्न आस्थाहा अनुभव होता है ये ही पुत्रकक्ष भीड़ खाण आस्माके स्वभावमें आसका हो शाने हैं। हमीलिये श्री अभितियानि महारामने बड़े सामायिष्याठपें बड़ी मुन्दर भावना को हैं-

जावाजां वचतार्थन स्वविद्वेष वंपास्त्रवी देपता, जाम्बरसंबद्धितार्थी विद्यापता मुल्लिपार्य कांग्रवः । दंशदेश वस्त्रास्थतस्वयस्यार्थी व्यवस्तरस्वतो, पार्यस्थानसम्बाधिगृह्यनस्यः काल्डः स्वयतु मसी ॥ ॥ मात्रार्थ-हे निनेन्द्र ! सेरे शीवनद्या समय हुन क्रमीर्थे सदा स्वतीत् रही-अर्चात् में शीव और अतीव यदार्थोका मित्र र स्वरू बान मंतर और निर्मगद्दो करता रहे । (४) सनिरूपी न्हांभीद्दी बाह रहता गूरे।(५) इसेर बादिसे बाले निर्मेट परमान तलाही निश्चयमे निज अनुभव दरता रहें।(६) तथा पर्वच्यान और ममा-विके सामनें मेग हाद भन बर्तन करता गरे।

उत्यानिका-काने व्यवहार सम्यक्तिको कहते हैं-नीट-पह राषा श्री अमुचचंद्रमधी बतिमें नहीं है। एवं जिल्हारणे सहस्माणस्य भावती भारे । पुरिसम्साभिणिशेषे इंसणमही हबटि जुली ॥१,९४॥

मुर्वाजनसम्बद्धाः भारती भारत । पुरक्तातिविद्येतं दर्शन धान्तो स्वति युक्तः ॥ १९४ ॥ अस्त्रय सहित सामान्यार्थ-(पर्व) नेमा प्रापे इहा है (मिणपण्यते) बीतगम सर्वेत्र हाम पदे हुए (सारे) पराधींधी

(मावडी) श्रीबर्वेक (महहमान्यम) श्रद्धात करनेवाले (पृत्यिम्य) मध्य जीवह (व्यक्तिविधे) हादमैं (देगणमहो) सम्बन्धीनुहा सध्द (दुनी) रचित (दबदि) होता है । विद्रोपार्थ-बहा बहाबीमें प्रयोजन है कि तीन सोच व तीन बाल मध्यमी मुद्रे बहाबीह बामान्य क्या विशेष स्वयाप मानने ही मनर्थ ऐसे केवल बर्शन और केवल शासनई संस्थाकी उसने कार्य भरमा इत्यक्ते अदि केक सर्व मदाये बहुष करने गोल है। यहा

इस मुख्रमें सद्यपि बोई निर्विष्टस्य समाधिके अवसरमें निर्विष्ट र श्रद भागाची कृष्टिक विश्वय सम्बक्त्यो न्यर्ग क्षता है नयानि उमके मधिकार बाहा क्ष्माधीकी रुचि काप को अववदार पायान. १२] श्री पंचारितकाय टीका । चातकी मुख्यता बताई है कि व्यवहार मीशमार्ग सापन है औ

निश्रय भोक्षमणे साध्य है । भावार्य-इस मन्य जीवज्ञ ध्येय जविनाशी स्वाधीन अनंत सुलक्षी प्राप्ति करना है जो उसी समय संगव है, जब झानावरण,

दर्शनावरण, अंतराय और मोहनीय इन चार चारिया धर्मोंडा मार्ड हो नावे । इनडा नाहा होनेडा उपाय शुद्धरमानुमय है क्याँन् निश्चय रत्नवय है, नहां सपने वारमास्त्र श्रद्धान व द्वान सहित अपने जारमा होके स्वादर्भ वर्तन होता है।इस एक्समायका डाएंग

स्पबहार मोक्षमांगे हैं। नी कोई नीबादि नव बदापाँका स्वरूप कागम, गुरु तथा अगाण, नव, निसेषके द्वारा शंकारित नानकर संसारको भविकटा मिथ्या रुचिको छोडका स्वरूप मामिक्टप मोक्षको रुचिको स्तक्षर उनका अव्यानी हो नाता है, फिर अव्यानके कदासर सनि या आवकके व्यवहारचारिज्ञाँ अपनो

कारह करता हुना पाच इंद्रिय और सर्वर्ष \तो हुम या अञ्चम पदार्थ अदणमें नावे उनमें यह समझकर कि पदापाँका सम्बन्ध कर्म-भवित होता है रागद्देश न करके, ममतामाथ रसता है और निरस्य इस साध्यायका अध्यास करता है उसकी उसी तरह रसारमानुषय कर विश्वय रन्त्रवयमई सोक्सार्य मास होता रहता है. भेरी ट्या विजीवनाकेकी ममस्यव्या अप होता है।

उसी तरह रवात्मानुषव रूप निश्चय रत्नवयमहे बोसमागे मास होता रहता है, जेसे दूष विजोनेवालेको मध्यस्यका राम होता है। त्रिस समय परिणति स्वरूपमें रागने समती है जात्म दुसका स्वाद जाता है। यस यही जानन्द कर्मक्रमी हंपनको जलानेके लिये प्यानको जान्म है। इसी जाग्गिंगे निर्त्तर कर्मक्रमी हंपनको अलानेके अला नेका जप्यास करते हुए क्मी न क्मी सप चार पातिपाकमें जन जाते हैं और यह आत्मा महात्या या अंतरात्यासी परमात्या हो जाता है और तब अवन्त स्वाचीन जानन्द्रधा निरन्तर उपभोग किया करता है। श्रीपुन्वपाद महाराज हहोपदेजमें बहते हैंं-

आत्मानुष्टानिष्ट्रस्य स्वयद्दारविद्दार्शस्यते । आत्मानुष्ट्रानिष्ट्रस्य स्वयद्दारविद्दार्शस्यते । आसते प्रधानन्दः क्रीध्यत्मेन पोरिलः ॥ ॥॥ ॥ आनंदो निर्देदन्युद्धं क्रीधनमनारते । न चासौ निष्यते योगो वृद्दिःलेख्यनेतनः ॥४८॥

भाराई- को व्यवहार प्रपंत्रते बाहर होकर आत्माके व्यानमें सम्मय होन्तता है उस योगीक योगबल्से कोई अपूर्व एरमार्गद अनुस्वमें आता हैं । यही आनंद निरंतर कर्मकर्सी ईपनको नजाता रहता है-आनंद मोगी योगी बाहरी परिष्ट उपस्ताकि एइने पर भी उनकी सरफ क्यान न लगाता हुआ किंपित् भी क्षेत्रकों नहीं मात होता है ।

जतप्त जो अपना दित बरना चाहें तथा इसछोड़ और परनोड दोनोंसे खुली रहना चाहें उनको व्यवहार सोक्षमार्ग पर बजकर निश्चय मोक्षमार्गडा ठाम कर केना चाहिये-समादमें इस मर मम्मके समयको व स्रोना चाहिये ।

इम तरह नव पदार्थके प्रतिपादक दूसरे यहा अधिकारमें स्पबद्दार मोहामार्थके क्ष्यवही सुरुयतासे चार गायाओंके द्वारा पहला अंतर अधिकार समाज हुआ।

जरपानिका-आगे भीव आदि नव पदार्थीके मुस्पतासे नाम समा गीणतासे उनका स्वरूप कहते हैं--

जीवातीया माना पुष्णं पार्व च आसवे तेसि ।

संवरणिज्ञारवधी मोनग्नो य दर्वनि ने अहा ॥ ११६॥



शराकान विद्यमान शरता है। इन भी पदाधीके शानमें अपना दिव करनेका मार्ग सुन्न काला है। यदि निश्चयनयमे देखा नावे हो इन नव बरायोंने बेबल हो ही हर्व्याहा सम्बन्ध है-शीव और पुट्र-लका । हरी। लिये बालव आदि बहाबीके दो दो मेद बताए हैं। जैसे जीद भाश्यय या भाव भागव तथा पुरुष भागव या द्रप्य भागव, जीवकाय या भावकाय सथा पुहुलकाव या इत्यकाय, भीव संवर था भावसंबर, पुटलमंबर था द्वच्यानंबर, जीव निर्वश या मावनिर्वश, बुहरू निर्मेश या द्रव्य निर्मेश, शीव बोटा या बाव मीश, पुहन्त मीक्ष या इत्यमीक्ष, भीवपुण्य या भाव पुण्य, पुहल पुण्य या इत्य पुण्य, जीव पाप था भाव पाप, पुट्रल पाप या झव्य पाप ! निन भीबेंदिः भावोंने पुरुष्टमें परिवासन होता है उनको भाव आसव आदि कता है व जिनमें परिवयन होना है उन पुरुतोंकी द्रव्य आगव भादि बहा है। मीव और पुट्टन होती परिणयनशील हैं व मही-सह शीव अगुद्ध है बहानक शीवके मावोंका असर पुहलकी परि-गति (तपदीनी)मं व पुद्रलका अगर भीवके भावों सी परिणति (तबदीला में हुआ फरता है । बिना दी द्रव्येकि मेलके न समार रीमना है न मोश होयका है। को देवन एक ही द्रव्य मानने है उनके मतने कथ व बोध या बोधका उपाय कुछ की नहीं कन सन्ता है। जैमा स्वामी समन्त्रभटने आप्त्रभागासामें बद्धा है

बंधेडत फलंडल लेखिड ेच ने अधित्। विवादिक्याटय म स्थान ब्राथ्येसहड्य तथा ॥ २५ ० आराध-एक ही इट्यामधनेस पुग्य पाप क्री, मुरा दुःस एस, यह लेखि बरलोर, जान व खालन, वप व मील हुन सबका

१६] श्री पंचास्तिकाय टीका । किया जाता है, व्यवहारनयसे उसीका विस्तार इच्छानुसार व

शिष्यकी योग्यताके अनुसार कम व अधिक किया ना सक्ता है। आठ कमें मूल कमें हैं, उनमें नो आत्माके गुणीको वार्ते ऐसे चार चातियाकम अर्थात् ज्ञानावरण, दक्षेनावरण, अंतराय और मोद वार्ष कमें ही हैं, इनमें पुण्यपना रखनाव भी नहीं है। शेप चार अवा-

तियाकरों में पुण्य और वापके मेंद होते हैं। सातावेदनीय, ग्रुम-साम, उच्चगोत्र व शुभ आयु पुण्यकर्म हैं जंबिक असातावेद-नीय, अशुम माम, नीचगोत्र व अशुम आयु पापकर्म हैं। बाहरी साताकारी व अमाताकारी जिमिलोका सम्बन्ध मिलाबा इन अध्य-दिवा कमीका कार्य है। जीव पदासेके सीबका स्वरूप, अभीवेदी अभीदिक अपन्य विधान वया है यह बताकर जिनके कारण यह जीव अशुद्ध या रोगी होता है ये कम पुद्रक दृश्य कर नह हैं, जीवेक स्वामावि निज हैं अनीव हैं, ऐसा समझाया है। जीवेबकी सत्तामें पासे

यह बतानेकी आसब है फिर उन्हीं ज्ञानिक प्रदेशों है हाप बंपकर हो हर मिलनाना अर्थान भीवको खुछ काल तक बंपकर मनीन रखना हमके बजानेके लिये बंग पदामें है। वास्तवमें आरब और बंग पदार्थों हो यह ज्ञान होता है कि किन माबों से भीव अगुद्ध होता है। फिर संसार रोग विद्यानेके लिये नथा कर्मकर्यी रोग रोडा शार इसके लिये संबर पदाम बद्धा है—गुराने मेरे हुए कर्म समयने पहले ब्रीज आसारी खुड़ा दां आर्वे हरे बनानेके लिये निर्मार पदार्थ कहा है—रोग सहित अबस्मा बतानेके मोर पदार्थ करा है सि मोगुर्ग भीव कपने आहमाडी शुद्ध अबस्मानें

सन्मुल होनेके योग्य शक्तिके हारा इन जड़ क्मेबर्गणाओं हा हो माना

सराकात विषयान बहुता है। इन नी पदार्थोंक ज्ञानसे अपना हित करनेका मार्ग हाम माता है। यदि निश्चयनपति देशा मार्व तो इन नव परापोर्म केवल हो हो हर्ल्योंक सम्बन्ध है-शीव और पुद्र-कता। इसीलिये कायव आदि पदार्थोंक दो से मेद बताए है। जैसे और बाध्य का आप कामव तथा पुद्रक आमव का इत्य जासव, जीवबन्य या मावबन्य तथा पुद्रकार्य या ह्रव्यवन्य, श्रीव संवर या भावसंवर, पुद्रत्यवेष्ट मा ह्रव्यसंवर, जीव निमेश यामावनिमेश,

पुद्रल निर्मेग या द्रव्य निर्मेश, जीव सीक्ष या भाव शीक्ष, पुट्रल मोक्ष या इञ्यमोश्च, भीव पुण्य या माव पुण्य, पुद्रल पुण्य या द्रव्य पुण्य, शीव पाप या भाव पाप, पुद्रल पाप या ह्य्य पाप । जिन नीबेंकि भावोंने पुदूरुमें पश्चिमन होना है उनको साव आसव आदि कहा है व मिनमें परिवासन होता है उन पुतुलोंकी द्रव्य आश्रव आदि बटा है। भीव और पुत्रल दोनों परिणमनशील हैं ब नहां-तक जीव अहाद है बहांतक जीवके भावींका असर पुहुलकी परि-णित (तबडोली)में व पुड़लका असर जीवके भावोदी परिणति (तक्दीला)में हुआ इस्ता है । विना दी द्रव्येकि मेलके न संसार होसका है न मोज़ होमका है। नो केवल एक ही द्रव्य मानूने हैं उनके मतमें बन्ध व शोक्ष या मोक्षका उपाय कुछ भी नहीं इत सका है। नेसा स्वामी ममन्तमद्भने आप्तमीमासामें पड़ा है ---कर्मद्रत प्रस्टदेतं हो। इंदे च ना स्पेत ।

कमप्रत पत्रहात स्थापक च ना समत्। विद्यादिवादयं न स्थाप्त कश्मीसद्वयं तथा ॥ २५ ॥ भावाध-एक ही द्रव्य माननेमे पुग्य वाप कमें, सुरा दुस पत्रह, यह लोक परलेक, ज्ञाप व ज्ञाल, वप च मोहा इन सबका

श्री पंचास्तिकाय टीका । 36.

जोडा कमी नहीं होसका है। भीव और पुदुलका मिश्रण संसार दे और दोनोंका एयक् र हो जाना मोश है। स्वामी कुन्दकुंद महाराजने समयसार आदिमें दो द्रव्योंकी आवश्यकता बता दी है। कहा है-यकस्स द परिणामा जायदि जोवस्स रागमादीहि ।

'ता कम्मोदयहेट हि विणा 'जीवस्स परिणामा । १४६ । चक्रस्स ह्र परिणामे। युग्गलद्दव्यस्स कम्ममावेण । सा जोवमावहेरू हि विणा कमास्स परिणामा ॥ १४७ ॥ भावार्थ-यदि एक मात्र इस जीवके ही शंगादि भाव होते

हैं ऐसा मानेंगे तो यह दोप आवेगा कि कर्मके उदयके विना भी .जीवके रागादि भाव हो जाया करेंगे तब कोई मुक्तात्मा भी सदा .बीतरागी नहीं रह सकेगा. उसके भी रागडेव मान हो सकेंगे और

यदि एक पुतुलद्रवय अपने आप ही बिना भीवके भावके निमित्तके क्मंरूप हो जाया करे तो पुदुल ही कर्म कर्ता हो जायगा. शीवके रागादि मायोका कुछ कार्य न रहेगा । प्रयोगन यह है कि जीव

और पुद्रल बद्यपि अपने२ परिणयनमें आप ही उपादान कारण हैं स्यापि एक दूसरेके अगुद्ध परिणमनमें एक दूसरेका निमित्त सहायपना आवश्यक है । पुदूलकर्मीके उदयके निमित्तमे मीबके लशुद्ध मात्र होते हैं व जीबके अशुद्ध भावोके निमिस**रे**

पुद्रल कर्मवर्गणा पिंड शानावरणादि आठ कर्मरूप बंधता है। मन ज्ञानी जीव अपने पुरुषार्थको सन्हालता है और शुद्ध भावोमें रमण करने लगता है तब कर्मबर्गणा स्वयं आत्मासे अलग होने लगती हैं और यह जीव कभी न कभी शुद्ध और मुक्त हो जाता है!

फटा मनत्व है वहां बंध है, नहां निर्मेमत्व है वहां मोक्ष है, नेस . स्वामी पूज्यपादने इष्टोपदेशमें कहा है-

षध्यते सुध्यते जीवः सम्मिनः निर्मानः समान् । सस्यारस्यांप्रस्केत विर्मान्तः विचित्रयेत् ॥ १६ ॥

साराये-को समा सहित सीन है वह बंदा है तथा किसने समता छोड़ दो है वह सुक्त होगाता है इसिकेये सुद्रे प्रसान करने ममता होड़ आबफा बिचार करना चाहिये । इसताह भीय करने ममता होड़ आबफा बिचार करना चाहिये । इसताह भीय करनेव काहि नव परायोंके नव कथिकार इस संपर्ने हैं इस सूच-नाई। सुन्यताने एक गावा सुन्न समान शुआ ।

आगेके कथनकी सूचना-आगे वंद्रह माबातक तीव परा-बैंदा अधिदार बढ़ा , नाता है-इन बंदह गायाओंके मध्यमें पहले शीव पदार्थके अधिकारकी सूचनाधी सुच्चतासे "शीवा संसारस्या" इत्यादि गाथामुत्र एक हैं, फिर सच्बीकाय आदि स्थावर एकेडिय पाब होने हैं इसकी मुख्यतासे " पुदर्बीय " इत्यादि पाठकानसे नाभारं चार हैं। फिर विकलेदिय तीनके व्यास्थानकी मुख्यतासे " संबुद्ध " इत्यादि पाठके क्रमसे गायाएं तीन हैं । फिर नारकी, तियम, मनुष्य व देवगति सम्बन्धी चार प्रकार पेचेद्रियोहा कथन बरते हुए "मुरणर" इत्यादि वाटके कमसे याचापं चार हैं । फिर भेद भावनाकी गुस्यनाम हित बहितका कर्तापना और मौकापना करनेकी सुस्यतामे "णहि इंदियाणि" इत्यादि गायाए दो है पशात जीव पदार्थके संकोच कथनको मुख्यतासे तथा जीव पदार्थके प्रारं-मदी मुख्यताने " व्वमधियन्म " इत्यादि सूत्र एक है। इसतरह पंद्रह गायाओंसे छ स्वलेंकि हारा दूसरे अंतर अधिकारमें सग्राय-यातनिका बड़ी ।

उत्यानिका-धार्ग शीवद्य स्वरूप कहते हैं---

जीवा संसारत्या णिव्यादा चेदणप्पमा दुविहा । रुवओगस्टरस्त्रणा वि य देहादेहप्पत्रीचारा ॥ १७७ ॥

जीनाः गंगारस्या निर्देशाः चेतनायमा दिविधाः । उपयोगस्थामा अपि च देशदेश्यतीयामः ॥ १९७ ॥

अन्यपसहित सामान्यार्थ-(जीवा) जीव समुदाय (दुविहाँ, दो प्रकारका है (संसारका) संसारते रहनेवाले संसारी (जिय्यार्थ मुक्तिको बात सिक्द (चेदवण्या)) वे चेत्रत्यमई हैं, (उवजोगलप्रकार्ण, उपयोग रूप स्वकृष्ट सारी शी हैं (व) और (देहारेहच्यवीचारा) हारीर-भोगी सथा धारीर जोग रहित हैं। जो संसारी हैं वे झारीर सहित हैं तथा जो लिक्द हैं वे खारीर रहित हैं।

विशेषांध-मृतिकारने चैतनारमक्का हिनिय विशेषण कार्र यह अपे रिवा है कि ये संसारी औव बागुह चैतनावर्द्द तथा मुक्त जीव शुद्ध चेतनावर्द्द हैं। अगुद्ध चेतनांक दो येन हैं—कमेनेतना और कमेम्फ्र चेतना। शगहेत पूर्वक कार्य करनेका अनुवाय सो कमें-चेतना है। आरमांके शुद्ध जानांत्रवर्द्ध स्वयाक्का अनुवाय सो कमें-चेतना है। आरमांके शुद्ध जानांत्रवर्द्ध स्वयाक्का अनुवाय सो कमें-चेतना है। आरमांके शुद्ध जानांत्रवर्द्ध स्वयाक्का अनुवाय सो कमेंफ्ल सुद्ध जानचेतना है। चेतन्य गुणके भीतर होनेयाली परिणातिको उपयोग करते हैं। कहा है—"चेतन्यानुविचायि परिणाम उपयोगः"! गुक्त मीवोके केवन्यज्ञान और वेवन दर्शन उपयोग है नव कि संसारी नीव अगुद्ध या स्थोषश्याकटण याविज्ञानार्थि उपयोग सहित हैं। संसारी नोव देद रहित आरमतन्यसे विपरीन शारितिक सारी हैं प्रवाध-याणि माविकी वर्षश्य श्री हैं हैं। रीवत्व III जीवरवा सर्वे ही जीवोंने पाया जाता है समापि अपने रपने गुण पर्यापोके धारी नीव द्रव्य अनंतानंत हैं, सबदी सत्ता भेल र है। इरएक भीव बचपि शुद्ध स्वमावकी अपेक्षा एक दूमरेके रमान है समापि आकार था घदेशोंकी अपेक्षा सब भिन्न हैं। रएक भीव अपने मीतर होनेवाले परिणामींका आप स्वामी है। एक भावों हा स्वामी दूसरा नहीं हो सक्ता है। जब निस मीवमें महाद भाव होता है। तब बही भीव फर्मोंका शंच करता है, उसी तमय यदि दूसरे जीवमें बीतरायबाव होता है तब वह कमींकी नेनरा करता है। जब कोई ओव सन्यन्द्रष्टी है और आत्माके नादमें मगन है सब वह काल्मानंदका काम करहा है उसी समय एक मिथ्यादारी जीव आस्त्राको मूला हुआ विषयसुलमें लीन हो विषयसुरू भीग रहा है तब ही दूमरा कोई विषयोंमें सहकारी सामग्रीको न पाकर शोकातुर हो दुःखका भीग कररहा है। प्रयो-मन यह है कि हरएक भीव अपने दित तथा अहितका आप ही अधिकारी या जिन्मेवार है । एक दूसरेको उपदेश देकर मेरणा तो कर सक्ता है पर बलात्बार कोई किमीके भावोंको नहीं पलट सका । जनवर उसके स्वयं परिणाम न बदलेंगे तबतक वह परके रपटेशसे कुछ भी लाम नहीं दहा सका है।

त्रगतका प्रवाह जनादि है इसिनेथे बनादिसे ही दो प्रका-रिक्त भीव पाए आने हैं—संस्तारी और सिद्ध | अनादि प्रवाहरू अपस्पार्म हम जैसे यह नहीं कह सक्ते किकभी यूक नया बीन ही या ब कभी बीन न या यून ही या किन्द्र यही मानता होगा कि बीन और एस होनों जनादि हैं, इसी तरह अपतमें संसारी और सिब्ह



दिनीय स्वण्ट ।

है। यह इस दिशी मनुष्यकी देखने हुए, पत्रने हुए तिसते हुए, बाने हुए, बाम बरने हुए देखने हैं हमही यही अनुसान

टोना है हि इस भीवड़ा शानोपयीम इन बामीमें उप्युक्त है, बाम हमको मीचको समाध्य निश्चय हो नामा है। मी मृतक माणी शुक्तनेने स्वता नहीं, जिल्लानेने ब्याता नहीं, ब्यानेने बागना नहीं, बटनेते शुनना बटी बह बड़ी अनुसान बतता है कि उपयोगका भागे और जो इन शरीरका न्दानी बाबद इस शरीरको छोड़ गया है बनोधि यहां उपके उपयोग लक्षणका असाब है। इसी कारणारे गायामें भीबोंबा रूक्षम उपयोगमई बद्धा दें। सिंद या गुक्त भीबोंबा ट्यबोग व्यप्ते कात्माई भीगर्ने सन्तव है इसनिये हे भी शुरू हानदर्शनीषयोगमई है। महांतह सैनम, हार्नण शरीरका सम्बन्ध है

बटी तक समार है। ये दोनों कारण शरीर हैं। इनदीं क कारण में कार्य वीन रागिर औरापित्र, बेक्सिविक और कादारक दोने हैं व काम करने हैं-इन दोंनी धारीसेंधा वित्रपुत छुट नाना मुक्ति है। मुक भीवान कारण हागिर नहीं रहता है इसलिये वे कभी भी फिर संसार व्यवस्थामें नहीं बासके हैं। निनके साब कार्मण देह हैं और जो डन क्योंक जमरमे दिमी नगह रहते हैं उनको उस क्येंक असर टरनेवर और दुसरे बावे हुए बायु और गति कमेंके उरवके जान में उस खाम भवस्याको छोड्डकर दूसरी गतिये भाना पहला है। नद भीव हिमी कमें के व्यवस्ते नहीं भीते हैं। वे कमें रहित

हर अपने शुद्ध भीवान गुणते तदा मीते हैं इसकिये वे कभी ारी नहीं होसके हैं-उनके वांची ही प्रधारक करीर वहीं होता संसारी भीव भव अशुद्ध चैतनाके भोगी हैं तब मुक्त या





२८] श्री पंचास्तिकाय टीका । हैं कि वह मवसे मागता है, परस्पर दो नंतु मैयुन रूप मिल नाने

हैं-आहार सोनते हैं-वे ही सब बातें वृक्षादि एकेंद्रियोंमें होती हैं, मात्र रसनादि इंद्रिय और वचनवल इन बन्नादिमें नहीं होता है।

बुद्धिपूर्वेक गमन करते व ठहरते नहीं टील पड़ते हैं जैसे और

कीट आदि स्वयं चलते व टहरते दिलाई पड़ते हैं, ये अपने

स्वमावसे कोई ठहरे रहते कोई चलते रहते हैं।

माडा मसारमहाध सबं वते प्रदर्शिताः।

अधश्यामा हिमधिन्दुस्तवा शुद्धधनीव्के ।

रवालाद्वारोस्तथार्विश्व मुर्मुरः शुद्ध एव छ । अग्निश्चेरवादिका होवा जीवा उउलनकाविकाः ॥ ६४ ॥ महान् घनतनुश्चिय गुंजामंडलिश्कालिः । यातरचेत्पाद्या श्रेया जीवाः पवनकाविकाः ॥ ६५ ॥ मुलाप्रपर्यकरवेरस्थाः स्कन्नवशिषकहोस्तथा । सामार्छिनश्च हरिताः प्रत्येकानन्तकायिकाः ॥ ६६ ॥

स्यावर नामा नामकर्मके उदयसे ये स्थावर हैं। ये स्वयं

तत्त्रार्थसारमें इन स्थावरोंके कुछ दृष्टांत दिये हैं-मृत्तिका बालुका बैच शकंता बेापलः शिला । रूपणाऽपस्तथा ताम्रं त्रपुः सीसकमेव च ॥ ५८ ॥ रीप्यं सुवर्णं वज्ञं च हरितालं च दिगुलं । मनःशिला तथा तुरुयमञ्जनं समयालकम् ॥ ५६॥

किरीलकासके चैव मणिमेहाश्च वादराः। गोमेदी यवकाडुएव रूफटिकी छै।हितः प्रमः ॥ ६० ॥ वैद्वयं चन्द्रकानाञ्च जलकान्ता रविश्रमः। गैरिकरवन्दनश्चेय वर्चुरा दचकस्त्रधा ॥ ६१ ॥

पद्भिशत्पृथियोभेदाः भगवद्गिर्जिनेश्वरैः ॥ ६२ ॥

शीतकादाश्च विश्वेवा जीवाः सलिलकाविकाः ॥ ६३ ॥



٠,٠٠١

ति त्यावरतणुजीमा व्यणिलाणलकाइया य नेसु तसा । मणपरिणामविरहिदा जीवा एइंदिया जेया ॥ १.१९ ॥ प्रयः स्थानराजुबोणस्विकानलकाविकाश तेन प्रयाः ।

त्रयः स्थायनवृत्यागादानकानककाविकाश्च नयु प्रमाः । मनःपरिणामविरद्विता जीवा एकेन्द्रिया ज्ञेयाः ॥११९॥ अन्त्रय सहितःसामान्यार्थे~(तेस्र) इन पांचीनेसे (तित्यास्र

वणुनोगा) तीन काविक अर्थान् एटबी, जल, वनस्पतिकाव स्वि शरीर होनेके कारणले स्थावर हैं (य) तथा (अणिलाणककाइया वायुकाय और अग्निकाय, गारी नीव (तसा) श्रप्त मीव कहलाते हैं (पहंदिया जीवा) ये प्केन्द्रिय जीव (मणपरिणामविरहिया , मनके परिणमनसे रहित अवैनी हैं ऐसा (णेया) जाननेवीग्य हैं।

विश्रोपार्थ-स्थावर नामकर्मके उदयसे भिक्ष तथा अनंतजा नादि गुण समृहसे अभिक्ष को आत्मतराव हैं उसके अनुभवसे शूर्य मीवने को स्थावर नामकर्म सांघा है उसके आधीन होनेते यद्यपि अभिन और बायुकायिक नीवोक्तो व्यवहारत्वयसे चलनापना हैं तथापि निश्चयनयसे ये स्थावर ही हैं—

भावार्ध-इस गाषामें स्वावरके अर्थ टहरे हुए व झसके अर्थ चलनेबाले मानकर एडवी, जरू और बनस्तिकी मात्र स्वाद और बाधु तथा अभिनको झस कहा है-परन्तु स्वायर नामकमेले टबर-यकी अपेक्सासे ये पांचों ही स्थायर हैं-दस होन्दियादि हैं। नैसा श्री उमास्यामी महारामने सत्वार्यमूत्रमें कहा है-—

"पृच्चित्वयत्तेजायायुवनस्पतयः स्वावराः॥ १३ ॥ २ ॥ "क्रोन्द्रियादयस्पताः ॥ १८ ॥ २ ४" श्रीगोमद्वार जीवकांडमें स्वावरेकि यांच मेद करे हैं—





ब बध करे ब कप्ट दे व साहें व गर्मी सरदी पहुंचाने सी वे नीन पराचीन हो सब सहते हैं-स्पर्शनीन्द्रयसे विषय ग्रहण कर बीट द्वारा द्वेपमान उत्पन्न कर इस्ती होने हैं पेसे ही एकेंद्रिय शीव मसमये हैं-कोई उनको नष्ट करे, सोहे, मरोहे, दलमले, गर्मी शादी पहुंचाने, काटे व सपाने की ये अपनी रक्षा नहीं कर सके । असमधेरनेसे पराधीन रहकर स्पर्नेनेंदियसे मानकर व मोहके कारण हिपनाय मागृत कर सब चटोंकी सहते हैं। मूटी मात मानवका · द्रष्टान्त मात्र बुद्धिपूर्वेद व्यापार न दरनेदी अपेक्षा व्देन्द्रियोदि लिये दिया गया है। एकेंद्रिय भीव दी मकारके होते हैं-सम्म और । बाहर । जो इंद्रियद्वारा ग्रहणमें न जार्वे व जो किसीसे बाधाको ज । चार म स्वयं बाधा दें-पर्वतादिक भीतर भी हो व उनके भीतरसे ित्रिक मासके वे सब सुध्य प्रेटेडिय हैं, तथा नी आयासें ही व इंद्रियद्वारा ग्रहणारे अर्थि व वाधा की व वाधारी वार्थ वे सब ' बाद्द एकेंद्रिय हैं । एथ्दी, मन, अग्नि, यायु साधारण बनम्पति ा अर्थात निरोद ये पान प्रशासिक एकटिय की गृत्म है वे नोन लोडाई र सब्देन हैं । बादर एवं निदय प्रथ्वी आदि व निनोद बीच जी बाहर है उनममें ही बुद्ध हमारा , वियोष हारा साणा- नाते हैं। प्रत्येख-, समस्यति बाह्य ही होती है। प्येमे जिल ६ देव युरुष्यतिके आश्रक्ष निमोद या साधानण या अग्रनक प्रचन 'ते राज्यक रहती है त्रप्रमक्तीय स्वर्गिति पत्रीक्ष च सक्त लोके जालका राज्य है। मां स्ट्री है कर के जरति क रूपेंड का ले हैं। आ लेक अग्रास्त्रीमें बहुत हैं -

> बादरामुद्रुमञ्जेण य वादरज्ञहमा हार्गन १९१० । य द्वारोरं युक्त अधारदेटं हुवे शहस ॥ १८३ ॥



परेन्द्रिय माणिशों हे यात करनेते बार आणों हा बात होना है। ये चार आम हैं—परनेनेन्द्रिय, कायवर, आपु और आसो-प्रशस, इनके वियोगका नाम साण है। इस सरह यां दश्यवरिक व्याप्यान है। सुक्रतात चार पालाओं के हारा दृश्या स्थल पूर्ण हुआ। क्षम्यानिका—आये होर्डिय जीवों के मेहीको करते हैं—

संयुक्तवादुवारा संखा सिल्पी अपादका य कियी ! माणेनि रसं फासं जे ने वे डेडिया श्रीताः ॥ १२२ ॥ सन्दर्भातकार सन्धर मुन्योऽस्वरण व कृतव ।

भानन्ति रुप्त स्वयां ये ते हीत्रियाः शीवतः ॥ १२९ ॥

अन्यसाहित सामान्यायँ-(संदुष्ट) संदुष्ट एड मादिक सुद्ध शंस, (मादुवाहा) मादुयाह (संस्था) मस्ट (सिन्यी) सीन (4) और (बपादगा) पाव रहित (हिन्सी) क्यों निमें गिहोसा, रुप्ति, कट स्थादिक (ते) नो रस्ये। सस्त वा स्वादको व (कामी स्थादीक (सामीत) अपने हैं (ते) के (नोक्ष) नीव (विहस्तिया) होन्दिय हैं।

विशेषायँ-पुत्र निश्चयनवर्षे यह नीव हॉन्टियके ब्वरूपसे स्थाइ तथा कंकशान नीय केवलदिनसे अभिक्ष व्यक्तिन स्थाइ तथा कंकशान नीय केवलदिनसे अभिक्ष व्यक्तिन स्थाद तथा केवलदिन स्थाद स्याद स्थाद स्याद स्थाद स

२८] श्री पंचास्तिकाय टीका । को मन उसके आवरण रूप कर्मके उदय होनेपर ये नीव द्वीटि

विना मनके होते हैं।

ही उपयोग द्वारा काम करनेवाले द्वीन्द्रय भीवोंके कुछ टर्टारं दिये हैं । इनके भी कारण तथा कार्यका सम्बन्ध तर्कद्वारा पहलें विचार करनेवाला मन नहीं होता है—ये भी अपनी होनों इंद्रियोंके बसीमृत हो अनेक इच्छाओंके मास हो उनके लिये निरंतर चेष्टा किया करते हैं । इनके रागद्वेष कर्मी कर्म मगट दोसनेमें आते हैं इसिक्ये इनके कर्म चेतनाकी भी ग्रुख्यता है। सुख दुःखके अनुभव कर्म कर्म करने नता तो है ही। इर्म दोन्द्रय मीवोंके एकेंद्रियोंकी अपेखा दो माण अभिक हैं—पर्क रसनाइंद्रिय एक वचन व्यक्त इस तरह इनके छः माण हैं। इसिक्ये

मानार्थ-यहां गाथामें स्पर्श और रसना मात्र दो इंदियों^{हे}

इनकी हिंसाने प्रकेटियों की अपेक्षा अपिक दोन है। त्यावानों को इन जंतुओं पर भी दया सनती जादिये और यथादां कि इनकी रक्षा करती योगा है। तत्वार्थ साम भी इनके उदावरण इस तरह दिये हैं— यान् कुर स्वाद्य कार्य में प्रकृत कर के स्वाद स्वाद



गंपको, (पुण) सका (काम) स्वर्शको (मार्णनि) सामने हैं (ने वि)
ये ही पीइन्द्रिय भीव हैं |
यिमार्थ-में मिण्यादाष्टी शीव निर्विकार स्वर्शवेडन शानको

विज्ञेषाध-नो मिरवादाद्वी तीव निर्विदार वयसेवन शानकी भावमाने उत्पन्न नो मुख्य कर्यी अपूनका चान उत्पन्न दिनान हैं तथा प्रमन्त स्वान, साल, बान आदि इंदियोंके विवयोंक गुराके अनुमक्षेत्री सीन हैं वे चीरदिय सानि नामा नामक दे वांचन हैं। इस नाम वर्षके उदयके काणीन होवन तथा वीचीन्ताय और रवांचन, सान, प्रमन्त क्षांचन हैं। इस नाम वर्षके उदयके काणीन होवन तथा वीचीन्ताय और रवांचन, सान, प्रमन्त क्षांचन क्षांची वीचीन्ताय और रवांचन क्षांची वीचीन्ताय क्षांचन क्षांची काणीन के सावंचाय कर्यांची वारांचित होते हैं, वह क्षांचाय हैं।

भाषाप-इम गायमि बारदिस्य थारी भीवीके क्लांत है इ सावापनारमें भी इस तरह बताया है-

सञ्जयः कोश्योत्तरीयाः को गहित्यानस्य । वरशासभाषास्य भवन्ति चतुरिन्दियाः ॥ ५५ ।

भाराये-स्थानाती, की क्षा होस कराय, ववस्त किंदू, मेरी आदि चन रेडिक कि नाने हैं। ना स्थानी दिखी के किस सेकि भारता पार्टन हुन हुए तथा जनक क्षा कर्य है किसम बार्ट्स न बराने हैं। भारता रोगे विकास कराय कर कराय मेरी होते होते हैं। का चन्य कराय कर्य कर्य कर्य कराय क्ष कर दूसरी कराया अस्व कराउंचे भारता कर्य कराय कराय

क्षा के इसकी अदानात्र जन करा उन्हें आहे के राज्य राज्य आनं है नव व उन्हों किशान्त्रों करके पान हैं आहे राज्य राज्य प्रान्ता करी किशाकों अन्यक्ष किरण हैं हुक को विकास अस्त चारियों कि हुक में बहुत अस्त्रा करते हुंगों किया अवकृत्याना की



इमलिये दु:सरूपी रोगोंको शाज करनेवार वर्मेरूपी अमृतरी सदा पीना चाहिये निसके बीनेसे भीवोंको सदा उत्तम सुरा मिलता है। इनसरह निक्लेन्ट्रियके ध्यास्यानकी मुख्यतामे तीन गाथा-ओंके हारा तीसरा स्थल पूर्ण हुआ !

उत्यानिका-आगे पंचेन्द्रियके मेदींकी बहते हैं---**प्र**रणरणारयनिरिया वण्यस्यष्यासयन्वसदण्ट् । जलचर्यलबरम्बचरा बहिया पंचेन्द्रिया जीवाः ॥१२५॥ मुग्नरनारकतियेची वर्णसमस्यक्षेत्रस्थान्यज्ञास्त्राः । वस्त्रमध्यस्यामया। बस्तिनः पंतितिया श्रीषाः ॥ १९७ ॥ अन्वयमहिन मामान्यार्थ-(सुरणरणास्यनिस्या) देव, बनुष्य, शाको और तियेच (भन्नवर धनचर खचरा) मेर नलकर, मुनियर तथा आहाशगामी है (बलिया) छेमे बलवान (भीवा) नीव (वण्ण

श्मक्यामगधमहण्य) बले. २०. व्यक्ते, ग्रन्थ और शक्दकी सम्रहोन-बाले (पर्वेडिया) पर्वेडिय होने हैं। विशेषार्थ-मृतिकारने यह अर्थ किया है कि तिर्थव पचे न्द्रियोमि कोई र बहे बलवान होने हैं जैसे जलवरीयें बाह, बलब-रीमें अष्टापद रवजीये अंग्रह्मशी। तो बद्दिशन्या म व दोप रिन परमारमाके व्यानमे उत्तरल निविकार तारिवक आञ्च्याह शुरुरसे विपरीय इन्द्रिय सम्बंध आकृत है वे प्येन्द्रिय जानि नामका नाम

क्रमें बाध लेते हैं। उसके एडबको पाकर, बीधानगय क्रमें लक्षा स्पर्धन रमना, प्राप्त चक्ष और फलेइन्डिय जानक चायरण क्रीके क्षर प द्रामंके नाममें तथा नीट्रिट्य भी मन उसके द्वारा क्षानको आवार बरनेवाले बर्मके उदय होनेपर कोई श्रीय प्रचेल्डिय सन रहिन हाने

श्री पंचारितकाय टीका । A.A.]

हें तब ये शिक्षा, यातीलाय, य उपवेश ग्रहनकी शक्तिमें श्रह्मी हों सथा कोई नोइन्द्रिय ज्ञानके आवरणके खयोदशनके लाम^{ने हे}

मन सहित मेनी पंचेन्द्रिय होते हैं । इन पंचेन्द्रिय तीर्वीमें नार्री मनुष्य और देव तो सब सेनी ही होने हें-दंबेरिहय निर्यंब ^{मेर्न}

और जातनी दो भेदरूप हैं। तथा एकेन्द्रियमे ने चार इन्द्रिय ती सो सब अमिनी ही होने हैं। बढ़ों किमीने शंदा की कि अ^{मिने} मन्तुओंके भी क्षयोपशम जानमे विचार होता है तथा क्षयोप^{हानी}

उठनेवाले विदल्यको ही मन कहते हैं यह विदल्प नव असेनीके **है** तम उनको अंसेनो वयों कहा है इसका समाधान वृत्तिकार ^{कह}े हैं कि असेनीको कार्य कारणकी व्यातिका ज्ञान नहीं होता है-

पहलेसे हरएक विषयमें यह नहीं विचार कर सक्ते कि ऐसा क्रानेने यह लाभ होगा व यह हानि होगी-असेनी नीव अपने २ स्वमा बसे बिना हानि लाम विचारे काम करते हैं जैसे-चीड़ी गर्म्य विषयमें य आहार भादि संज्ञा रूपसे की चतुराई रखती हैं वा उसके भातिस्वभावमे है, अन्य विषयोंमें उसका ज्ञान विचार नर्ह

कर सक्ता है। मनमें यह शक्ति है कि तीन नगत व तीन कार सन्बन्धी व्याप्तिज्ञान रूप केवलज्ञानमें नो परमारमा आदि तत्त नाने गए हैं उनको परोक्ष रूपसे नान सक्ता है इसलिये वह केव लज्ञानके समान है. यह भावार्थ है।

भावार्थ-इस गायामें पांच इन्द्रियधारी भीवेंकि उदाहरण हैं। जो मतिज्ञानावरणके क्षयोपशम व बीर्यातरायके क्षयोपशमसे ऐसी शक्ति आत्मामे प्रगट कर पाते हैं जिससे वे पांचों इंद्रियोंसे शन कर सक्ते हैं-एकेन्द्रियसे छे चार इन्द्रियतक तो जीव सब तिर्वे^व

ही होते हैं, पंचीन्द्रयोमें भी चार इन्द्रियके समान मन रहित अपनी तिपेच होने हैं तथा इन विषेचीमें सेनी विधेच भी होते हैं। वे तीन प्रधारके होते हैं—जो पानोमें पैदा होते व नीने हैं ं जिमे-मछरी, बाह आदि जलवर। श्री चार पदवाले धृमते हैं जिसे । गाय, बरुष, घोड़ा, उंट, हाबी, कुता, दिरण गेमे थलबर तथा भी आहाशमें उड़ने हैं भेसे क्यूनर, सोर, काक, बील, तीता, मना ऐसे आहारावर अभेनी पंचेन्द्रिय निर्यवेकि दर्शन किमी : शास्त्रमें देखनेशे नहीं मात हुए। ऐसा सुना माता है कि समुद्रमें । कीई जातिक सर्प होने हैं वे अमनी होने हैं तथा नंगलमें सन्म-छैन उत्पन्न होनेशाने वोने व मूपक असीनी होने है। बनुष्म, देव, नारकी सब मन सहित तिथेच हीने हैं। जिनके मन होता है पे मानमें बहुत बनी होने हैं-वे पहलेंगे ही हानि व लाम विवारकर : दामदरने हैं, क 'रे अवका कारण साटन ही की पहलेसे ही नहीं माने । हैं, उपकारीकी पहचानकर उसके साथ उपकार परने हैं सबा जी ं हानिकारक मालम होता है। उसके नाशका उद्यय करने हैं, यदि कीई ं स्किन किया जये तो। समक्ष्तिने हैं। याद शिक्षा टी जाये ती प्रदेश कर मेने हैं। तर्क विनर्ध कर माने हैं। मांव यदि गुल्स पदार्थोंको भी जान सन है। जिनक सन नहीं होता दे इन यानीस रहित होने हत अपन्। हाँ द्वयोंके विषयीचे पद्मे सुन होने रूप आहा क्षी हर में अपन जिले सव मार्गियर भारते हैं। एड भावने एक हुन की कर करते हैं पर सहके संबने । यास स श्रीमं १ रहत ८ १५ हे बन्ते स्टर्ट हते हैं जन सहित हिरण बनमें अध्यातः हह ज्ञान्दर धानेमें हा ६० ज ६ ...

४३] श्री पंचास्तिकाय टीका ।

उधर नायमा नहीं नव कि मतरहित एक पर्नमा दीवहमें एक दूर-रेको नलने हुए देसकर भी यह न विचार कर सकेगा कि हुने दीपकके पास न नाना चाहिये किन्द्र फिर भी आंगके विश्का प्रेरा चला आयमा | तत्वाचेसारमें संज्ञीका लक्षण ऐसा ही व्हारी-

के हि जिशाजियात्मार्यप्राही संको स उच्यते । जतस्तु विषरोता यः सोऽसंको कविता जिनेः ॥१३१ भारायं-नो शिक्षा, बक्तियाक्त्य लयंको ग्रहण करनेवाला है बह मनसहित संज्ञी है। नो इससे विषरीत है वह मनरहित लयंगी है।

शह मनसिंद संज्ञी है। जो इससे विषरीत है वह मनरिंद्र अमंत्री है। श्रीगोम्मटसारशीर्में कहा हैं— सिक्ताकिरियुवदेसा छायम्माहा संघीयळवेत । जो जोवा सा संघणी तांव्यस्तेको अस्त्राणी हु ४६६!

ती स्वित्त है के पुष्यं कड़ावरड़ों व तरश्मिन्दं व । सिरागिंद णामिणेद्व समयो अविष्यं व विवयतेहा १६६५॥ भावाये—हित अहिताई वरने व छोड़ मेरूप शिक्षा, हाथपाची इच्छाते चकावने आहिरूप किया, चामडी आहि संकेत करने उपयेश रिया हुआ वथ विधानादि सो उपदेश, कोकादिका पाठ सो मनाप,

इनहां समझनेवाजा जो मन उत्तके व्यवज्यनसे मनुष्य, भेल, हापी, तीता इत्यादि नीय सो मंत्रो नाम है। इस रुश्यति उरदा तस्पण-पारी नीय मो अमंत्री हैं। तो पहले कर्नव्या व्यवज्यव्यक्षी मीमांता परं, दिगं- तरत्र कुत्तराकों मीन, नामसे बुल्ड्या हुआ आनाय सो नीय मनपदिन मंत्री है। त्री इससे उर्दा हो वह

अर्तेनी हैं। एत्यानिका—आगे एकेन्द्रिय आदिके मेदसे निन भीगेंकी कहा है उनके चार गति होती हैं ऐसा कहते हैं—

देवा चजिमकाया मणुवा पुण बन्मभोगमूमीया। [Å@ तिरिया बहुष्पयारा णेरह्या पुडविभेषगदा ॥ १२६ ॥ देवाधनुर्विकाताः मनुजा पुनः वर्गभोगमृभिकाः । तिरंबः सम्मदारा नामका शुधिवीमेद्रमना ॥ १२६॥

अन्त्रय सहिन सायान्यार्थे-(देवा) देवगतियाले भीव (चड-िणहाया) चार समूद करवें चार महार हैं। (पुण) और (मणुवा) मञ्ज्य (इन्यभोगसूनीया) इमेसूमि और भोगसूमियाले हैं। (विरिया) तिर्वेष गतिवाले (बहुत्पवासा) बहुत तरहके हैं (जेरहवा) नारकी (पुढाविभेषगदा) घटवीके भेदके प्रमाण हैं।

विद्योपार्थ-दैवेकि चार समुद्द हैं, भवनवासी, टएन्तर, ज्योतिवी भीर बमानिक। मनुष्योंके दो मेड हैं-एक वे भी भीतमुनिमें मन्मने हैं। दूसरे वे जो कर्मभूमिन पेटा होने हैं। निर्वय बहुमकार हैं। एटबी बादि याच एकेन्द्रिय निर्वेच हैं। इंग्युक बादि वी इन्द्रिय, युवादि भीम इन्द्रिय, टाम अदि चार इन्द्रिय ऐसे नीम महार विश्वतत्रय नि.च है। नतमें बन्तनेशने, मुन्मि इन्हेंसाने नदा बाहाममं उइनेवाल ऐसे डिपः चीपत आंत पर्चित्तिय नियेव है। त्त्व, हाईश, व महा, ६३, ४४, ७० वर्ष, स्टल्ट्स मेची सात द्विती विनमें मान अह है ज्याद निवाली करती है। वही सुप्रहा व बहाह कि में कोई कि हैं। कि के का में जी हैं भवता देश धन में असे कहा जा है हम भवन से द्वार है उन मि तो नाकृति, चार शति कात नामकृति भाषा है उसके उद जाधीन ये मार देव अदि र नियोमें उदा होने हैं। भावार्थ : य में यह किसवाया है कि वह स्वहची

मेही पद्रत आहुनता रहती है। देवियोही आयु टेरोंके मुभन थोड़ी होती है-सोलइवें स्वर्गकों देवीकी आयु प्रवान पन्न होती 🖟 तम वहां बाईस सागरको उत्तर आयु देशकी हीती जीर एक सागर दश कोड़ाकोड़ी फल्यका होता है इस कर^{ज़ प्} देवको अपनी नियोगिनी बहुतसी देवियोका मरण पुनः पुनः वेसन पहता है निसका वियोग उनके चित्तमें रहता है। दैवगितमें मे जो मिध्याद्यशे व विषयलम्पटी हैं वे दुःसी हैं-वहां भी वे ई सुखी व संतोषी रहते हैं जो सम्यन्द्रष्टि और तरवज्ञानी हैं। जै दैवगति पुण्यके उदयको जीवके साथ अनगिनती वर्षोतक रसर्व है वैसे ही नरकगति पापके उदयक्को अनगिनती वर्षोतक रस्त है। नरफकी सात प्रथिवियां हैं, उनमें शारकी महा ममान शरीरके आकार रखनेवाछे पंचेन्द्रिय सनी पैदा होते हैं । मूर्त्य अनके भी शरीरका आकार मनुष्यके समान होता है, पान उनमें अपने ही शरीरको अनेक आकार रूप बदअनैक शक्ति है। इससे वे इच्छानुमार सिंह, स्याल, भेड़िया आर्थ अनेक भयानक पश्चका रूप रखडेते हैं। नारकी एक दूम रेको देखकर कोथित होजाते हैं और परस्पर एक दूमरेको नान मकार दुःख देते हैं । नश्ककी सूमि बड़ी दुर्गधमय होती है, पर्न महा खारी होता है। वे नारकी निरंतर मूख व्यासकी वेदनासे आकृष रहते हैं, नरकड़ी एव्बीकी मिट्टी व नदीका खारी जल खानेपीने हैं तथापि उनकी मूखप्यास मिटती नहीं है | जिसे देवगतिमें बर्ध संसारी पाणी दशहनार वर्षकी आयसे छेकर तैतीस सागरकी अर्ध तक मुख भोगता है वेसे न!कगतिमें भारकी दशहमार वर्षकी आयुमे





भानार्थ-हे बात्मन् ! तुने देवगतिमें देव और देविशोने इंद स्थानमें नाना महारकी भौग सम्पद्माएं बार पार पाई है ह ्म नहीं हुआ। बळान्त भवानक, कुर भावसे पूर्ण नकसे भी हन िंद्रयमे जाहर नाना महारके दुःस्तीमं पड़ा है। तिवंच गति चेदन सेदन बादिमें जोर दुःख तृने पाया है, इसकी कोई जवा नोंसे भी बोई मनुन्य नहीं कह सका है। इस संमारमें अपने हुए 'स भीवने देव, मनुष्य य तिवैच गतिम भी कुछ ग्रुल था वह ्वार वार पाठिया है परन्तु तुम न हुना । कमीके उरवसे चारों ही ंगनियोंने इस मधानक संसारके भीतर पृथने हुए अनेक झुल तथा

इस महार अत्यन्त क्षणभंगुर व कष्टमई संसारकी अवस्थाकी मान कर वर्धों नहीं बराग्यभावको भाग करता है। यदि बराग्य न पाएमा तो नेम जीवन चित्रारके योग्य है। यह जीवन विजुलीके समाम बचन हैं, प्रताबाँका संयोग स्वानके समान हैं, ब्लेट सम्वादो लागीक ममान है नथा अभीर नणपर पर हुए सक्रविनुके समान क्षणभगुर है। ये नेता इन्द्रथनुषके समान है, मध्यनि मेपोके समान है, युवानी कलमें रेग्राहे समान है ये मब ही बानें सणभगुर है। हमिन्ये हानी जीवको पचम गति मोक्षको ही उपारेय जान

उमीदी मातिक किये पुरुषार्थ करना योग्य है। उत्पानिका आगे दिख्याने हैं कि गति नामा नामकर व कामु इसके उरवमें भाम में देव आदि मनिवें हैं उनमें कार ध स्वभावपना नहीं है। वे आप्ताकी विभाव या अगुरू अवस्था हैं। असवा भी शेई बादी ऐसा बहने हैं कि मातमें एक माबदो

५४] श्री पंचास्तिकाय टीका ।

भाग अन्य अवस्थाएं नहीं होती हैं, देव माफे देव ही होता हैं मनुष्य मरके मनुष्य ही होते हैं उनके इस कथनका निर्णय अने लिये कहते हैं—

न्य क्ट्त हू— सीणे पुट्नणिकद्वे गहिणामे आउसेच नेति सन्तु । पापुर्ण्णति य अञ्जं गदिमाउस्में सल्टेस्मनसा ॥ १२ः

भाषुरणात् य अरुपा गादमात्रस्य सङ्क्ष्यत्रसा ।। भीगे पूर्वनित्रदे गतिनाद्रि भाषुरि च नेऽपि सन्तु । प्रानुबन्ति सम्या गनिमायुष्ट स्वटेरयादशार्थ ॥ १२० ॥

आन्तान्त्र बच्चा गानगानुष्ट स्वयंत्रवाता । १९३ ग अन्य सहित सामान्यार्थ—(युव्यंविवदे) पूर्वमें बांचे (गिदिणामे) गतिनामा नाम क्ष्मेंक (च) और (आउसे) आयु चे (सीण) क्षम होनाने पर (तिकि वे ही नीव (स्वयु) बास्तवर्में (! स्तवरा) अपनी २ छेदबाके वरासे (अपनी) बन्य (गादिम्) गाँ (य) और (आउस्से) आयुक्ते (वायुक्यांति) पाते हैं !

विश्वेषाध-ये संसारी जीव अपने २ परिणानिक आ भिन्न २ गति व आयुको बांधकर जन्मने रहते हैं ! इच्चा, नं कापीत, पीत, पद्म, शुक्त ये छः छेरवाएं होती हैं इनका स्व श्री गोम्मटसार्से विस्तारते कहा है जैसे—इच्चा छेरवाका स्व

यह है " चंडो म मुच्ह वेर मंडलतीको य घम्मद्रपरियो ! १ ण यप्दि वर्ता कस्सम्मेथं तु किण्द्रस्स ॥ ९०९ ॥ " मार्यार्थ-मंचड तीम कोषी हो, वेर न छोड़े, कक्नेका व सुद्ध-क्रते निसका सहन वस्माच हो, द्यागर्यसे रहित हो, दुष्ट हो, कि गुरुगन आदिके वश न हो। ये लक्षण रूप्ण वेस्या वालीक है

गुरुनन जादिके बश न हो । ये ठक्षण कृष्ण केरया बालोंके हे यह अध्यारम ग्रंथ है इससे निरोप नहीं कहा है तया कुछ संक्षेपसे किसते हैं—" क्षायोदयानुरंजिता योगपत्रनिः



क्यायानुरनित नहीं होती है तथापि योग प्रवृत्ति रहनेसे गुक्नेशा सयोगकेवळी तक बताई है—खयोगकेवळीके न योग प्रवृत्ति है न क्यायोंका उदय है इसिजये वहां छेदबादा बुछ भी सम्दन्य नहीं है। छः छेदबाओं में रूप्य, नील, बागेल अद्युग हैं जर कि पीत, पद्म, शुद्ध शुम हैं। नारको नीय और बार् इंडिंग

न करोना का उत्प है इसाल्य वहा उत्पादा बुठ जा। तर्रा नहीं है। इट वेरवाओं में ट्रच्य, तील, बागेल अशुम हैं ते कि पील, पदा, शुक्र शुम हैं। नारकी तीव और चार इंदिर तक सब मीब तीन अशुम केरवायां है हैं। पंचेन्द्रिय मिनी स्टब्लिस पीतवक चार केरवाएं होती हैं, शेष पंचेन्द्रिय सेनी महुन्य तथा तियँचेकि छहों केरवाएं होती हैं। देवोके पर्याप अवस्थां

पीत, पम, शुक्त देश्या ही हैं। अपयोप्त अवस्थामें भवनवासी, व्यंतर ज्ञयोतिवीके रूप्य, भीत व कापोत तीन अशुभ केश्याए होती हैं। रूप्यावेश्याका एकस्य कहा आचुका है अन्य यांच देश्याओं क्ष स्वरूप नीने महार श्री गोम्पटसारमें हैं— गिशायेव्यावकृष्ट प्राप्यापणे होति तिन्यसण्या या।

लपकपासेथे अणियं समासदो गोलटेस्सस्त ॥ ५११ ॥ माबार्थ—निसके निद्धा बहुत हो, गो दूबरोको बहुत ठाता ही, यह संभिष्ये महुत ठाता ही, यह संभिष्ये मीठ-छेरावाले नीवका चिद्ध कहा गया है—
स्तर्भ जिद्दा बण्णे दूसद बहुसा य सोचमयबहुदा ।
सहुयद परिमवह यदे वह सेवाने अण्येय बहुसी। मानु

धूसर अभिरत्यवेती व्य य आवार हाणिबर्ड्ड या १५१३। सर्प्य परचेर रचे देश सुबहार्गीय प्रव्यवाणी हु । या गणाड्र कहालको स्वववायीये ग्रा वाउसमा १५४॥ मार्वाय-नो दूसरीयर बहुत क्रीय करे, बहुत पकार औरडी निन्दा करे, बहुत कहार दुसरीको दुःसी करे, निशके शोक व मध स्तृत हो, भी दूसरीके भाष हेथी रवस्ते, दूसरीका अपमान को, स्वपती स्तृत पड़ाई को, भी अपने समान दूसरेको पाणी व कपी मानता हुआ दमका विश्वास न को, भी अपनी स्तृति को दमपर स्तृत समस्त हो, दूसरेकी हानि व सम्बर प्यास न दे, सो युक्सी अपना माण भीरे, भो अपनी स्पाई को दसको सहुत पन है, तथा सी करीव्य अक्तेव्यकों में भिने ऐसे चिह्न क्षांगेति रहा सामेति

जानाइ कञ्जाकञ्जं सेयमसेयं च सम्बसमयासी । इयदाणरहेर च मिन् सम्बल्धमयेयं मु तेरस्य ॥ ५१५॥

भावार्य- में कुनिंड कर्क-प्या है उटका ता स्वर्थनियाय । भावार्य- में कुनिंड कर्क-प्या है स्वर्ध व दानमें प्रीति माने, सर्वेडों करने समान देखनेवाना हो, दया व दानमें प्रीति स्तता हो तथा मन, वचन, कायमें कोवन हो ऐसे जिह पीठ करमाकृति मोवक होने हैं।

बागी महा चे।क्का उल्लबक्ती व समदि बहुते वि । साहुगुरुपुत्रणरदी एक्सणमेवं तु वस्तस्य ॥ ५१६ ॥

आरार्ध-मी त्यागी हो, यह ही-सुकार्य करनेका व्यमाव रसता हो, शुभ वार्धमें उदायी हो, वह व उपद्रवक्त करून सहन करनेवाला हो, माधुनोको और वहीकी मकिमें मीतियान हो ऐसे बिद्व प्रमत्स्यामाने जीवके हैं-

ल बुजार वश्यावार्थ जाति व जिल्लाणे सती व सरवेति । करिय व रावद्वीसार गैरीशिव व सुक्रारेक्सस्य २००० व भावार्थ-जो वलाल न धरे, जो निरान न धरे स्वर्धन भोगाशालांने वर्षे न सेंबे, जो सबे प्रशिसे समझामाव सरजा हो, इट व व्यक्तियों सार्व देव न वरणा हो, युक्त रही व्यहिसे स्नेट रहित हो पेसे विद्व ह्युक्तरेस्यावार्थ मीचक हैं। काणोरपातीका स्वत्य पेता भी बरा हैं — मेरे पुळितिहींगा निश्चिमाणो व विस्तरोगी। या साणो साणो स सदा भाजन्ते। येव भेत्रेत य ३ ५०० उ माराप-भे न्यारंट हो, किलमें सद हो, दें दें रहें हैं

भाराय-मा व्हान्त हो, कियान गर्वहा, वृद्ध र विश् वर्गान कार्यक्षेत्र मान्या हो, विज्ञान व चातुरीये वृद्धित हैं इदियोके विवर्षेक्ष मति लग्बरी हो, मिमसभी हो, मानामारी है-स्थानमी हो, तथा निषक्षेत्र मनके अभिशयको सूपण न मान में

कारणा हो, तथा निषक निक्त आस्तायका दूसरा न तार र ये चित्र हरणानेरयात्राचे औषके हैं । इन छः नेरवाजीके निये यक स्टांन दिया है मो यह हैं-पदिया के छप्पुरिसा यरिमहारणमान्वदेशान्ता । कक्कारियरकमारी येशिकाना से विवित्तित ह ५०० ॥

पान्त्रपान क्षेत्रपान के विश्वपति । ५०० ॥
पान्त्रपान क्षेत्रपान क्षेत्रपान के विश्वपति । ५०० ॥
पान्त्रपान क्षेत्रपान क्ष

देसकर वे ऐमा विचार कार्ने ठाँर-कृष्णवेश्यकि आवकी रस्तेवाची विचारता है कि मैं इस शृक्षकों महसे उत्चाह बालूँगा और एन्ट्रें साऊगा। मीछ लेश्यावाका विचारता है कि मैं इम शृक्षके पह या स्कपकों काटकर फल साऊंगा। क्योत लेश्यावाका विचारता है कि में इस शृक्षकों बडीर शास्ताओंकों काटकर फल साऊंग। पीत लेश्यावाल। विचारता है कि मैं इम शृक्षकों छोटी छोटी

पति छरयावाळा विचारता है कि म इस युसका छाटा छाटा टहनियोको काटकर फल साऊंगा | पद्मछेरयावाळा विचारता है कि में युसेकि फलोंको ही तोड़कर साऊंगा | ग्रुक्कछेरयावाळा विचारता है कि में उन फलोंको ही साऊंगा जो अपनेसेट्टटकर गिरे हों | इस मक्षर रूपते विचारे व कटे भी छः टैश्याओंके कमें हैं है

इस इष्टांतमे छ सहार्थी तेदयाबाचे मीदीक मार्थोहा पता भागता है।

हम रेप्स्योक आरोनि ही प्रश्नवके किये जायु वंच होती है व इन ही रोप्याभीको निमे हुए ही बरकर नहीं उस रेप्स्याका होना सभव है बड़ी यह भीव जाता है।

एह लेरवाओं के सबस्य, सच्यय, स्ट्राट पेरे बदाह मेर हैं हमते की साहर दूसरी गिनकों माने हैं । इनहीं के सप्यों काठ कार पेरे हैं मिनकों आपुक्तिय संव होता हैं। योभ्यदास स्मृत्यों कार कार हैं। योभ्यदास स्मृत्यों कार कार हैं। योभ्यदास स्मृत्यों कार कार स्मृत्य हम्मिक्ट सप्यम स्थानके साम कारोड की हिं कारा अनन गुण वृद्धिकर सप्यम स्थानके साम कारोड केरवाई स्थान स्थान की हिं कार्ना अन्य स्थान की हिं कार्ना अन्य स्थान प्रति अस्या स्थाने हरें हुए उसरीक सप्यम स्थान प्रति अस्या स्थाने कायम स्थान स्थान प्रति अस्या स्थान स्थान कार्य की कार्य स्थान प्रति अस्या स्थान स्थान कार्य प्रति अस्य स्थान स्थान कार्य की स्थान कार्य की स्थान स्थान कार्य की स्थान की स्थान कार्य की स्थान की स्थान कार्य कार्य की स्थान कार्य की स्थान कार्य की स्थान कार्य की स्थान कार्य

 चारी दी आयुप्रथके बसना द्यारी मेट समान द्यायमें रूप्याटि एलोके साथम असा ।

१५ तस्क बिना तीन आयु वशके कारण धृष्ठि रेम्ब समात
 म्यायमे कृष्णादि छहों लेडबाके मध्यम अहा ।

(ः) नरक निर्यय दिना दो आयु वर्षके कारण पृत्तिस्था समान कप ममें एटजाटि छही छै:योक मन्यम अञ्च ।

(४) केवल देव जाय वधके कारण धूटि रेखा समान क्यायमें



दिवीय सण्ह । नव हिमी अवस्वेन परमवद्दे किये आयु बीघ ही ही तब उपके जागे जानेवाले अपकर्षीय रात समयकी हैरेगाके धनुसार गयुक्ती स्थिति कुम य अधिक होसनी हैं, दूपरी आयु नहीं रनी है। बार आयुर्नेमें एक ही आयुध्य वय होता है। भोगमृनिक मनुष्य तिथैव अवनी आयुक्ती स्थितिमें नी मान होए रहनेपर देव, नारकी अपनी स्थितिक छः मान शेप रहने २१ इसी स्थितिको माठ जिमागों के काटमें दी आपु बांपते हैं। मरण समय चीनमी हेरवाबाच्य चीनमी पतिको माता है हमका करन श्रीगोग्मरपारमोके मनुसार इसलिये दिया माता है कि मो अपना हिट करना चार्ट वे शुवगति सम्बंधी मानों हे होनेको

नेनिस मरण समय निज्नेका उचन रक्ते । सेसहारमभंसा चडगरगमणस्य कारणा होति । एकुडस्म समुद्रा सम्बद्ध अस्ति सन्द्र जीवा ॥ ५१६ ॥ भावार्ध-लेड्बाके उनीम अशोनेसे मध्यरे बाट अहारी ोइकर जिनमें नायुक्ष वधनेकी योग्यता है सेच अठाव्ह असोमें भान छता लेक्या नोह सप्तय, सत्यम, उत्हन्त भेनीमें चारो

गनियोमें जानेके करण सब होने हैं। मुळलेश्यार उराट जडामे मेर हुवे मीब सर्वार्शमिदियो ी नाने हैं । यहा उरहार देव बायुकी विविध नेतीस सायर होती ी का गोमहमारन, रूप --० से २-० तह में लेडवाओं ह ए। मन्त्रीर' बयन है उमर' याव नीचे प्रमाण नानग-मुद्ध न्द्रपाक र यम नहास को भीव अन्तन नाम नेवहवे

ामें लेका विनय दि चार जनुत्तर विमानोंने 'भ्या होने हैं

६२] श्री पंचास्तिकाय टीका । तथा शुक्क लेदबाके जधन्य अंशसे मरकर शतार सहसार नाम

(दक तक विमानोंमें वैदा होते 🖥 । रूप्ण लेक्षके उल्लब्स अंशसे मरकर भीव सातवें नरहरे अवधिनाम इंद्रकविलमें पैदा होते हैं। इसीके अधन्य अंशसे मरकर भीव पांचने नरकके अंत पटलके तिमिस नाम इंद्रकर्ने तथा मध्यण अशमे मरहर सावर्वे नरहके होय चार यिलोंने व छटे नर्फके ही। परलोंने व पांचकी एवबीके अंतिम परलमें बयायोग्य उपमने हैं । नीडडेरयाके उत्कृष्ट अझमे मरकर भीव पांचपी नरक्षके अंति प्टरमें पहले पटलोह कंद्र नाम इंडहमें, व नयन्य अञ्चसे मरकर सीसर् बालुका प्रदिक्ति अत परलमें संप्रज्वन्ति नाम इंद्रक्तमें, व मध्यम अदारे माद्वर बालका एरवीके संबक्तित इंदक्तमे नीचे. चीधी एरवीके सान परनेमिं व पांचमी नाको अंध इंद्रक्क्षे उत्तर पेश होने हैं।

र्थशसे मरकर सनत्क्रमार माहेन्द्र स्वर्गके अंतके पटलमें चक्रनाम इन्द्रफ सम्बन्धी श्रेणीबद्ध विमानोमिं उपनते हैं। तेन लेश्यारे जपन्य अंशसे मरकर उसके सीचमें ईशान स्वर्गका पहिला रिड नामा इन्द्रक वा इसके श्रेणीवद विमानोंमें तथा उसके मध्यम अंश्रे मरकर सौधर्म ईशानके दूसरे पटलके विमल नाम इंद्रक्से लगान सनत्क्रमार माहेन्द्रके अंतिम पटलके नीचे पटलके बलभड़ नाम

११ वें व १२ वें स्वर्गमें जन्मते हैं। पदा लेदवाके उत्रष्ट अंत्री मरकर महसार नाम बारहवें स्वर्गमें तथा उसके जधन्य असी मरकर सनत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गमें पेदा होते हैं तथा परा-सेदराफे मच्यम अंशसे मरकर सहसारसे नीचे सनत्कुमार, मारे-न्द्रके ऊपर बयायोग्ब जन्मते हैं । तेम या पीत केश्याके शस्ट

1डेतीय खण्ड**।** कारोत क्षेत्रमाके उत्हट भंतमे मरकर मीव तीसरं। नरकरे षाटवें एटलके संम्बलित नाम इंद्रकर्में, मुप्तन्य अंशामे मरकर पटली ष्टव्यक्ति पहला सीमन्तक नामा इन्द्रकर्म, मध्यम अंग्रेसे भरकर इन तया छूटम, नील, कापीत इन तीन छैरवाओंके मध्यम भंशसे मेरे ऐसे क्षेम्मिया मिरबारछी तिर्वेच या मनुष्य और तेमीलेस्याके मद्दम अंशसे मरे ऐसे भोगमुमियां निच्याहरी तिर्थंच या मनुष्य तीन महारके मबनवाती, ट्यन्तर, व क्वोतिव देवीमें उपमने हैं। रप्पा, नील, कापीत, पीत इन चार श्रेरवाओं के मध्यम अंसारी मरे तियब या मनुष्य वा अवनवासी, व्यंतर, ज्योतियी या सौधर्म

fer i

हैंगान स्वर्धकेवामी देव निष्यादछी सी बादर पर्यात छरणीहारिक, मतकायिक, व बनस्पतिकायिकमें पैदा होने हैं। यहां अवनक्रवादि देवेंकि वात्र पीतनेरवासे व तिवेष वा ब्युप्योक्ट एक्जारि सीन राणा, मीण, कापीनके बादम कारांगे भी रोगे तिथेव वा मदुष्य अग्निहाविष्क, बातवाविष्क, विवस्त्रयः अग्निनी एपेर्सी, ब नमा मामान्य नियम यह है वि भवनानिहरी च दि लेका

सेस्याने मरण होता है। साधारण बनत्पतित्रे उपनने हैं। संबंधितिहितर देव व प्रधा भादि मान छ री संबंधी नास्त्री वदनीः वदनी संदाहे अनुसार वदारीय सम्बन्धान सा निदंब निको माने हैं। यह भी बान मान होनी चारिस कि किस रित भागी पट्ट भाग बची हो उम्म ही विनेते सामक सहस होने नी जेरशह अनुमान बट जीव पुरा हान है। इस स्मुखके

भी पैनानिकाय रीका ह 37] बरने देव भागका बंध मगा होय कि महत्र होने हुए 🕬

सञ्चम सेश्या हो सो सबसविकारी ही पदा होता है ऐगा ही 👵 और स्थानमें भी मानना । पंडित रोडरमाजनोक उसा फ्रानमें मात भिद्र होनी है कि सम्बद्धे समय नेमा नेपा सम्म है 🗝

हीगा उपीके अनुवार मही वह मेदना अपयोज आश्यामें संमय रें बड़ी बह भीव जायगा । ऐसा जानकर रामुक्त भीवड़ी उचित्र हैं। अञ्चल सेदवा सम्बन्धी भावीही स्वागहर शुमलेदवा सम्बन्धी र वे की। मयसे उचित भाव शुक्तिनेश्याके हैं। इस भागती 📲

लिये हमें अपने ही आत्माड़े शुद्ध राज्यका विचार फाना चरि हाद बीनराग भावदी भावना ही बहुरोही उत्तम बनानेवाली है।

तिमा श्री अमिविगति महाराजने मामाथिक पाउँमें कहा है-स्थान्याराजितशोलसं यमसरास्यकान्यसाहादग्रहाः । कायेनापि विलक्षनाणहरूयाः आहायमं कृषेते ॥ तप्यंते परद्गकरं गुरुतपन्त्रज्ञापिये निस्तृद्दा ।

जन्मारण्यमहोत्य भूरिभयदं गरुहति ते निर्वृतिम् ॥ भाषार्थ-को महात्मा अपने आत्मामें झोल व संयमके भारत पूर्ण है, अन्य पदार्थीकी महावशके त्यागी हैं, शरीरसे यदा

सहायता लेते हैं तथापि उसमें भी जिनका चित्त उदास है, जे घोर ऋठिन तपस्या करते हैं तब भी उस तपने बेरागी है वे ही इस महाभयकारी ससारवनको उज्जवन कर मोक्षको पहुंच नाते हैं।

जत्यानिका-आगे पूर्वमे को जीव पदार्थका कथन किया है उसीका संकोच व्याख्यान करते हुए संमारी और मुक्तके भेदोंकी

बताते हैं--

एदे जीवणिकाया देश्यविवारमहिसदा मणिदा । दैरविहुणा भिद्धा भव्या संसारिणी अमन्या य ॥१२८॥ एने जीवनिवास देहबारी बारमाखिताः सविता । हेर विदेशित: सिक्षा अन्या असारियीऽसम्याध ॥ १२८ स अन्यप सहित सामान्यार्थ-(प्दे) वे (शीवविकाया) जीवेकि मृह (देहप्यविचारम्) शरीश्में बहुनरहो (अध्मिदा) आश्रय

रनेवाले अर्थात् दारीसके झारा व्यापार करनेवाले (गणिदा) कते पहें (देहिवेहणा) जो शरीरमे रहित है वे (भिडा) सिद्ध हैं। रसारिको) मंमारी भोव (भव्वा) भव्व (ब) और (भमव्या) धमव्य । मकारके हैं । विद्यापार्थ-निश्रय नयमे देला माने तो सर्व मीव हाइ

रमस्यक्ष्यको धारी है, केवलज्ञानमई चित्रस्य दारी के स्वामी है था धर्मीने शापत होनेन ने वार्गाश्के स्वामी है तथा धर्मीने उत्पक्त मेवारे शारीरमे रहित है। व्यवहारनयमे को शारिमें व्यक्तिस वै समारी है, जे इन् र रहेन हैं वे सिद्ध है। सिद्धोंरी साध न क्ष आप्ताही स म र' र है। सब में भीवीने कोड अब्ब है. हैं अबद्ध है। जिल्ला करण्यान माडि शुलोकी वसानना सहय द्विकी शक्ति पर "या है। जाय है जिसमें पर नक्ष्य किकी शांकि मार है - अमरब है-जिसे पहने योग्य - अंध दक्ते बीव ज और व्य ध्य " । यह रहे भावकी प्रसहस के उत्तर के इच्छम नक है, यद्दि रजपन च बर्मपना इनमें और किल कर दल्ले वा के होने हैं पर कि सम्पन्दर्शनंक साराज्य समय के "होताना है का जिलम सर्



दिवीय सम्ह । मञ्ज व्ययज्ञान पहचान हम अल्पज्ञानियों हो होना कटिन है अतरब हमको अपने आपको मध्य ही मानकर पर्मसापनका व सम्पर्यनकी माप्तिका उवाय करना योग्य है। हमारा उपाय कभी निरमेक न भाषगा-कवायोकी सेदतासे पापका नाग तथा पुण्यका राम तो होटी नायगा भिससे दमारा यविष्यका भीवन नरकादि कर न दोहर स्वर्गादिमें साताकर होगा । यदि हम भव्य होगे हमडो अपने आत्माडी यथार्थ मतीति हो नामगी तथा स्वाल्ग-त्रमबद्धा भी लाभ होगा।

इस पुरुवाधी जीवको सदा उधमसील होना योग्य है-भी कुलमङ आचार्य सारसमुख्यमें कहते हैं— वृत्रवमनः कलं सारं बहेताकानसेवनम् । विनगृदितयीयस्य संयमस्य च धारणम् ॥ ७ ॥ व्यातमानं सतत बहोरहानध्यानतपीवलैः।

ममादिनाऽस्य जीवस्य शीक्षरत्नं विसुप्यति ॥ १५ ॥ भावार्थ-मनुष्य मन्त्र पानेका यही पार एस है, नो ज्ञानको मेवा की नाम तथा अवने बीर्वकों न डिय'कर समसका थारी हिया जावे । अवने आत्माही मटा ही इ.न. ध्यान व रूपने दलसे रिक्षेत्र रखना चारिये-मी भीव प्रमादी होता है निका द्योकस्ती

्रमातात चार . च ः १ ०० १३३ व्यास्थामकी तस्यान स था स्थल पूर्व तक । यह - दिन , लिशन पर है हम ६ ज करुपमें "विशिध बन्ध्याश हर पूर्वने करे हरू ने गहेदिय अर्थतक दशस्य न भी जन्म ० व हैं। इस

भगका द्यान देने हैं। जैसे विसीने बहा, बाबी क



ग्दामाधिक हाद्र जात्नाकी ओर रूप्य दिलाता है। यह नय बताना है कि यह मीव भी अनेक दारीगोर्ने मान होनेगे एकेन्द्रिय, हीन्द्रिय, सेंद्रिय, चीद्रिय, तथा पंचेद्रिय नाम पाता है ला प्रध्वी-कायिक, मतकायिक, भश्निकायिक, वायुवायिक, बनस्पतिकायिक नया प्रसद्यायिक नाम पाठा है, बान्तवर्गे अनुनीह है: पुनेशन दर्शन, गुल, बीर्य, सम्बक्त व चारित्र आदि गुजोंने अरपूर है ! निद्ध परमारमार्ने और इस भीवमें स्वभावकी अपेशाये कोई अन्तर नहीं है । व्यवदारमें नेसे पीके सम्बन्धमें निद्वीके पड़ेकी पीछा पहा करते हैं बिसे ही इस जीवको भिन्न २ प्रकारके शरीरके सम्बन्धने व्हेंद्रिय आदि नामसे बहने हैं। सन्यन्द्रप्टी शानी भारमान्त्रे यह भच्छी सरह विचार छेना चाहिये कि इंदियोंके य कार्योक आहार सब पुद्रल भटके द्वारा बने हुए हैं, मेरे स्वक्रपमे भिल है तथा मिन क्रमींके उदयसे छरीर व इद्वियें होती हैं ये कर्म मी मुक्त पुट्रल हैं । वे ज्ञानावरणादि आटों ही कमें मेरे आत्माके स्वभाव नहीं हैं ऐना दुरण्ड शीवड़ा स्वभाव समझना चादिये ।

श्री पुत्रमणदस्वामीने इष्टोपदेशमें बहा है -म्बस् यद्वसुद्यकस्तनुमात्री निरस्थयः । सम्पन्तररीरपवानास्मा लेकालाकविलाहनः ॥ २१ ॥ भावार्थ-यह आत्मा स्वानमबक्त हारा भन्ने प्रकार प्रयट होना

है, धरीर प्रमाण आकार रस्तता है, विनाश रहित है, सोक अन्तो-क्की देखनेवाला है नथा अत्यन्त सुली है।

जितने समारमें झरीरवारी प्राणियोकि भेष है उनके भीतर जीवको पुरुत्तमई अवस्थाओं में भिन्न शुद्ध एकाकार सिद्ध परमात्माके समान देखना चाहिये !



स्थायवर्गने के कारणार्थात सुद्धा सारोजि क्षिण्यात वस्त वर्षावर मार्ने हार्थी नगर मीची वसीने इस मीची सोवायवर्गा की है पर्याद स्वत्यासम्बद्धी तुरून वर्षावे पान्या, क्षापुष्ट विश्वयत्त्वती ही पर्या में एक हो इस सम्बद्धा नगर हुए विश्वयत्त्वयी साम्बीव स्वान-वर्षा वर्षावर्णाल्या है वृत्ते सार्वाच विष्या है —

"पुनार बाताहीचे बना बदरान्देर दु विच्छवेत । भेरणवातालाता, शुट्रणया शुट्रभावार्ण व

१तदा क्षत्र एका आगदा है।

भावाचे द्वा सामाने आवादेने यह बणवा है कि इस बाद मार्गे भी रोकी सरकार बात को है तो इसकी कियर करायोंने य प्रेमा स्मरत बहें से कि अगुक आयोंने मीब है 4 बसीकि श्रीव पूर्णेंव है इसमें वह मेल आदि कियों भी इंद्रियों किसी सरह है देखा व मारा सता है। इसावियं यहां आयोंने हिंदी देखों के मार्गें हैं के कोची मारावाची मार्गेंग्याची इस्तवानी है। सम्में मीवार कर्ण होता है केन पुरुक, धर्मानिवाद, अयमी मेवाब, आवार जब बाट उसमें य यहबान नहीं निरंग मार्गाहें।

हमार साम्चारक र व चर्चक चाल्क स्ट्रा है च तक पुनन्तः। हीका क्कार है।

हर्राहरता है कि इंडिंग पूर्वता अब आहे, बाह, बाह स्वाह स्वाह र भी हरू जह अब अव जाता प्रकार मुख्य नहीं से प्रकार है तब इंग्लंड के अब अव जाता हुए जा है है पूर्वांका पुन्न स्वाह इसार प्रकार अब अव है। जिल्ला पुन्ता तब बुद्ध हुए उन्हों कि से साहा एक बहु बाला उत्पाद आग बहु सुन्ना होंगियी इरमा करना है । बदि बोई राडम लेकर पुनने और बालकर नष पुनना बेना ही राड़ा रहेगा किन्तु बारफ उम लड़गारी र दुपरमें सब साहर साम जायमा । यह बटक हिसी दुसरें

दुःग्यो मय साहर माग नावता । यह व तक हिमी दूसी याजहरी भोतन देहर उसहा दिन करेगा नया करी दुर कार्फ किसी याजहरी सनाहर रूज देशा—पुनज कुछ भी दिन अदित नहीं करेगा। यदि इस मिठाई स्विक्तनेही जुजाई सी व

अित नहीं करेगा। यदि हम मिठाई व्यित्तनेको बुत्तवं ही ^व उमी समय आक्टर लाने अमेगा व इंद्रेय मुख्यभौगे^{गा} कि पुत्तना न आयगा न कुछ न्यायगा। यानकम, गायाने के ^{गे} सय लक्षण मिलनेसे भीय है पैमा निश्चय होताता है—वि^{त्र}

सब कराण मिलनेमे भीय है ऐमा निशय होजाता है-यदि द कमें भीव न होता तो कदापि उत्तमें ज्ञानदाकि नहीं वाम ^{कर} इन पटचानोंसे हम हरएक वाणीमें भीवदी बनाया निश्चय

इत प्रचानास इन हरफ्त भाषाम आवश्य स्तारा । तत्र सक्ते हैं। बास्तवसे यह तीय ही करी व सीला है व गांत शुम अगुम परिणतिका करनेवाला है। यह श्रीव संसार अवस्य भाषने अज्ञानसे दुःख उद्याया करता है।

सारसमुख्यमें कुलभद्र आचार्य वहने हैं-

स सारे पर्यटन जंतुषंडुचीनिसमाञ्जले । शारीर मानस दुःखं श्राप्तिसित वत ! दाठणं ॥ २ । शासप्रधानरती मुद्देत न करोरस्यासमी दित । तैनासी सुम्रहतक्लेट्टां परवेद च मच्छति ॥ ३ ॥ मासार्थ-यह भीत अनेक योगियोसे भरे हुए संस्थ

पुसता हुआ स्वानक शारीरिक और सागसिक दुःस योग है। जो मुखं प्राणी व्यक्तियानमें रत होगाता है वह आत्मा सचा हित नहीं कर सका है। इसीलिये यह और ^{सा} और परलेक्क्रों सहान् क्षेत्र ठठाता है। इस तरह मेद भा^{वना}

٠.,

श्री पैचास्तिकाय टीका । 6.8] रूप सुरगमृत रसका अनुभव होता है व उम अनुभवमे सनरमी मान होता है इत्यादि शुद्ध परिणमन रूप मेद हैं इन सबके हाग मी गही समझी । उसके पीछे अजीव पदार्थीको जानमे अतिरिक्त

महरूप गुणेकि हारा मानी-निनदा स्वद्धप आगे कर्हेंग ऐसा मुत्रदा अभिप्राय है। भाषार्थ-यहा आचार्यने यतावा है कि व्यवहारनयमे पुरुषके सम्बन्धसे मिवनी प्रकारकी आवश्याएं इस जीवडी होती हैं उनका स्वरूप आगम द्वारा अच्छी तरह मान लेना चाहिये भिससी गर शान भीतर शब्क आवे कि वे सब पर्याएं जीवकी शुद्ध परिणति^{में} नहीं हैं किन्तु कनोसे उत्पन्न हुई औपाधिक परिवास व विभाव भाव

हैं । कारण यह है कि एक मुमुशुको जीवका असल स्टमांव जात छेना उचित है। यह बिना भीवकी कमेरन उपाधियोंके माने हुए ठीकर नहीं जाना मा सकत है। संसारी नीवोंकी १४ मार्गणाएं बहुत आवश्यक हैं। ये ऐसी अवस्थाएं हैं कि निवमें हरएकमें संसारी जीव प्रायः पाए जाते हैं-गद्द इंदियं था काचे जीव वेए कसाय जाणेय ।

संजम दंसण हेस्सा भविया सम्मस संविध भाहारे ॥२॥ (१) बार गति, (२) पान इंद्रिय (६) छ एव्यी आदि ्रकाय (४) १६ योग (६) सीन वेद (६) ४ कवाय (७) ८ ज्ञान (८) ७ संयम (९) ४ दर्शन (१०) ६ लेस्या (११) २ मध्य (१२) ६ सम्यक्त (१३) २ संजी (१४) २ आहार । यदि हम-

चार गतियोंमें संसारी जीवोंको तलादा करेंगे तो सब मिल चावेंगे, कोई भी संसारी जीव इन गतियोंसे बाहर नहीं है। इसी तरह- iच इंदियोंने भी मिल नावेंगे क्वोंकि सत्र संसारी नीव एकेन्द्रियसे चैंद्रियतक्ष्में गर्भित हैं। एव्बी, नन, अप्ति, वायु, वनस्पति न ५ स्थावरोंने एकेन्डिय जीव तथा छठी जनकायमें न्द्रियसे परेंद्रिय तक सब भीव मिल नावेंगे-थोग मनके ार सत्य, असत्य, उभय, अनुभव, वचनके चार सत्य, असत्य. उभय. ानुभय तथा कायके सात जीदारिक, जीदारिक निश्न, विकियिक, कियिक मिध्र, अहारक, आहारक मिश्र तथा कार्मण इन १५ ोगैसिमे एकेंद्रियके औदारिकहार व औदारिक मिध्र, हिन्द्रियसे तिनेत्रय तह तिवेचोमें अनुसय बचन, औटारिकशय च औदारिक मेश्र, एंचेन्द्रिय अमेनी विर्यचेमि भी यही तीन बोग हैं-पर्वेद्रि-र्मिनी निर्यंच व मनुत्योंमें मन, बचनके आठ व औदारिककाय, रीदारिक मिश्र ऐसे १० योग है परन्तु मानेयेकि किन्दी परदि-गरिबोंक आहारक व आहारकमिश्र भी होता है । नाशक्यों व वोंमें ८ मन, इचनहे व हार्वह दो वैक्तियक्त काय व वैक्रियिक मेश्र इष रेमें ३० योग है-विद्वह गतिमें सब मीबेकि एक प्रमेण योग ही होता है। जब कोई आंव कियी दारीकी पर्याप्त णे करता है उसके जन्ममृति तक शरीरकी रचनाकी योध्यना न गाम हो मबनक औरशरिक मेळ र बक्तिविक्तिक व आगरकविक्र ोग *होता* हैं। *जोन बदो*स देशोंक खोंप पुरुष दो ही बेद ही नै भिनार कियोरे व एके जिल्ला केवर कोई जिल्ला सह सब सपसब बेर्डा ति है। पर्चेट्य, निवच व सराय नानी बेटब ले होते हैं। यह शरी मामान्यम सन् हें यस में हैं।

स्पायके मूल भेद चर व उत्तर भेद २५ हैं। इन दशायोमे



٠.,



٠.,

श्री पंचारितकाय टीका । कपायके कमीके रसको अपरियाल्यांनावरणादि रूप पंडेट देता है

फिर यदि तीनों मिथ्यांत्वादि पंछतियोंका क्षंत्र कर सके तो साथिक सम्यम्द्रष्टी दोमाता है । यदि यहां तीनोंका उपश्रम ही करे तो डितीय उपश्रम सम्यम्द्रष्टी होमांता है । साववेंसे जागे दो मार्ग है-

एक उपशमधेणी, दसरी सपकेंध्रेणी । जो उसी जन्मसे मोश जानेवाले साधु हैं वे शायिकसम्पट्टी ही २१ दर्शयोंकी शय का नेफे लिये क्षपक श्रेणी चढ़ते हैं जिसके चार गुणस्थान हैं। अपूर्व-करण आठवां. अनिष्टत्तिकरण नीवां, सूरुमसाध्यराय दसवां और सीणमेह बारहवां। जो इस क्षेणीमें नहीं बहु सके हैं वे उपशम श्रेणीमें चदते हैं इसके भी चार गुणस्थान हैं. तीन को वे ही आठवां, नीमा और दसशं और चीया जपतांत मोह म्यारहशं । शपक-श्रेणीवाला ११ वेंमें नहीं आता है। जीमें गुणस्थान तक उपजम श्रेणीवाला शुक्रव्यानके बलसे २१ क्यायोमेंने २०को उपशम कर व क्षपक्रश्रेणीयाला इनका शयकर मात्र सुरम मोशके उदयमे दमर्थे गुणन्यानमें आजाता है । इस कोअसी भी उपशम वर उपशमसंजा ^{ब्दारहर्देमें व इसका क्षयकर क्षपककाना बारहरेने आगाता है।} म्यारहर्वेने अंतर्गृहर्व पीछे अवस्य क्यायका उदय आगाता है तम दर सानु कमने गिरहर सातवेंमें फिर आजाता है, दुवारा एक दफे

सोपदम सम्बग्ध्याती तथा क्षायिक सम्बन्ध्यती होनी सामिते हैं-स्थादने व जीने व जसने गुस्तमानने साथ अनेनगुणे समय गिर्नेट होते अपने हैं। भादने लेका १२वें लक्क गुण्यातीक कार अरणा सो व निज्ञा सी अपनुष्टेंने अपिक सही हैं।१२वें बणा गांव

किर चड़ सका है और गिर सका है। इब उपरांग खेलीने दिनी-

٠.,

भावार्थ-जानी आत्मा ट्याणींक द्वारा नीवसे जनीत भिन्न नानकर अपने आत्माको मकारामान रूप अनुभव कार्ता है अज्ञानी नीवके चित्तमें विना मर्यादाके क्या आया हुआ यह वे ययों नृत्य कर रहा है यही बड़ा आश्चर्य है ।

८२]

इस तरह जीव प्राधिक व्याज्यानका संकोच य जनीर हा
यके व्याच्यानके प्रारम्भकी सुचनाकृत एक सूत्रसे छठा स्था १ हुआ। पट्टे नेसा बहु चुके हैं "जीवाजीवा भावा " हुव्या? । पदार्थों के नामको कहते हुए क्लंज माया सूत्र गढ़ हैं। हिर्म इं पदार्थों व व्याच्यान करते हुए छः स्थलोसे १५ सूत्रों के हार इं है। इस तरह १६ गायाओं नव बदार्थों क्ट्नेवाने दूसरे ब अधिहास दूसरा अनर अधिकार पूर्ण हुआ।

पीडिका-आगे मानक्ष्ये, द्रव्यक्ष्ये, नोक्ष्ये समा मिक्षं मादि विभावपूर्ण य नर-नारक आदि विभावपूर्याचेते रहितं क्षेत्रपत्र, नादि अनन्तपूर्णस्क्रव समा औष आप्त नी पाराधी मीतर पात यापांचे निकायकरण शुद्ध समयसार नामपारी य क्ष्यं योगा भी शुद्ध तीन दर्याचे हैं उसका विभावपारी मादि कर्यों हैं उसका व्यावस्थान वार गावाओंने करते हैं। इन वं गावाओं के कर्यन अर्थाच तर्याचे हुए पारामा आवामकी इन्यं दि स्पन्न कर्यन वार्याण तीन है। किर भेरकी मादवाके विदेश सम्बद्धि स्थाव सुद्ध पाराध तीन है। किर भेरकी मादवाके विदेश स्थाव सुद्ध प्रवाद स्थाव सुद्ध प्रवाद स्थाव सुद्ध प्रवाद सुद्ध प्रवाद सुद्ध सु

उत्यानिका-मागे बताते हैं कि आवारा आदि द्रव्य अजीव हि---

आगासकारुपुगलपम्मापम्मेसु चन्ति जीवगुणा । निर्सि अचेदणचे भणिदं जीवस्स चेदणदा ॥१३२॥

भाषासम्बद्धाः स्वयं प्रमित् । नेदानचे प्रमुद्धाः स्वयं अविकार चेत्रकः ॥ १३९ ॥

अन्तय सहिन सामान्यायं—(आगास्वाज्युमानवयःमायमेतु) स्राव्युत्य, बान्द्रस्य, पुहस्त्रस्य, यमीरिकाश्र द्रस्य, अध्यारित-स्रह्म्य, इत्तरं वा सामान्यः वर्षोः द्रस्योमं (शीवपुत्या) गीवीर्दे रेप सुत्र (स्रीटिश) मही हैं (सेशि) हनमें (स्वीपत्यां) अवेतत्रस्या विशे वहां नावा है (शीवस्स) मीवव्य पुत्य (बेहवस्य) चेतन्त्र है।

विरोपार-पुर समयों तीन मगत तीन बावते सर्वे स्वीधे मानना यह शीवदा चेतनपना स्वधाव हैं। यह स्वधाव र भंगीव हर्दोंने नहीं हैं इसीने ये सब अंधेतन हैं. सात्र मीव चेतन हैं।

भावाये-एव जानमे पेनन और अयेतरपरा य यह स्वा रिमेनित द्वाय महारको हो सेर होन्स जिसमें य-नरता विस्ता है हर नाव है जा जिसमें येन वा के दें या अव य 1 में आमीय काश्वाद के प्रति हें के दें ती हैं रि. राह, पर, वर्ष से या प्रशास के प्रति हैं के ही तुनी हिमें, माने स्वाद करते के प्रति हैं हैं हैं विस्ता है। रहामें सुन्ताका करते के प्रति हैं हैं हैं विस्ता है। रहामें सुन्ताका करते के स्वाद करते हैं हैं

मारी इदियोदे को कर बती है दार पर पर प्रांट उनके





दश] श्री पंचारितकाय टीका ।
देलनेमें होती हैं । ये सब पुहलद्रव्य हैं, पुरुष्ट्रव्य
भे हैं । जीव भी सर्वेत्र लोकमें हैं । मूर्ल एकेटिन
हमार्ग इंदियोंके गोजर नहीं हैं सब स्थानमें इस टीक्न
नीव और पुटल दो द्व्य हलनवजन करते हुए दिन्तर्य
हैं । इनकी उपादान या मूल शकिसे बार दार्थ हों हैं ।
ऐते हैं—चन्ना, टहरना, स्थानयाना और अवस्मानांधी
हरणक कार्यक नियं दल चार कार्योंके लिये सार्थ
यावरपक हमारी

पाइरक निमानहारणहरूप अन्य बार कमी करण परमानिक पर्याप अमुनीह परमानिक रूपमें तहारों तीनलेक ट्यापी अमुनीह परमाने रूपमें हैं रहने हैं उपमाने करणे सहारारी तीन लोक ट्यापी अपूर्ण हैं रूपमें हैं है अपान देनेने महारारी आहामदार हैं भी जान प्रिता है। अक्षणाओं के व्यवस्था सहाराम कार्य है हैं कि स्थाप अपूर्ण हैं है कि स्थाप की स्

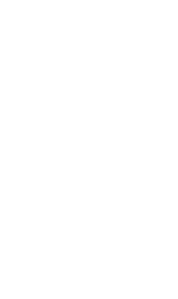
दन सन्द ये वोच आनड़ कि ग्रेन्य है। दन्ये कि ने र द्रव्य आतानद्वर्द ह ते के आनना क्या कृष्यागृहति हैं को बोगीन्द्रदेश बोगागाओं बहने हे— व्यद दश्यद के क्रियक्टिय क्या क्याय के समा कार्यों क्रियक्टिय के समित्रदेश क्या अर्थ क्याय क्रियक्टिय के सम्बद्ध स्वयं क्याय के अर्थिय व्यस स्वयं क्या बायद स्वयं क्याय साराय निनन्द स्वयं न्ये व्यवदात्वयों ने स्व

कीर तह पर में की हैं उनको भी सम्बन्ध पुरेष्ठ अपनी भी

कामीण दारीरके स्कंध हैं ये भी सब पुद्रवसे रचे हुए हैं वतर्व आत्माके निर्मल स्वमावसे भिन्न हैं। भी नगतमें रंग देखनेमें आने है, रस स्वारनेने ञाने हैं, ठंडा, गरम आदि स्पर्श छुनेमें थाने हैं, गंघ नानमेमें आती हैं ये चारों ही पुद्रलंके गुण हैं, आत्माके स्वना-बसे निलकुल भिल हैं, शब्द भी पुहलमई मावा वर्गणाकी पर्याप है अनुपुर आत्माके स्वभावने विस्तृत शिल है। आत्मा सी छाए-स्यान प्रदेशो, अमृनीह, शुद्ध बेतन्यमई व परमाधन्द स्वसूप है। यधिप भीव और पुरुतके संयोगमे भीवके गुण बिलकुल गुप्त सदस बीरें है तथापि नजण भदमें भिन्न ही झलकते हैं ! बास्तवमें पुरुषमई दार रोवे में नर भीव हमी तरह छिया है जिस तरह तिरोमें नेंच. बामनें अस्ति व बठोर देखने रस छिपा रहना है। त्री दन नीनोंको परचानने हे वे निलोंको नष्ट कर भीतरमे नेल निकाल सेने है. यामोको पिनकर अस्ति मारत कर लेते हैं. ईस्वेकी पेसकर स्थास निकास है ने हैं। इसा नगड़ भी भेद्यादानी जीव अपने : 1 शरीरमें तिहे तुर हाड आन्मारामको पहचानने हे वे ध्यानके भरम एक दिन इस क्षारासे अपने आत्माको बिलकुल प्रशा करनेने ह पान्यवर्गे मिनको है। मिने हुए प्रशासीम उनके जिल्ला स्वरूपक मान है वेही यांक वः प्रयोगमे एडको दुवरमे फिल दर मेंक है। भी अधितर्भा नहारात्र स साथिकपाउस कहते हैं-

पेया ज्ञानकृतान्दः वल्तरः सम्यक्ष्ययातेश्ति । विरुपद्राकृतस्यतन्त्रस्थातद्रश्चे विद्यापैथसि ॥ दशोक्तिममुरुतमस्तरिहतेदे दाप्पते सर्वदा । - विश्वचित्रधारित्रिण कस्य ते ॥ ।

५ मापुओंदी शनक्षी अभिन सम्बन्धरीनकारी



हानींग दारीरके रुहण है वे भी सब पुद्रहमें रचे हुए हैं अतर्य आत्माके निर्मेश स्वमानसे भिन्न हैं। भो नगतमें रंग देशनेर्म आने हैं रम स्वयन्त्रेष्ट आने हैं जुंक सम्मालन सुर्मा रुप्तेर्में साने हैं

दिवीय खण्ड ।

हैं, रस स्वादनेमें आने हैं, ठंडा, गरम आदि स्पर्श छुनेमें आने हैं, गंघ मानतेमें आती हैं ये चारों ही पुहलके गुण हैं, आत्माके खना-बमे निलकुत भिल हैं, शब्द भी पुद्रश्रमई भाषा वर्गणाकी पर्याप वे अन्य आस्माके स्वमायमे विलक्त भिन्न है। आत्मा सी अय-स्यान प्रदेशी, अमृतींक, शुद्ध वितयमई व परमानन्द स्वसूप है। यपपि भीव और पुरुलके संबोयसे भीवके गुण विलकुल गुप्त सदश होरहे हैं सथावि लजन भेडसे भिक्त ही झलकते हैं। बाहतरमें पुरत्यनई दार मेरि भीतर मीब हमी तरह छिल है निम तरह तिरोमें नेन, बोमने अस्ति य बद्रोर ईम्बर्ने रस छिपा रहता है। जो इन नीनोंको परचानने हैं वे तिनोंको नष्ट कर शीतरमें नेल निकाल सेने हैं। यामोक्षी पिसका अध्न बदट कर लेते हैं, ईम्बोक्षी पेमकर इधुरस निकान सेने हैं। इसी तरह भी भेद्विज्ञानी जीव अपने ही शरीरमें तिंउ हुए शुद्ध आत्मासमको पहचानने हैं वे ध्यानके बन्मे एक दिन इस दारोरमे अपने आत्माको विलक्त जुदा करलेने हैं। बाम्बदमें जिनही हो मिने हुए पदार्थीमें उनके भित्तर स्वरूपरा शन दे वेटी युक्ति या प्रयोगमे एकको नुबरेगे भिन्न 💶 सने दे। भी अभिनगति महाराज सामाविक्याटमें कहते हैं-येवां हानकृतानुद्वयस्तरः सम्यक्त्यवातेरिता । विस्पष्टोकतसर्वतत्वसामितदंधे विपापैधसि ॥ दशोशसिमनस्तमस्तिहतेई दोप्यते सर्वहा । माधर्षं रचपंति विश्वविताद्यारित्रिकः कस्य से इ ६५ भारार्थ-नित्र सापुओंदी शतरूपी अभि सप्यादर्गनरूपी



दामीन दारीरके स्क्रंब है वे भी सब पुट्टमें रवे हुए हैं अनग्य आत्माके निर्मेल स्वमावये थिल हैं। को समनमें रंग देखनेने भाने हैं, रस स्पादनेने जाने हैं, ठंटा, गरम बाढि स्वर्श छुनेने आहे हैं, गंप मानतेमें आनी है ये चारों ही पुरुवके गुज है, आत्माके छ ... पर्ने रिलकुल भिल हैं, धार्व भी पुटलमई भाषा वर्गणांशी प्रयाप है अनग्र आत्माके स्वभावमे विल्हुत भिन्न है। आत्मा सी अन स्यान भदेशी, अमृतींह, शुद्ध चनन्यतहे व वाबानन्द व्यस्प है। यद्यपि जीव और पुत्रलके संयोगमे जीवके गुण विन्दुल गुप्त सहस मोर्ग है सथापि लक्षण भेदने भिन्न ही शलकरी है। बारनपर पद्रममंडे दारीनिक भीतर मीब इसी तरह छिया है जिस तरह ति रोपें नेच. बांगमें आंग्न व बढ़ीर हैल्पें स्म दिया रहना है। मी इन नीनोंको परचानने है वे निर्जोदो वह दर भीनको नेव निदाय मेने ति, यायोशी विसुधा अञ्ज बहुट वह लेने हैं. हैसीओ चेमधा दशुरम निषाय सेने हैं। इसी तरह यो येदविशानी शीव अपने ही गरी।में नित्रे हुए शुद्र आत्यारामको पहचानने हैं दे ध्यानके अन्से एक दिन इस दारारमें अवने आत्माको बिलकुरू युश परनेते हैं। बान्त्रदर्भे मिनको हो मिने हुए वहाधीमें अनके मिलन स्वहाएक शान है वंडी मूक्त या प्रवीगमें लक्की दुवासे दिन्त का संते हैं। भी अंदिनग्रीन महाराम सामाविक्षाण्ये बहुते हैं -

को आंत्रमान त्रहास व्यावस्थाप स्टूटन है पीत होत्रहान्त्रहरूकत्यात स्वस्थनवायोरिता । विश्वपादनस्वतरकार्याद्वारिताचे विद्यार्थियांच इ वसार्याद्वारस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्य होत्यवि सर्वेदा स्टूटन सार्याद्वारस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्य वश्य से १००० साराये-प्यात्रस्यात्रस्यात्रस्य वश्य से १०००

[د.• श्री पैनाम्नहाप रीहा। पत्रतमे पेतित हो जातिक प्रधानमान है न किया ग्रास्ति पार्की

र्रोसन्ही न महिमादिह्य काम्य सहिमीशदि सन्दीकी समुग्नी रङ्गी करने से सिंदि के निवाह सबसे आजान होती नेपाधन नहीं हैं। है है स्पन्ति उनका भेत करण सहा ही पकारणान है देने उत्तर

मारित्रके पारनेकाचे मुनिसम किवको आधार्यकारी न हेर्सि । रंग तरह पुरुष आदि यांच द्रामः अभी हे हे हम क्षार्यः मुख्यतामे सीन गायाओंडि हाम बहुता स्थल पुण हुआ है

उत्पानिका-जिल्यने यश हिया हि सब मेध्यन मा मीनहा इरम्पत नहीं है सब भीवका स्टब्स क्या है ! इमडा उन

आवार्य दहने हैं--भरसमस्वमगंबमध्यनं चेहणागुणमस्र । नाण अलिगगहणं जीवमणिदिह संदानं ॥१३४॥

भरममञ्जूषार्थं सम्पन्धः चेत्रमागुणसञ्जदः । मानीचनिद्रप्रदेश भीत्रमनिद्धिगम्थान ॥ १३४ ॥

अन्ययमदित सामान्यार्थ-(नीवम्) इम नीवको (अरहम्)

रमगुण रहित, (अरूवम्) वर्णगुण रहित, (अगेथं) गंध गुणरहि

(भव्यत) सप्तगर, (असदं) सब्द पर्धाय रहित (चेदणा गुणर्) चेतनागुण सहित, (अलिंगमहण) इन्द्रियादि चिन्होंने नहीं प्रश्ने योग्य तथा (अणिहिद्रसंठाण) पुरुलमई हिसी विरोप माहार्ने रहित (भाग) भानी । विशेषार्थ-यह नीव न तो रसगुण सहित पुद्रल द्रव्य है, न रस गुण मात्र है न रसको ग्रहण करनेवाली पुद्रलमई निहा नामधी द्रव्य इंद्रियरूप है और न यह जिहा इंद्रियके हारा अपनेको व

दूपरीं हो रम ग्रहणके समान ग्रहण बोध्य वा जानने बोध्य है - अर्घान् नेसे निहाने रमदो जान सके हैं बेसे अल्लाको नहीं जान सर्क हैं और न यह आत्मा निश्चयनदमे द्वश्य इंदियके द्वारा स्वय स्परी नानता है। भावार्थ-निश्चयनवये आत्ना म्वयं विवा हिमीशी सटा-यताके स्वपर इटक्को माननेवाना है। इच्येन्ट्रिक हाम परीक्ष ज्ञान र्दै मी कर्षे बन्धरूप अशुद्ध विभाव अवन्याकी अपेकामें है। इसी ही मद्यार यह नीव रमके आस्वादको जाननेवानी शरीपराम रहप जी भार इतिहम हैं उस रूप भी निकायने नहीं दे तथा भैसे भारेंदिय है होता अपनेको या दूसकेको समका छान होता है चैसा आत्माफा शान नदीं होसक्ता है और न यह माबेदियके हारा ही निश्रयरे रसहा मान मैंबाला है सथा बह भीव सन्पूर्ण बदाधीहो सदण करने गते असंह पहरूप प्रशासन भी केवल्लान उन स्वरूप है इसलिये निध्यमें मद उस गंड शानकृष नहीं है को शानरमको आन्धादन करनेवाली मार्वेदियके हारा कार्यहरूप, रमशा शानमात्र रहप अपन होता है. वैसे ही यह आत्मा अपनी शानशक्ति रसको मानला है परन्तु उस रम रूप जेवने तन्मय नहीं होता है। इत्यादि हेनुओंने यह मीब अन्त है । हमी ही तरह यह कीव वर्ण, राष, शब्द, क्यूरीसे रदित है। इसमें भी समर्था तरह सर्व व्याम्बान यसकता योग्य है। सवा तमें कीच, मान, माद' नामक बनुष्टव, सिक्शन्य व नाम दिसे परिणमन करनेवाले तथ विभेन आत्मास्कारणी शामिती रहित त्रीवाको प्रमाण झञ्चले हैं को उनको यह परशास्त्रवहाए स.व. नही राज्यण है इपनिये यह अ यत है। यह मीब निश्रदमें समब त्रम आदि छ इपंतरक मन्द्रान् या बाह्यपेसे रहिन अध्यक्ष

९२] श्री पंत्रान्तिकाय टीका ।

ममननुष्यः आदि छः संस्थान नही है। इनिर्धि यह भी सम्यान रहिन है तथा निष्ठे अगुद्ध आप्ना यह आनुसन सकी परेशा नानके हास वस्त्रास्त्रयमे "दमीनगढ् परानान किस सन् है निम तरह पूमसे अभिन्ना अनुसान करने हैं। निर्म यह गुड्डस्थ यपि समादि विकासीमें रहित स्वर्धदेशन जानमे उपसन्तरः

मई अताकुलतामें मले प्रकार स्थित सच्चे सुमामृत जनते पूर्ण कलग्रजी तरह मरे हुए परम बोगियों को प्रयक्ष है तगापि जो देने

प्रकाशमान परमात्मकाप है इसिनये इसमें पुरुषकों ह उदयमें सब

योगी नहीं हैं उनको मत्यस अनुसबनें नहीं आता है इमिन्टे बर् भीव अलिंग ग्रहण है तथा यह जीन के बताग़न माँ गुड़ बेनना हुने सहित है इसिन्टे बेतनान्द्रण है जिसा कि नीचेंके को हमें बड़ा है— यरसार्गीण बराबसाचि विविध्यक्ष्मणि तेनां गुज्याते । पर्यापानीय कुमाबिक्यात सबेब हस्त सर्वमा ॥ स्रानीते गुज्यत्विष्ठम्नानाः सर्वेब हस्त स्वत्वतः । सर्वेबाय जिनेश्याय महते बोसाय तस्त्री नमा ॥ भावाय-नो तर्वे बर अचर नानापकार द्रव्योंको, उने

युणोंहो, उनकी भृत, भविष्य व वर्तमान सर्व वर्धायों हो सर्व प्रधारी सदा ही एकप्राथ हरएक क्षण जानता रहता है यह सबंज कहा जाता है। उन सबंज, जिनेश्वर तथा गहान बीर मयवानको नमस्कार हो। हे शिष्य ! उत्पर कहे प्रकार गुणोंसे विशित्र शुरू जीव पही थंहो जातो, यह आब है।

थंडो मानी, यह माव है। भाषाध-इस गाथामें आचार्यने जीवडा बास्तविक स्वहर्य बता दिया है। उत्पर्क व्याख्यानसे यह स्पट्ट है कि यह जीव शुद्ध ज्ञान चेतनागई तथा कमूर्लोंड होनेसे डिसी भी पुरस्मर्द ¹ स्वमंबेदनगोचर हैं। भी झानी भीव अपने उपयोगको सर्व प्रेय पदार्थीने हटाकर व राग, हेव, मोहके विकल्पोंसे शुरुव कर व एकाम ि होचर अपनेको की देखता है उसी ही ज्ञानी महात्माको भावश्रत-शनके द्वारा इम ब्यारमाध्य प्रत्यक्ष होता है। साधारण व्यक्ति दास्त्रेकि द्वारा एक संकेत मात्र कारमाक्षी उसी तरह मानते हैं निस सरह किमी परदेशमें पैदा होनेवाने पालका शान विमोक्ते दाव्हेंकि द्वारा कराया गाये । वह उस फलकी मिद्रता आदिके गुणोंकी सम्म तो जाता है पत्तु उसकी उस फलके च में बिना या देगे बिना उनका सम्बान्याद व सच्या स्वरूप नदी मान्यम होसका है। अब धन उसके पास कायगा और बह चाराता सब ही वह उनका सच्चा बीच मात करेगा। इसी ही सरह मात्र धाराके झानसे अरमाद्या झान नहीं होता है । नव उपयो-गत्री थिर काके पुत्र, पुत्र आतमसाहायकी विचारा नागगा तव बहुन कालके अध्यामने कर उपयोग उस सुरत हत्यको पकड़ लेगा तर उमय अनुभव होगा । उसी समय कारमाधा स्वरूप स्वसंबद्धन प्रत्यक्ष होया । साकान प्रत्यक्ष ज्ञान आत्माका मियाय सब्दाहे और दियो करवल गहारमाथी भी मही-डीसका केन्यांत भेदजानके द्वारा सम्माद्य शुद्ध न्वरूप रहत् केर्स्स में ड्रॉवेस्स विषय होमाना है, इमीको कानुमय करने हें, इसीको स्वरूट-दायाण चारित्र दहते हैं। यही ज्ञान योगियोके निये अभेद-शतत्रयमई मोक्षमार्ग है। बड़ी वह नहात है जिसकर चड़कर कर्नेनंधगई संगारको या कर यह शीव हाइ व्यसावकी पासिन्द्रप

५४] श्री पंचास्तिकाय टीका ।

मोक्षमावको पा छेता है। यहां आचार्यने इस आत्मादो संड ज्ञानसे रहित असंड एक सामान्य ज्ञानाकार भावका ही विषय माना है। विना मनन किये तथा परपदार्थीसे मोह हटें

आत्माका साक्षात्कार नहीं होता है। जैसे शूठे व सच्चे रत्नकी परि-चान धारबार परीक्षाके अन्याससे ऐसी डड़ होजाती है कि फिर बह परीक्षक देखने मात्र ही सच्चे शूठे रत्नको जसाका तेसा सन-क्ष तेता है उसी ताह, पुत: पुत: अन्यासको हरुताह है साक्षात्कार

क्ष लेता है उसी तरह पुनः पुनः अम्पातकी हदवासे ही जातमध जाम होता है। नेता कि त्वामी अमृतवन्द्रने .समयसारकव्याने कहा है:— यदि कथमपि चाराचाहिना बोचनेत्र । ध्रवसप्रसम्मानः सुद्धमारमानसास्ते ॥

भुवपुरकममानः सुद्धारमानमास्त ॥ सद्यनुरवदादाः रोजमानत्यानमात्या । परपरिजितिरोधाच्छुद्धभेवाग्युपैत ॥ ३६ ॥ भावांपै-निम तरह बने लगातार भेदज्ञानके अम्याप्ते तमको निम्नपने गढ कारमाड अनमव होमाता है वह आसा

भाषांपं-निम तरह बने छमातार भेदजानके अम्यासर्गे निमाने निश्चयते हुन्द कात्माका अनुभव होनाता है वह ज्ञात्मा मकासामान आरमाके उपवनमें पहुंचकर पर पदार्थही ओर परिगतिके रक मानेसे हुन्द स्थमायको ही मात कर लेता है। श्री योगीन्द्रदेव योगासार्गे करते हैं—

९७ तत्र इत्यि रहिउ मणचक्ताय ति सुदि । अरदाअप्प मुणेह तुनुं स्ह पायइ सिवसिदि ॥ ८५ ॥ भागार्थ-न गग वचन काय शुद्ध कारे इदिवाँके विवयंति रहित हो व अंग्लपना पाका अन्ति ही अपने आत्माको मनत्

कर तो न श्रीम दी मोशकी सिद्धि मात कर सकेगा ! इस तस्ह मेद मायनके लिये सर्व मकारसे अहण करने



्द] श्री पंचास्तिकाय टीका । निध्यादर्शन, निध्याद्वान और निध्याचारित्र येतीन हैं। सुस महरू

करने योग्य तस्त है, उसका कारण मोल है, मोक्षके कारण मंतर

और निर्मेश दो पदार्थ हैं । इन दोनोंके कारण सम्यन्दर्शन, सम्बन् ग्जान और सम्पक्तारिज हैं । इस सरह पूर्वमें वहे हुए नीर अँग अनीव दी पदार्थोंको लेकर आगे कहने बोग्य पुण्य, पाप आदि सान पदार्थीके साथ दोनों मिलकर समुदायसे नी पदार्थ होनाते हैं। इम तरह नव पदार्थीकी स्थापनाचा मचरण समान हुआ ! उत्पानिका-इसके आगे जो किसी अपेदासे जीव और पुरुषको परिणमन शक्तिपारी क्ट्कर उनका संयोग भार मिछ किया गया है यही संयोग अभे कहने बोन्य पुण्य, पाप आदि मात पड़ा-भींदा कारण या बीन है ऐसा जानना बाहिये। इनहीं वीन गाधाओं में बताने हैं---जो राखु संसारत्यो जीवो नवो इ होदि परिणामी । परिणामादी कम्म कम्मादी होति गदिशु गरी ॥१३६॥ गरिमधिगदस्पदेशे देशही इंदियाणि जावेते । तेहिं द विमयन्गरणं नशी गागी व दोसी वा ॥१३७॥ नायदि जीवस्मेवं भावी संमारचप्रह्यालम्बि । इटि जियबरेटि मणिटी भणादिणियणी मणि गणी बीं।

र नद् नमा संबो जीवनात्रानु जाति द्वाराम्य पर्याण्यातमा रक्षणे । दि तरितृ तरि ॥ १ ६ । सार्वाराण्या देशे देहस्मियारी जाए । देला विश्वस्थात जो सभी सा देशे सा ॥ १०० ॥ जाति जीवन्ये आप माम्यद्वाराणे । देशि जिनसेनेविशोजनातिवार स्वित्ने सो ॥ १०० ।

٠.,



केरे हुए समेद या निश्चय राज्यवर्ने स्टर्नेको अमर्गर्य होता है नेव निरोप पर्यात्य स्वस्त्य धार्टन् य सिदा तथा उनके आरायक

भाषायें, ट्या-पाय व सायु इनकी यूर्ण व विशेष भागि काला है मिमने वह संसारक सायावे काला व स्वयंदारी ग्रुमिक वार्य मीचेका पहने आदि विशेष वुष्य करियोंकी विशा क्ष्योंक विशेष मिंका परियोंका के साय है इस उर्दावीका वंध मिला है इस उर्दावीका वंध मिला है इस सहस्रवे काला है विशा काली मीका स्वयंद मिला, व भीज दे विशा काली मिला काला है इस साम काला है इस साम काला है इस साम काला है इस साम काला काला है इस साम काला काला काला है इस साम काला काला काला काला है है काला भीज काला काला काला काला काला काला है है काला भीज काला विशा साम काला है। इस साम काला काला है इस साम काला है। इस साम काला है इस साम काला है। इस साम काला है इस साम काला है। इस साम काला है। इस काला काला है। इस काला काला है। इस काला है। इस काला है। इस काला ही काला है। इस का

२००] श्री पंचास्तिकाय टीका । अनुसार किसी अन्य शरीरको प्राप्त कर लेता है । वहां भी व

रागदेग रूप किया करता रहता है। इस सरह यह अज्ञानी में आत्मजानको न पाकर इस संसारका चक्रर लगाया करता है। में अपने आयोगे पाप पुण्यका आगद व वंध करता हुआ उन मी में पुग्य य कासद व वंध पदार्थका कर्ता होजाता है। जन मिनो वर्ध भीपको भेदजानके वजने सम्बन्दर्शनका लाग होता है सर १९ १९ पाप, कारद , य वंधको लगा योग्य जानता है इसने इनका पुण्यने

कर्ती न दोना दुआ मोदामार्गमें आठाइ होनेके कारण तथा भीशों गाइ रुचिक कारण बहुतमें कमोठी निकेश करता है व गंभगों कारणीमून कमोडा आमश्च न करके स्वर करना है। ६५ गंभ मंदर व निकेश बदायंका करते होना है। बदी सम्बन्धीं करें तब मदामुनि हो व मोदा साधन योग्य सेदननादि साममें भागों जन्दछ तम करना है तब गुणक्यानोंक सामेंगे शाहकोजीश आरों

देण्डर चार पानिया कमीं हा नाशकर के उनी पकाल चार आधिय कनों हा भी नाशकर भोश बात करनेता है। सद बद मोश पर की करी होता है। पड़ा आसापन बढ़ी बताया है कि सद की भवने ने बीत हा पुरुषण्य आदि साल पदामों हो को है। सम्बन्ध समजन अनेक सकट व बताया होती है वहीं देशी हैं। करी दिन बदा होना है कि स्टूट के बताया हो हो हैं।

स्मार्थ प्रमाण बनेत भेटर व बावार होती है बहिद्रा हिंदी हैं। वे तो तहा होता है हिन्दु है वह दिख्य है वह देखें व भीड़ करन बन तह कारत वायहर हूं साई अहारमानी है हैं करते हैं। इमेरिन विश्व आपो चार्चा दिखा है है वह केटी की की की कार्य महिद्या बन्त कर, दिखा स्थापनी मुख्या की स्वास्तानकारी सामग्र कार्य सुरुष कारत स्थापन

समय बहुत अन्य है उतको सफ्छ को, मरा न सतावे उसके पर्डे ही स्पष्टित कर लेना योग्य है । सारसमुख्यमें कहा है:-यावत् स्वास्टवं जरोरस्य वावचेन्द्रियसम्बद्धः । सायपुक्त तथः कर्तुं यार्थक्ये केशल शमः ॥ १७ ॥ प्रमाणे मनिस्तावधावदायुर्देड तव । मायुक्तमंति संक्षोरी पद्मार्ड हि करित्यसि ॥ ६० ॥ भावार्थ-भवतक शरीरमें तंतुरस्ती है व मवनक इंदियों में यक्ति मीजूद है सचनक सप कर लेना बीम्य है। वृद्धायस्थामें मात परिश्रम है तर तक्डी सिद्धि कटिन है। नक्तक आयु टर्ह है तमतक धर्मशायमें मुद्धि करनी योग्य है। जब आयु कर्म क्षम हो नायगा सब सू बया करेगा है इस तरह नव पदार्थीके बतानेवाने दूसरे महाभिकारके

मध्यने पुत्रव पाप आदि सात पदार्थ और और मुद्रवके संयोग तथा वियोगक्रप परिणतिमे उत्पन्न हुए हैं इम क्यवधी मुख्यता करके नीन गाथाओंके द्वारा बीबा अंतर अधिकार समाप्त हुआ है पीडिका-मागे पुण्य व पापके अधिकारमें चार शाबाएं हैं। रन बार गायाओंक मध्यमें बहले यह कबन है कि भी भाव पुरुष या माथ पाएके योग्य भाव होने हैं वे परमातन्द नई वन्द्रव्दरान्त्रन शुद्ध भारमासे भित्र है इस सूचनाकी सुरवताने ''बोटो ब शहर्रहार्यन' स्यादि गाभा एव एवं है निर ६० व्याभ्यानकी हुण्डलई है गुद्ध बुद्ध एक स्वभावरूप श्रद्ध ज नाये भिक्त द राज जाता द द्रेज्य या भावरूप प्राथ नथा ५ए 🐣 ' शहरहीरूप्रा 🛫 🗝

मुत्र एक है। कि नैवाविध्य न्यों निराष्ट्रक कर्म 🗝 🗝 समा पाप दोनोंडो मुनींड समर्थन दाने हुए किए हुन्स करें



र । उसी ही जातमार्क जाना प्रकार चारिज मोहण्य उदय होने
पूर न निश्चय नीतमार चारिज्य होता है जीर न उन्दर्स प्रज आदिके
सिराम होते हैं ऐसे नीयके भीतर नो दृष्ट पराधीम भीतिनार
से सार है और प्रजिप्त च्हायोंने जातिक मान मो हैन हैं। उस है
गेंद्र के मंद्र उदयमें मो मनही विद्युद्धि होना उसरो थिसवसाइ
कहते हैं। यहां मोह ब हेर हथा वियवाहिम अगुम्साम मो कागुम
पार है तथा दोन प्रजा हत तीन जाति करण मो गुम साम वा
निकास कामदार होगा है सो गुम मान है, यह द्वायक अभिभाव है।
मानार्थ-दूस मानांन कामधीन मान पार कीर भाव पुरुषमा

हरूप बनाया है जो कामने हरुवचार और हव्य-प्रश्यके वंचेत निभिन्न हैं । मिध्यान्य भाव बहा प्रश्न भाव पाप है जिसके कारण [म भावक पारी जीवमें पर्याय वृद्धि तीली है निसरी यह छरीरमें और झरीर सम्बन्धी इदियोंक विषयोंथ और उनके महकारी पदार्थींस अतिराय कृत्वे मीत होता है। और अपने सामारिक प्रयोगनके मिढिके लिये अनेव अन्याय रूप एणवं में भी बास सेव, हैं। मिलिये सबै वावनाबंदि। सन व १० १ र बादशेनहरूप भाव पार दें। इसर्रोह जिल्लिमें कुल्लाफ ें , य स्थित करा है। हैपकी प्रयुक्ति होती है किसस 🗸 🗥 । पने हार पर घोटेन ब्र गग तथा सनिव्य प्रश्नीये लेख के क्वान है। वसी ५ कि या प्रश्ने भी सह क्रियात्व रिंग अहं भागन्थन । चनवेग असे दन पता कर राज परि कार भाग भाग होता है जिसके पर र र पुण्यस्य भी होजाना है का पुण्य के बायन है बरू कर यह प्राय भाव परम्परा पापका ही काम्या नेता है इन्हेंटिये आनायोंने



भीतरने यह ब्यानांविक ध्यानता होती हैं तब ही विद्यापत् ब्याना हैं । यह ध्यानन नेतनेता सावके घटने और विद्युद्ध प्राव

नार के प्राप्त कर ने नार के स्वरंग आर्थिय है। की किसी कर करा आर्थिय कर के स्वरंग कर के स्वरंग कर किसी किसी के स्वरंग कर के से के से किसी के स्वरंग के से किसी के से किसी के से किसी के से किसी के सिक्त के सिक्त

ा न्यापना र पार व र पदा क्याव्या पदा हाथ । वर्ष विधा सम्बद्धे केलंको बारून्य होजात है उसे ही बिद्यमाद ब्रह्में है । योपदार व सेवापने वट्ट विज्ञमाद सदस्य होता है इसीने पोपदालो एक्य ब्रुप्त है।

नोरहानको एउथ बटा है। समझी भी पात व पुरुष दो ऋष बटा है। मही अपरास्त

रात है अवर्षित करां विश्वीव व कारों के पुट करने का रात है, वह पारद्राय नाम है। तथा नहीं प्रवस्त नाम है अवर्षित नहीं अन्तरित, प्रतायन, तार, जनस्त्रत, प्राप्तुम्न निवास आदिका भाव है र पुन्यक्त नाम है। जातीको वह मप्तान भीनों की हि है यह पेपान नेतु मप्तपूर्ण और जाताय दोनों ही प्रवास भीन काराने योग है। एक तुष्त नाम हो जहां करने योग है जी देखा है जी सेवा हो अप

मनन्त्रने मनवमाः क्षण्याने कहा है-सन्यसनम्बद्धिः समस्त्रमधि स्टब्सीब मोसार्थिता । सन्यस्त्रे सर्वित तत्र का हिन्त कथा वुष्पस्य पायस्य सा ॥

ाः कर्मामतिबद्धमुद्धवरसः झोनं बन्धं धावति ह रूक- ह

२०४] श्री पेनासितहाय टीका । परंचात बीचे अविस्त सम्बन्धि गुक्त्थानसे पहले नहीं माता है, नी भी विरुपन्तरी साधोदनीय,देवायु, उपयोज आरि दुन्यस्मीध

नंप करमाना है इसिपी उस द्वाम सुक्यबंधित है सुद्ध्य आवस्पका कीना उपने सेमब है। वैनेदिव सिनी क्षित्रके सेदार की ⊞ही गई मारी है जिनमें पीत, पद्मा और हुन्द्वा जुझ सेदार्ग हैं। इनके परिवासीमें अधिकपर पुरस क्षमेश बंध हो वाही व स्वस्मे सापक्षका

परितामीमें अधिकार पूर्व व्यवकार वेश होता है। यक्त में बादकोड़ी उदय अधिक अकुबाहर कारण है जब हि. पुरुष्ठ कि उदस्कुछ देर आहु रुपके बारनेड़ा कारण है—बईसान कारण उदस्क आहर बादकर्म एवं जुलाहाई है। तब पुरुष्ठमें सुराहाई है। यसि बादकर्म एवं जुलाहाई है। तब पुरुष्ठमें सुराहाई है। यसि

हो तरक्त पृथ्य करीजा उद्देश सम्मानशि है तथा श्रीहर्त योग्य सम्बद्धी (रिज्येन्स भी कारण है। इसीपिये पुत्रः याह रुपानि वै इहीपदेशमें बपुत हो कारण कहा है— बर्ग सर्वे वर्ष देशे कालतेदेश सपर्का। सहायम्बरम्पदेशीह सनिवालयोगकीय । या ॥ ३ ॥

कारणार प्रयानिक सामार रहण सामार के के का सामार प्रयान के कि सामार प्रयान कि सामार प्रयान के स्था के स्था के स्था कर प्रयान के स्था के स्था कर

ैं है रहमोत्री जाने ही शहू में प्रतिशते ही पूर्व हैं हैं। एक साम जुमेरेके जुमेर मोड़े स्टूरिके बहुब मार्ग्य मार परार्थ बहा गया है। उसी साह बदायि निश्चयनशरी ये द्रव्य पुष्प और इटब पाप बनेवर्गणांक बोल्य पुरुठ विटले पेटा हुए हैं तथारि व्युप्पनित व्यम्पस्त व्यवहारमध्ये जीवकेश्चार तथा अग्नम परिणामोंके निमित्तमे हुए हैं। इनमें साता बेदनीय आदि द्रव्य पर्छतिकप व अमाता बेदनीय आदि द्रव्य पापक्य पुरुठ दिइ है। हमदीको द्रव्यपुष्प और द्रव्यपाग च्हार्य बहुने हैं। बहु सुनक्ष

भाषार्थ-भीवके टीव इयाय हृत मावको माव पाप तथा मन्दद्दराय रूप माय पुण्य बहते हैं इनके निमित्तसे अपातिया हमींमें दो भेद होजाने हैं। जब पाप आब होता है सब असाताः रेदनीय, बहुभ आगु, जज़्भ नाम, नीच गोत्रका बन्ध होता है। माता बैदनीय आदिहा र्यंत्र नहीं होता है। जब पुण्य भाव होता रे तब सातायेदनीय, शुभ आयु, शुभ बाम व उच्च गोत्रका बंध ोता है, अमातादिका नहीं होता । दिन्तु घातिया क्सीका बन्ध रण्ड क्याय सहित भावमें होगा-माड पुण्यमें भी होगा, साव गपमें भी होगा । यद्यपि इन चार पातिया हमोनो भी दृष्य पापने ींतर ही गिनाया है बयोटि ये आत्माके सुख्य गुणोक्षो विकारी त देने हैं तथापि जब मात्र पुत्रय रूप मदद्वपायके परिणाम होने हैं य इन चातिया कर्नोमें स्थिति और अनुमाग कम पहला है और य भाव पापरूप तीज ध्याब होता है तब इन पातिवादमीमें भी ति व अनुभाग अधिक पटना है। इसोलिये सामान्य वचन पद दिया अता है कि श्रम भावते पुत्रम व अल्भ भावने त्थ शेता है।



हिनीय सन्द्र र

माब बसाये बहा गया है। हमी तरह बयावि विश्ववनयों ये हम्म पुष्प और हम्ब कर बर्गवरेलाके बोग्य बुज्य विज्ञी हंगा हुए हैं तथारि अधुववनित सम्बद्धन व्यवस्थानयमें वीवके हुम तथा अस्था प्रशिक्त के प्रमान हें ही। हम्में माना वेदनीव आदि हम्म मिट किस्स के प्रमाना बेदनीय आदि हम्म बारहर पुरस्त कि है। हरें होंगे ह्यूब्यूप्य और हम्बयार बसाये बहने हैं। यह बुचका भाव है।

भारार्थ-मीर्वेड हॅं व क्याय रहन सादही भाव पाप तथा मन्द्रदेशय अप शाद बुग्ध इटने हैं इनके निवित्तमे अपातिया दमीने को भेट होजाने हैं। अब दाए बाद होता है तब अमाता पेदनीय, अशुभ आयु, अग्रभ नाम, नीच गीत्रका सन्य होता है। माना बैटनीय आदिका देव नहीं होता है। जब पुष्य भाव होता है तब साटारेडनीय, टान जायु, जुम बाम य उच्च गीत्रका बध होता है, अमानादिका नहीं होता । किन्तु पातिया समीका बन्ध हरएक क्याय सहित अवने होगा भाव वृण्यमें भी होगा, भाव पापमें भी होगा । यद्यवि इन बार पातिया इसीको भी द्रवस पापेक भीतर ही शिकाया है २३-७२ ये आत्मांक सम्बय गुणोंको विकारी इन देने हैं संधारि जब 🚅 वन्य रूप ध्दृक्षायक परिवास होने हैं नेप इस पानिया कर्नीमें स्थित और अनुसाग क्या पहता है। जाँर मह भाव पाष्ट्रप नीव १५ व होता है तब हम पार्तियापमीं मी स्थिति व अनुसाय अिक परता है। इसी^{रि}ये सःमान्य क्चन ऐसा बद दिया जाता है कि शुन भावने पुण्य व अशुन भावने पाव वथ होता है।



 साम तील्डी क्य पहुनी हैं । इस क्य क्य क्यूड़ होती हैं अब वर्ष की रियोंने क्या व रोप मीदा कागुकी दिवनि स्वित बदाना है। अनुवान भी हरते । इदयार्थी कवित यहेगा गर दि गई आपूर्व दय पहेगा जिसे पार्टीके बरमतेनी हमाहे हा चानुने हुए भी हुए बार्टीकी से सेरी भी। बर फार्ट सं रेंच कुलने बहुब, ईस्सी बोल, सीवर्षे सहा ही भाषात संघश निर्म एप्टेंब याद खॉन्ट हो हमने व नाइनेपर भी मानी भाष आप होतह है। इन यह जाएगा ३ चुम्बक चाराज नगगामी ही मीतेची धार्ताच मेला १ मुर्जिक दशक्षी बमाप बबब अगाप स्थिते, धारप्रशा रहा। विरुद्ध मादाल । इत्यादि सामनी स्वीद पहासीद सदीत क हिरीकते किसे बारेक अक्षाके परिवास शीरे हैं वैसे भोदीरे न चार्त हम में जिस तरह नीबेंकि परियास दीरेंसे उन ही बादीश विक्रिय पावन स्थव ही बर्व पर्याणाण आवर पाप दा मुध्य ब्राप थय लाको , यह बन्दुबा व्यमाय है । इस यदि पाप बायमें बचना चार्ट हैं तो हमें त'ता वश्य छात्र शिवादिके बार्य सं करते का भी कीर वर्ष हम पुण्यका लग पाना चक्रम १ २ १८ २ २,३३०१, प्रथ ४१०, प्रवास, परीर बार्मा व च चरन च । तथा । द्वाप्रयोगशा भी तथा सामग्र सम्बद्धाः तकः चार्तः । चार्यः विष्युना, स्वाध्यापः । कामाध्यक इस एक न्या राज्य न वा वाक्षी प्रात्ये । बसीका ना मा माना हात्र राजा विकास हा स्थापन र कर है। १० ०० र प्रवस्थान है है हम १० QUALITY NAMES OF A

परिणामोदः अनुस्तरे हे स्वती -

११०] श्री पंचारितकाय टीका । उत्दक्षत्वनीने समयपारमें कहा है-

पुराणि परिय जेसि बङ्गवसाणाणि एव प्रावृत्ति । ने समुद्रेण सुद्रेण य कसीण मुन्नी च निर्द्रात ॥२८७ ७ भावार्थ-चे सुर्वे रागाडेषाटि आत्र निर्देश नहीं होने हैं वे

मुनि ग्रुभ या अशुभ कर्तीमे नहीं बंधने हैं। और सी कहा है –

ज कुणिद मायमादा कला ना देवि नस्स मायम्म । कम्मसं परिणमदे तक्षिमयं येगगलं दम्बं ॥ ६८॥

भावार्थ-जिस शुभ या अञ्चल शावको यह आग्मा करता उम ही भावका यह आरमा कम्मेबान्य होना है १८म ही नावका

हैं उस ही भावका यह आत्मा कम्मेबाला होता है । इस ही नावका निभिन्न पाकर पुटल दृश्य म्बय कमेक्टर बन्ध नाता है, जेसा

जानकर देवसे युक्त होनेके किये स्वानुभवका निरन्तर अन्यास -करना योग्य हैं।

इस तरह शुद्ध बृद्ध एक स्वमावरूप शुद्धात्माने भिन्न जो त्यागने योग्य दृश्य या आदरूप पुण्य तथा पाव हैं उनहा व्याप्यान करने हुए एक मृत्रने दुमग स्थल ममात हुआ ।

उत्थानिका-आगं यह सिद्ध काने हैं कि इन द्रायकर्मीर्षे सुनीक्षता है-जन्हा कम्मम्मफल विसये फामेहिं सुजदे णियदे। जीदेण मुद्दे दुक्त्वं नम्हा कम्माणि सुन्ताणि ॥१४९॥

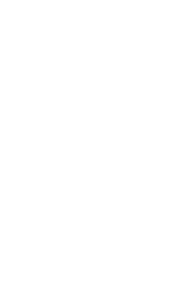
जन्हा कम्मन्मफुल विसये फामेहि धुनदे पिपदे । जीरेप मुद्दे दुक्तं नम्हा कम्पाणि मुत्तापि ॥१४१॥ स्मानमंण कत्र त्रिया स्थानंत्रते तिका । जीते मुख्य स्थानमानामानि कृतीय ॥ १४१॥ अन्यस्सहित सामान्यां-(नस्हा) स्थीकि (जीवेप) इस

जीवके द्वारा (कम्मस्सफल) कमीका फल, (सुह दुवसं) सुख और

हु.स् (विसर्व) जो बांब इंद्रियोंडा विषय क्रष्ठ हें तो (जिन्दं) निश्चितक्रपसे (फासेहिं) स्वयंत्रादि इदियोक्षे निवितये (धुनदे) भोगा जाता है (तप्हा) इसस्यि (बम्बाणि) उत्त्यवर्ध (धुसाणि) सुर्मोक हैं [

विशेषाय-नो श्रीव दिवरोंसे रहित परमारमाशी भावनारी पैता होनेवाले सुसमई अवृतके सादसे गिरा हुआ है. यह भीव उद्यमें आहर थात हुए दर्शीहा एक भोगता है। यह कमेपन मृतींक पंत्र इंदिवेकि विषयका है तथा हुए विषादका सुन्ददुःरामई है। यदि गुद्ध निश्चबनवसे अमृतीं इ है नवापि अगुद्ध निश्चयनवसे पामार्थेक्स व अमुर्जीक परम आन्हादमई रूक्षणघारी निश्चयपुत्रके विपरीत होनेके कारणमें यह विषयों हा सुरत दुःरत हुए विपादराय मुनीक है क्योंकि निश्चयपूर्वक व्यत्नेनादि यांच इंद्रियोंसे रहित अग्र-नींद्र शह आरम शत्वमे दिवशेत जो स्वर्शनादि मुनींद्र इदिये हैं उनके द्वारा ही भीगा भागा है अन्यद कमें भिनका ये मूल दान कार्व है वे भी मुनीक है स्वी । बस्बके सदश ही कार्य होता है। मुनीह दार्यस्य अनुसानमें उनेहा करण भी मुनीह जाना माना है। पानी इडिनोस स्पन्ना है । य सुनीक है। तथा है सुनीक इतियोगे नेते अति है जमें म तुम होता है वह भी स्वय मुर्नेहर्द । इस तहर वर्षको चुनार मिद्ध विद्यासका. यह सत्रका अर्थ है।

भाराधि-इम रूक्षा कीर मुख्य रेग्हासको क्रांबरको सुर्वोक या पीट्रांक्ड वक्षा पुट्ट ट बक्षा कथे कि होत्या । । क्षामेण बंगणा बनन पुट्ट समाणुकोक क्या है । न सबि मुख्य



सूर्वेपर बारत आमानेसे व एक मुर्तिके द्रपर पद्मा पड मानेसे हम मूर्य या मृतिको स्पष्ट नहीं देख सके 🗓 उसी तरह शानावाण ब दरीनायाणके उद्यसे हम पूर्ण दर्शन झान नहीं दर राती है, जिनना उनका समोवशम या चडाव है टक्का ही देख ७० मके है। मर्ग-रमें प्रक्ति होनेपर भी हिमी चोरही या सिटादि पशुओं हो देखहर दायरता आजानी है, बीर्य निर्देश होताता है उसी साह अस्तराय क्रमें आरमक्ष्मको पराक्ष है। नेसे. भाग, चरश, धराब आहि महीकि बीनेसे बाद बिगट माना है हमी सरह बीदके उर्थमें बाद विषरीत क्षाम करता है। यदि रोदनीय कर्षका थेव क्रोपककाव मुर्भीद व होता हो। उत्तक अन्यति धारीरपर उपद्या प्राप्त न दिरामा । सम्मनी बेहा विगडमामा, ल ल व्य- हो मादा, दारीरहा क्षेत्रा से सब क्रीवके उदयके चिह है। नेमें नारतिह परमाणुओं स अनुद क गुपाकी दैरादर वेदा करतेना है देते ही नरवज्ञानी गुराधी भेठा देशवर यह अनुनात बन्धेने : १० १५३१ जात्मारी होतेप. ००. कामनाच नार्याः । य दशीर वस स्थान und Citate ein . Gen fiet in wie fi सोज्य करू हे ५ व ## 18. 24 R W - - -FRIT HIRA NO €134 2 + 11-1 militant beier mein

47. 4 a 4 6 6 6 6 6 ela é la a goa ca a १९४] भी पैस सिकाय दीका। भग्नीकरी दशस्यो दशस्य काम को ब्रुटिक है जेना नद्रस्य

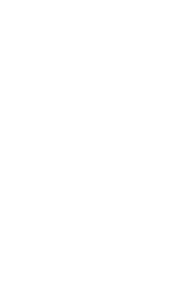
सामने स्वीतकविक उदयने ही भोगों बोग्या गारी उर्विके

श्या भाग है।

हार निरामे बसाये विश्वी हैं। ये बहारे मृहिंह हैं। उसे उनके स्वाम को मृहिंह है। ये शिवा मृहिंह महीं है उसीये उसके स्वाम की मृहिंह है। ये शिवा मृहिंह महीं है उसिये उसके स्वाम की मृहिंह है। यूगांड विश्वित रोतेष्य सरियों की के लेड़ से सुमार बहारा बहारा बहारा पर होंगे की है। यूगांड विश्वी है कि मृहिंह है। उसिये उसके सुमार उसकी बार दिख्यों है। विश्वी है कि मृहिंह है उसिये उनके सुमार इस सुमार की सुमार

सनादिक यमे अमार्गेक होकर भी मूर्जीको मनाव रहती होरहा है वर्षों के होई भी अपनाका बहेना कर्मनय पहिल हाक नहीं है इपनिये इस नुनार अपनावर मुराककर्नीका असर पहला है। मिक्क सराजन पान्न अमुनाक है उनके बाम अर्थन कर्मनरीमाएँ उनमें तही ही उन्हें अर्थन के अर्थन अर्थन कर्मनरीमाएँ उनमें सुरा भा तहा ही इस नन्नी है। पुरस्तीम बहुत दानि होती है—[कर्मा] अर्थन अर्थन प्रमाणके पुरस्त मनावर्षे असेक अरहान कर्म सम्मादन अर्थन प्रमाणके ही हास होता है । विसस पर्यापने स्वत्तानी वानिक हाने प्रमाणके ही हास होता है । विसस पर्यापने अरुपुणी दानिक हाने प्रमाणके ही हास होता है । विसस पर्यापने

٠.,



٠.,



वरहें इन सेंत्रम न कार्मण दारीरोड़ी रचना बनी रहती है-उनमेसे

पुगते पुरूल झड़ने व नए मिलने रहते हैं। पुराने कर्म अपनी स्थित पूर्ग कर करते झड़ने माने नए क्ये बबते माने हैं। इस सरह कर्मीडा सम्बन्ध नीराहे परेसीड़े साथ अनादि कार्यने प्रसाहरूण

चना था रहा है और वह सम्बन्ध उसी समय एटेना मव इस जीवडी मुक्ति होगी। इन दोनी नवम चार्नण डारीरोंने एटना ही मुक्ति हैं। वहि चनादि कावने मंसारी बीवने साथ सार्गण डारीर

न होता तो इसी भी गई कार्नण वर्षणाओका वस म होता । सिद्धीक कार्मण प्रदिश्च म रहनेते कार्नण वर्षणाओके निद्ध-

क्षेत्रने होने हुए भी कभी भी कभीड़ा वंध नहीं होता। भीदके मने महेश कार्नेल बर्गणाओंगे उनाउन मरे हुए हैं इसीलिये भीवड़ी ब्युव्हाननवंश मुन्दीक कहा है और यह बलाया

ी ित मूर्नीत जीवका ही क्या पूर्णीत पुरुशित होता मंत्रव है। इस पंपरे स्परूपको निक्षव करने जानी जीवरो उपित है कि अपने सम्प्रता निक्षव करनावधी और प्रदान देवे हय यह यह देवेगा हि उनके अभ्याक्ष स्थान व्यवस्थ हुन्द अस्ताव्यर्ध सके कर्मवार्धि उपाधियोग र्टन्द परिवार है। इससी जीवका उपित

क्रियादि द्वारिकोरि रिंग अदिशह है। हाजी जीवहरे दिस्त है हि विके जायते दुन रोजि दिये वर अपने स्थानाद्वा स्थाह वेद और उसरे मण्ड रिज्य ने किन तीन क्योरिक किर्दार्थ सभा सीन प्रकोश निर्मादित होती के निर्मात क्योरिक क्या क्योग हुन तोन हारीकि सीनर देवा वर गरगाव्या अपनेसे किस है। बाल्यसे स्थासिक सीनर देवा वर गरगाव्या अपनेसे किस है। बाल्यसे



٠.,



हासण हैं। मार्गों हासपार्ग ही चुंगोर भरी हुई हमें शंगाण बंधें सम्प्रात हो आत्माह पर्देशोंसे एक खेत्राराणहरूप बक्ती मान गर्गों हैं—आमन और बंध होने ही खार्थ एक समयमें होते हैं बंधेंचे सम्प्रम होते मान करेंचे अहांको भागत नहा वरण्य होते बोध्य कार्यों के बहते हैं। यही आपन और वर्धों करता है पुन्यकर्म का आत्म हमारे न नाहनेवर भी आता है। सम्बन्ध सीव पुण्याी बांज भी मही बरता है। बहन सप्ति मार्गों हम्म सुमबाई सामृत इसनेवे निये औ बीतराय देव, सारव व पूर्वे भा हम्मवे बतन इस्ता है व अम्ब पार्विक व प्रोक्शांक साई दरन है—यह क्ष्मेंचे सुन्न भी एक नहीं वाहता है, बंब का स्वरं पर

मिति उपमादने सेवा पर्व बनाया है। नीवी जिन विद्यातने वीर नियर सुप्रमें बह बता दिया है कि इनने प्रशासि भागीके होनेप साता वेदशीय पुण्य कर्मका यागन होगा "भागास्थानकारणकारसम्बद्धाया स्वाहित्यमः -

भूतप्रस्यनुक्रम्पदानस्त्रासस्यमादियसः -स्मातिः गौर्वाम न सञ्चेषस्य । " (द्वारः तः १२-६।

Plast & A

भारार्थ मध्यत अभिष्टेश देव, सर पारियोदा दियो इस बा १९११ १६ - १४०० घटामारा व्याप्त पाणास १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ प्राप्तास १६ - १ १ १ १ १ १ १ १ १

4 5 2 gr. 24

इस तथी को १ १ व्याप्त १ १ १ वर्ग । १ १ वर्ग १ १ १ वर्ग १ १ १ १ वर्ग १ १ १ १ १ वर्ग १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

मुणस्यात सहक अर्थान्यात र तह वीतास्त्रत हा परिस्तान्य



व उनके मुहोँका स्मरण करना इसे ही येच परमेटीकी असि **६६ने हैं-मक्तमन आत्मांके शुद्ध स्वमानधी ही बाहण वीग्य मान** करके नहीं २ हाद स्थापको प्रगटता है उनकी मान्यता इसीनिये परने हैं कि अपनेमें श्**द**स्यभावकी यसटताकी योग्यता आमाये। भी भरहंत ही अटडब्बने पूजा करना बहुत अधिक हान रागको परानेवाली है, मुनीधरों हो दान देना बहुत अधिक धार्मिक अनु-रागका कारण है। सारुओही वेयाहत्य करना-उनकी संयम साधनमें अधिक उद्योगरान बनाना वह सर प्रशस्त शग है । इसके मियाम मुनि या श्रावकके व्यादारचारित्रमें उद्यम करना, सदा महिंसा, सत्य, अस्त्रेय, ब्रह्मायये व ममना रहित माव रखना, ब्रह्मोंकी रक्षार्थ पंशीत भावनाओंदा विचार रम्पना, गुरुदी आज्ञानुसार वर्नना यह सब शुभराग है । मिटवाटाटी अज्ञानी भीव अनेक प्रकार शुभ कार्यों है। दिवयभोग के पानेकी टान्सामे निदान भाव है साथ करता है निमसे पुषर नो बाधना है पान्तु वह पुष्य अविशय रहित होता है, परस्तर व पाप्यत्यका कारण होता है, परस्तु सम्बर्द्धणी पर्मी-मुगाम व ोक्षा कि कि के प्रमें दूरता है जिसमें अतिशयकारी मनात प्राप्तः १२२० है। स्थ्यदर्श जनी श्रभगारी भी त्यापनि येत. १००० । स्टीन रतासे बचनेके तिये शम रागक ता गाउँ । गाउँ प्रतेषक साम दश्ना है। शानी पुरुष और ए. . लोको प्रकार समय सामना है । निमा स्वामी कुन्दर्भाव र । ने समयम भी बट्टा है~

सा विष्णयन्ति शिवा स्त्रीह बालावमा च जह पुरिता । बधिद वन जोप सुदममुद वा कद कमा ॥ १५३ ॥

१२८] श्री पंचास्तिकाय टीका ।

परमहुश हिरा जे ते अण्णाणेण पुण्णमिन्छ ति । स सारामणदेदु विभोषसदेदु अयार्णता ॥ १६९ ॥ भावार्य-भैसे स्टोहंडी वेडी पुरुषको बांधती है वेसे ही सुव-

र्जरी बेड़ी बांपती है। इसी तरह शुभ या अशुभ दिया हुआ हर्ने भीवड़ी पुण्य तथा पापइमेंसे बांघता है। जो निश्चय तत्यश्चार्यमें बाहर हीं और मोक्षफे बास्तबिक कारण शुद्धीपयोगको गई। मार्वर हैं ये अज्ञानसे पुण्यको ही मोक्षका कारण मान पुण्यकी इच्छा करने

हैं तो बास्तवमें संमारके अमणका कारण है। उत्पानिका-आगे अनुकरणका सफल कट्ते हैं-तिमिद्रं बुशुचिखदं था दृष्टिई टट्टण जो दु दृष्टिदमणे।

पहिचळादि सं किववा तस्मेसा होदि अणुक्या ॥१,४८॥ त्रवा कुम्रतन वा कृष्यिनं स्ट्या वन्त्र द्वानसमाः।

प्रनिरपने नं इपया श्रेयंत अक्त्युक्त्यों ॥ १४५ ॥ अन्ययसदिन सामान्यार्थ-(सो दु) मो कोई (तिसिद) प्यामे, (कुम्बियन) मृत्रे (स) तथा (दृदिक) दृशोको दुरहुण) देसकर

(इत्यान)) भइने गनमे दु ली होना हुआ (न) उसको (कियम) तयाभावमे (प्रदिश्मान) स्वीकार करता है अर्थात् उसका दु ग्र हुर इन्हर्भ कि (तस्म) उस द्वावानके (युमा) यह (अयुक्ता) देवा कि इन्हर्भ है ।

विशेषार्थ अन्त नी जीव हिमीधी तीय प्याम, नय व नीय ११११ व्याद देशक दिस ताह इमझा बाज कर ऐसा मीयहर

्र मृत्या हुन । दयानाव करता है किन्दु सम्याकानी अपने अपन का सदनको न प्रात करता हुआ। संक्रेस परिवास न करके ासदा क्ष्मासंभद्र प्रथम क्षमा है—प्रामे पुन्ती देखादन विदेश परिस समाचित्रामाणे कावना नाक है, यह सुखदा याव है है

भाराचे - इस साधने लाजाको हाज सादराज्यन का स्वताप बाह भार बन दिया है उपरांदे चित्रमें द्वाम व समझता कृष्टिये १० वक्त विक कुर्योची गुरात, प्रायम, रोजी, होशी क हु सी देशका करण रेजा। आह बक्ते एवं कार्व दि मार्च में ही भूगा, त्याता, होती था हु हो। हुं जीर रूप जैसे ब्राप्ते मूल, ह्याय, सेत कार्य होती व शहरा बिल प्रदेशना है बेमें ही। यहरेशा प्रदेशना है ऐसा र रहापर नेते शहने यु रहेके दूर बरवेबा उपन बरना है देशे मुख्योते बहीबे निवास्त्रमें बदानवान हीहाते । अस्ती वासि हो ते का करा, पान भीवांच मादिका उपय करते, व शक्ति ही मी विशेष बराहे । बाँड बरा भी न सबे ती सनसे भारता माहि कि हर देश के दुर देशे देश है। तथा बदा देशी नवपर निति इम. १ - १ ३० - १० । यह दयार व वास्त्यमें प्राप्त अर्थन प्रति । पार्श्वकानि अपने तथा मिलने 1 ्र ^{त्र}स्थः । इ. इ. है, पार्नी · है। ते स्टब्स्स ..' ३वन देश है . 1 . f. 15 has etci s ्च र " ते सहादेश सके ∤ दैना है उसल ुमंत्रे धन्मे ता वह ६ । तो उन्हों तस्त्र स्वामा जातनह बह दयाबान एनके - 'नेके जिये बोध्य अज व बालीका प्रबन्ध कर 🎤

7,30] श्री पंचास्तिकाय टीका ।

देगा । दयामावसे कवाय मंद हो नाती है और मंद क्यायों सात वेदनीय आदि पुण्यकर्मीको बांघ लेता है। नो सम्यग्द्रश्री ज्ञानी हैं वे मात्र अपने दोषल परिणामींकी उलजन मिटानेके लिये तथा मात्र अपना कर्नव्य समझकर तृमरोंके दुःख निवारण करेंगे। यै बदलेमें न यु पुण्यवंच चाहेंगे न उसमे कुछ प्रत्युपकारकी वांछा करेंगे l

तथापि बन्तुका स्वभाव है कि नहीं शुभराग हो वहां पुण्य बंध ही जावे इस नियमित बन्तुन्थितिके अनुसार वे पुण्यक्रमें जैसा योग है वैसा बाघ लेवेंगे, किन्तु अज्ञानी मिध्याद्यशी अपनी बड़ाई व लाग व बदला व पुण्यकर्मका यंच चाहता हुआ ज्ञानीकी अपेक्ष

तीव क्पावके कारण अस्य पुण्यकर्मका बंध करेगा। वयोजन आचा-र्यका यह है कि मी हितकांशी आत्माएं हैं उनकी मीक्षक बीनमूत. शुद्धोपयोगर्मे रहनेका बल्न करना चाहिये, परन्तु शुद्धोपयोगर्मे

पहुचना व अनर्मृहर्न भी स्थिर रहना गडेर वीर पुरुगोका दाम है अतएय जनतक उपयोग शुक्रोपयोगमें लगे तनतक उस हीकी तरफ उपयुक्त रहकर स्वात्मानुभव करना योग्य है, परन्तु मत्र उपयोग उपने न लगे तब शुभोपयोगमें लगःनेके लिये अनुक्रम भावका ब द्यान् ग्रन्थ वर्तव्यका पालन भी करना योग्य है । नेसा श्री फुल-

भा आबायंने कहा है दबाहुना सदा संस्था सर्वकालफलबदा । संवितासी करान्याशु मानसं कष्णातमकम् ॥ २५६ ॥ अर्भात-सर्वकाल शुभ फल देनेवाली दयारूपी स्त्रीका सेवन 🕻 करना बोरप है जिसके सेवन करनेमें यह मन बीध ही करणाहरूप

दोनाता है।

श्री प्रानंदि मुनि लिखने है---देय। 🛭 कि अयति धत्र विकारमाथी । पर्न ता कि न करणांतिषु धत्र मृत्या 🛭 तरिक्र सपे। गुढरधास्ति न वत्र बाच।

सा कि विभृतिरद्द यत्र म पात्रशानम् ॥ १८ ॥ माराध-निमर्ने विदार भाव ही यह देह बेगे हीमता है।

नदी दबाकी मुख्यता नहीं यह धर्म बबाडीसका है, विवर्ध आत्य-शान नहीं वह सवस्थी युरु देने शीयका है, वह धन दिन दायदा त्री पात्र दानमें नटीं दाम आता है।

उत्यातिका-माने चित्तकी बण्यनाका स्वक्रम बहुने है कोपो व जहा माणो माया कोभी व विश्रयार का। भीवस्य कुणदि स्वोद्दे बन्दुवोशि य नै पुरा देशिए प्रदाह भौधी का करा साली साथा शोओं का विमानागण व ब्रीवरर करोडि छोल कानुन्दर्शित थ न वृष्य-वृष्ट्री-१ १९४६॥ भरत्य सहित सामान्याचे : नदा भिम सदद (कीची)

a) भ (कत्र मध्याणी) भाग, स्वायः स्था कस्मा (मीर्स्) भी भ चिम चिनारेस असीतक कामा ् सप्रहोश्य मेंबन्स ३ मानाक मान्तर ८ । तेल य अहरत बहु धरणहा दक्षरिक पक्ष बहुत हुन है। इस अन्यक्त के महिलाकको करान fee a se a sec - ca

(attain arian - s to centra n . en kaye graff for each read know here

S PRO CERT CAPE IN C. B. BARR HATT

सोमगदित शुद्ध आत्माके अनुसबसे विषरीत आकृतित सावहं वित्तारोभ पहते हैं। इन क्रोपादि क्यायोंकी तीवतासे जो विवते सोम रोजा है उससे क्युप्ता बहुते हैं। इस क्युप्तासे विसरीत माबसे अस्युप्ता या मंद्रस्वायहूप शुम्र राग बहते हैं यह सम् पुण्यकसंक आस्त्राक कारण है—यह माय कभी अज्ञानी किष्णहें-प्रीका भी अनेतानुरूपी क्यायक मंद्र उदय होनेपर होगाता है नया ज्ञानीक भी यह शुम्र माब तब होता है तब उसकी विद्या

१३२] श्री पंचास्तिकाय टीका ।

बहित ब्यानुसम्बा स्थम नहीं होता य ज्ञानी खोटे ब्यानसे सम्बेडे किये (न निवाडो पनप्रतास्त्रव सामडी संतोष, स्यामाव, धमा आदिक करनी करता है। मानार्थ इस गामार्थ भी पुग्यके कारणस्त्रव सायद्वी वनाय है। १००४ मामार्थ कह चुके है कि चिताडी कर्युरनाद्वा नहींनी पुण्यपन ४१ । ४१ण है। उस चिताडी कर्युरनाद्वी सहीं द्वीया है-

सह ब न देगतेने आभी है कि जब कभी साबीन तीब कीच आगाता है तर बहुन नी भेटा भाव होताता है—बीग्य विदेक जाता रहता है, शरीर कार जान है आग्य जात्र होताती है। इसी तरह जब राज मान बाला है, तर अटक बंगे साब वेसा कुटोर आगाता है

ित्य स्ता । या जाराना है-सीझ लीन बरायचे प्रद्रपरे इस याणाच विष्ट जाता रात्मा है तक तुमरीको पीड़ा देवर भी धन सम्रा बन्ने अस्ता है-सन्य अन्ययका, बनैय्य कहतैयका दिचार होड़ देता है। इत्यादि चित्रकी शतुलता नहीं न होकर धीन भार है, दिनय है, मन्त्रता है, सत्य माध्य है, मीतिमे द्रप्य बनाना है, अमध्यको स्थायकर मध्यका बहुम बहना है, परीवहारका भार है ये मन महत्त्वायके बार्य है। इन दार्यीको दाने हुए चिताही मनस्ता होती है। दन बड़ी चित्रकाद पुरुष सामद काता है।

स'बहत्ती मीवका नक्ष्य शुद्ध आत्माके अनुमदका ही होता है। यर उपयोग उनमें स्ट्रानेशे जनमर्थ होनाता है तर महाम द्यपोगमे इचनेके लिये दर नानःप्रदार मह द्यावरूप शुभ दायौदी काना है जिससे स्वय पुण्यवसेदा वय होताता है-जानी पुण्यक्र-में की भी चाइना नहीं करता है !

श्री समयमारजीमें स्थानी एडने हैं-

पवि कुरुनीह नाजि वेहहि जानी कामाह बहुपयाराह। ज्ञानीह युग कमानुरु बंधे युग्नी च पार्थ य ॥ ३४० ॥ मावार्थ-ज्ञानी सन्यन्द्रष्टी जीव बाबा यक्षारके पुण्य पाप क्मीका न क्यों होता है व भोका बनता है, वह क्मीके फ्लकी, बधरो, पुण्य नवा पावको सात्र ज्ञानना ही है-नरवज्ञानी अपने परिण मों भी सभ्य पर जिसे ब पन इस्ट आवर्षे समनेके लिये ही ज्ञास माबोरे भीतर परिवासन करता है। १००६ लोससे शुप्रमाव नहीं करता है।

इस तर जार राजा जाने पूर्णामबक्के करणोही बनाया 🕻 द्रमानिका- अब हो राधानोंने पापस्यक सहय पहने हैं -बरिया प्रमादबहुना कालुभ्य लोलका य विमयेषु । परपरितानपनाती पानस्म य आसन कणित ॥१४७॥ बर्गा प्रमाद्रात । काञ्च जान्त च विषये ।

परपोत्काराधानार सपन्य अध्यव स्थेति ॥ १००





नेवार रहिरियोग, बारिष्ट संयोग, समिवितास व सौग हुन निरान रूप (शाम को हुए होमानावड़ी कर महान आर्तिवान बहुने हैं। सोपने पेतने प्रम्म पुक्रमान्तुकारण मध्याने दुरवर्गी हुए निरामें रेटर होनेवारे हिंगा, रह्म बीगी व परिमाहित सोगोंने आर्नहरूप बार रोहापण हैं। श्चाचिताय श्राहीवतीय दोनेतारे आर्नहरूप पर रोहापण हैं। श्चाचिताय श्चाहिताय दोनों होहक क्षिप्य दिया प्रमाण मध्या करनेवारों हालको श्चाब हुए स्थापनी सेरित मी स्मह्मपति पेता होनेवारी मानवा आर्टिक विकालपानी सेरित मी स्मह्मपति उपका माला करनेवारा वर्गनमीह और वाहित मी स्मह्मपति हैं। इस्पादि विभाव मानवा श्चाब हैं। ये स्व साव पाएकरिके आस्वके साल हैं।

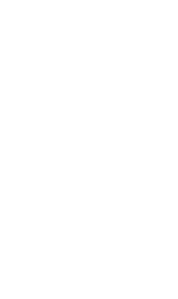
भाषाच-द्रम नाबाने आवार्षने बहुत उरवीयी कदन हिया
है और एनेट्रियमे लेफ व्येट्रिय लक्ष्म नावीक मी भी भार पार
वर्षक वान्य होनेक है उन मबको सम्में बना दिया है। बार
मजार, मेल नेद्यार व इदियामीनवना तो सर्व ही निर्माद्दीय
सेवार मान स्थेन वाद्या नाय है। युवादि रहेदिन, सर आदि
हेट्रिय च रा अंद नेरिय, सबसी आदि वोदिय व सब्द आदि
देंट्रिय च रा अंद नेरिय, सबसी आदि वोदिय व सब्द आदि
देंट्रिय च रा अंदर्ग नेरिया, सबसी आदि वोदिय व सब्द आदि
देंट्रिय च रा अंदर्ग नेरिया, सबसी आदि वोदिय व सब्द आदि
प्रमाण व दूसरों व्याप्त है। स्याप्त ने कि बढ़ी माण न वनै
प्रमाण वित्य प्रमाण वर्षणादिय नाव मानव देंद्रिय देवरिय रहर्द्रिय है।
अराव वित्य प्रमाण वर्षणादिय नाव मानव देंद्रिय है।
अराव वित्य प्रमाण वर्षणाद्र काल नेत्र है, दरप्त काल स्थापन वर्षणाद्र वर्षणाद्र काल काल स्थापन वर्षणाद्र वर्षणाद्र काल स्थापन वर्षणाद्र स्थापन स्थापन स्थापन वर्षणाद्र स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप

२१८] श्री पंचारिनकाय टीका । अपनीर इंदिबीके आणीन होकर नीवनपर्यंत कर्म किया करने व या दुर्मसूल मोगा करने हैं । ऋणा, नील, कापीन तीन हेम्य

लीमता होती है यहां जीज, नहां और भी कम लीमता होती हैं
यहां कायोग्रवेटपाके माय होने हें—ये तीजों माय अपने स्वापेंड़े
साधनेवाले व उस स्वापेंसे वाषकोंते हेप करके उनकी हानि कर
नेवाले होते हैं। जहां परके हितक माय हो बहांते पीक्षेत्रया जो
गुम है तारम्य होती है—असिंची पंचेंद्रिय तक्कों परके हितक माय
संभव नहीं है। इसल्यें बीदियतक ठी तीन अगुमनेदयार्ग ही
शास्त्रमें बताई हैं। यचेंद्रिय आसेनीके कभी बीतलेक्या संगव है।
कमीओ अतितीम व कभी उताले कम होगाना है। इसिंसे कमीओ
स्थित व उनका अनुभाग वन्य भी अनेक स्वारक पहला है।

मग्बन्धी परिणाम एफ्रेंट्रियसे लेहर पर्वेद्वियतक सर्व नीर्वेमि फ जाते हिं। निगोद नीर्वमें भी ये तीन छेस्याएं होती हैं। क्यायोर्व महां अधिक तीवला होती है नहां खट्या, नहां कुछ उससे का

यहाँ कारण हैं जो किसी निगीद एकेंद्रिय जीवके भी कभी मनुष्य आयुक्त वंच होनाता है और वह जीव सीधा निच्चनिगोदरी निक्ठ कर मनुष्य पेंदा होनाता है। छेरवाओंसे हो सपे कमीबा वय रोता है। यहतसे लोग एकेद्रिय जादि शरीरोंको मात्र भोग ग्रारीर मानने हें, वे कहते हैं कि उनके पाप वंच नहीं होता है। वि मिस्तांत कहता है कि वंचका कारण कपाप और बोह है। व्योकि दगका अस्तिक्त सर्व है एकेंद्रियादि जीवकि है हम्लिये सर्व ही गीव पाएका वंच कहते हैं—सामान्यसे सर्व ही संसारी जीव हर



विशेषार्थ-पर धीब जिस स्थल्यानमें बाता है बटा जातक असमारी दाने बहमा दन वर्षे प्रश्लिशेश सदर सता है किरदा या दावदा दावद भारमंत्रे बनाम समा है। सुरम्पानुके परिवाधीके प्राचार ही क्षेत्रा अस्य रहता है।

गींचे !- म म दाने अनुमार रूप पर्टियोद्या आस्पर समा ६५ मुक्त्याक ६ अन् २६मा अमा १

" रेशना वनदेश कर्व दस यह राजव्यवेगीविष्णा । पुगतीस बहुरवृत्ये यव शासम आमिला यक्त ॥"

धर दौरक १५० बसदा उत्तर प्रदर्शिक्षे हैं उन्ते किरवास गुजरधानने, आगे मोन्टका, सामादनने आगे प्रशिवना, शीर्थ अपि-रिनेरे आगे दमका, वार्वं देशचिनिमी आगे चारका, प्रसरादिता

मार्के हारेने आगे हा दा, यान्त्रे अप्रवस्त आगे एक्टा, आटर्ने अपूर्वकार्यसे आगे एलावरः, जीवें अन्यिक्षश्यमे अगे पाचका, तः व मु ममाप्रमामं । एं केन्द्रया, तैरहवे स्वीय देवित सूच हम रूप के प्रवर्ग - र नहां जाना है र उदी के भीत हम दें न

मान है, रूप या ना ना है त्यो वह वेप हिन्ये गहनी मानी है गदाबस . च भागित सबते होता है। परामुक्ता ३०० - ००० र व्यवस्थानी क

11 कार्यहरू के वा के विकास नाम भाग भाग कर के मन्न पार्टिये, बहु सुपक्ष अस्टि ।

१४२ 📗 श्री पंचास्तिकाय टीका।

विगेषरूप संवर रानत्रय मार्गके प्रतापसेही होता है। जिस किसीके सम्यग्दर्शनका लाभ नहीं और वह मिध्यादृष्टी होकर पहले गुणस्पन होमें है यह बाहरमें इदियोंके रोकने, व क्यायोंके द्वाने तथ

आहारादिकी इच्छाओसी रोकनेपर भी कमीका संवर नहीं कर सना वयो क विना सम्बन्दरीयके जीवकी रुचि इंदिय विषयोंसे हरती नहीं। कोधादि क्याय जीवके विभावभाव हैं व आहार, भय, मैधुन, परिग्रह चार सज्ञाण बंघकी कारण हैं यह रुनि टढ़ नहीं होती नथा अपने शुद्ध क्याय रहित बीतराग स्वमायकी रुचि नहीं होती, आत्मानदकी प्रतीति नहीं होती । विना सम्यक्तके इंद्रिय सुरा 🗗 यहण योग्य जातका है । इसलिये बह भाषी न सो इंदियों हो गैर मना देन क्यायों हो जीत सका है न आहार आदि संज्ञाजींने स्वास्त्र के । सम्बन्धानके होनानेपर अनंतानुबन्धी इपायका उदय नरी रहता है इसलिये स्वाय, करेरव अहतेदवहा ध्यान है। न न' है बचरि अधिरन सम्बर्द्धशी पच अणुवनके नियमदि झत्प नर्भ रामका है स्वीर्विदेश स्वयक्ति शक्तिवाले अपन्यास्थाना-... पथरा १८व मीलद है-यह भीवे म्लब्बानहारा वयवि ा वरा नरी है तथावि भशम, मनेग, अनुकृष्ण, आस्तिम 🕡 🔐 🚧 है जिसमें उसके आयोगे ज्ञानि, धर्मान्सम व सेमार · · · वर वरण्य, प्राणियोशर द्यात्या मोश आदि पदाशीने अहा · · · हे इस कारत उसकी बहुति किरवाहरूरीकी अवेशा बहुत रक्त व न्यायपूर्व होतानी है। परमाध्या अरहेन्द्री मिनिन २२२२ । स्वान्त्रायः, स्वानुबार भ दि शाशमुद्धिके बाह्य बार्योने मानि दान हुए हर अध्याक्षानात्रात्र क्षावद्य उत्थान होगता है

पट्नी पनिवार लेकर व्यारह पनिया सहके वानित्रको बहाना हुआ पर्या माना है । भव सत्यार यानावरण दवायका भी उपराय होमाना है तर गर्द परिग्रह स्वागदर मुनि होताता है। वर्गध्यानके अध्या-मर्गे इ शक्त ध्यानके बनापने गुजन्यान पहना हुआ १व गारहर्वे गुजन्यावर्षे सबै बोहका उपराम बन्देना है व बान्हर्रेने सबै मोहका मारा कारेमा है सब बीयर मी हो अभा है-द्वायदा पैत मही रहता है, गात्र थोगोंकी प्रकृति नेरहरें मधोगकेवनी तक रहती है इममे मात्र मानावेदनीका आध्यय करता है-चीरटवें अयोग गुण-न्यानमें इसका भी आक्षत्र हक जाना है तय पुरानन क्रमोंकी शाहका एवरम मिळ पामाना होमता है। माबार्थ यदी है कि शानी भीवको उचिन है कि निम स्पट्टमें दीमके सप्यादशीय के पानेका प्रयोग करे । यही सबर शरकता युक्त है । सरवारतेलका नाभ भेदविज्ञानके दिना नहीं होता (आत्याका स्वमाय सर्व शर्माह नेपासिक भागेमि, अह बगीमें व झरेपदिये किस है । यह यथार्थ छान रोजाना भेद विकान है । इस बान हो पदा कानेक लिये हमी उनकी अवना नित्य करनी येथ्य है। इमी भारताहे ८२ लन्याम र मध्याउद्योगहा नाम होता है। इस भेडविकानके विवर्धाना श्री स्वरीने समस्मासी

इम तरह बता दिया है

१४२] श्री पंचास्तिकाय टीका ।

विरोधरूप संवर रत्नत्रय मार्गके प्रतापमे ही होता है। निस किसीओ सम्यादरीनका लाम नहीं और वह मिटवादरीहोकर पहले गुणस्थान हीमें है वह बाहरमें इंद्रियोंके रोकने, व क्यायोंके दनाने त्या आहारादिकी इच्छाओंको रोकनेपर भी कमीका संवर नहीं कर सना पयोक्ति विना सम्बग्दर्शनके जीवकी रुचि इंद्रिय विपयोंसे हरडी नहीं। क्रोधादि कपाय जीवके विभावमाव हैं व आहार, भय, नेयुन, परिग्रह चार संज्ञाएं बंघकी कारण है यह रुचि डढ़ नहीं होती तथा अपने शुद्ध कषाय रहित यीतराग स्वभावकी रुचि नहीं होती, आत्मानंदकी प्रतीति नहीं होती । विना सम्यक्तके इंद्रिय सुस ही ग्रहण योग्य शल≆ता है । इसलिये वह प्राणी न तो इंद्रियोंको रोक मक्ता है न कपायोंको जीत सक्ता है न आहार आदि संज्ञाओंने यच सका है । सन्यन्दर्शनके होबानेपर अनंतानुबन्धी क्षायकी उदय नहीं रहता है इसलिये न्याय, कर्तव्य अकर्तव्यका ध्यान हो माना है यद्यपि अविस्त मध्यग्दष्टी पंच अणुव्रतके नियमदि ब्रहण नहीं कर सक्ता है क्योकि देश संयगके रोकनेवाले अप्रत्याच्याना-घरण कपायका उदय मीजृद है—यह चौथे गुणस्थानवाला सधिप मिनिहापूर्वक ग्रनी नहीं है तथापि प्रश्नम, संवैग, अनुकृष्णा, आस्तिरन भावका धारी होता है जिससे उसके भावोंने ज्ञांति, धर्मानुराग व संसार जारीर भीगों में वैरास्य, प्राणियोपर दया तथा मीश आदि पदार्थी में श्रदा होनानी है, इम कारण उमकी प्रवृत्ति मिय्यादण्टीकी अपेक्षा बहुँवे 🎾 विवेकपूर्ण व स्यायपूर्ण होतानी है। परमात्मा अरहंतकी मिन्स् गुरमेया, स्वाय्याय, म्बानुभव आदि मावशुद्धिके काश्य कार्योंने प्राृत्ति **द**रते हुए भव अवस्यास्थानावरण दवायदा उपराय होनाता है

न्द यह शाक्वके अतीको पाप्ता हुआ। अपूछती होमाता है। पण्यी प्रतिसारी रोवर ब्यास्ट प्रतिया नवते. वास्त्रिको बहाना हुआ चना माना है । कब धारान्यानावान वय बढ़ा थी उपरास तीमाना है तर सब पर परिश्न त्यालहर गुनि होताना है। बर्बरदार के छन्दा-भारे व शक्त ध्यानंत प्रशासने गुकाचान चटना हुआ कर स्थान्टरे गुलकावर्षे सबै बोहबा एक्स बन्देम है व बान्हरेने गर्व मोहबा माध्य बरदेशा है सब बीजरची हो अना है बचाववा मेंय गृही रहता है. मात्र बीमीबी बड़ित नेस्टबें स्थीगरेडकी नह स्ट्रेनी है इसते बाप्र शानावेदनीया बाधाव बन्ता है-धीरहर्वे अयोग गण-न्यानमें इसका भी आधाद रक जाना है तद पुरादन क्योंको इएएकर एक्टम सिद्ध करनाया होतान है। माबार्य गरी है कि शानी सीवडी शविन है कि निम नरहते दीवके सन्दर्शनंक दानेदा ष्टदीम दशा यही सदर नन्ददा सून है। सध्यापृत्तेमका नाम सर्वक्षणनव विना नहीं होता। अन्यादा स्वमाय सर्वे शार्य सर एक सहित, चट क्यींस व शर स्थित किस है। सर सर ५ हर । अर वि न हे । इस आजरी परः कानका । या । का वाला कानी या है। क्षेत्र माद्रक ५ अन्यम इत्हर्दान्हा यात्र होता है।

हम मेहरबद्यानक विचारत - - जाम स्व शाने सम्बद्धानमें इस नरह बता दिया है

सर्गवर्षां क्रमें जाकमं आहि जॉन्य उद्यागी। उद्यानमहित्य क्रमें जावम्म सादि के व्यन्ति ११३०० उद्यविदासि विवेदा क्राम स्विकती क्रियोदेशि

न मध्यमहाया जायग्रहाया ह अ किया १२

भावार्थ-व्याठ प्रकार कमेंसे व हारीराठि नोकर्नसे कोई जन दर्गनोपयोग त्रो भीवका लक्षण है हो नहीं है। तथा उरवेज भी द्रव्य क्ये और नोक्स्में नहीं है। त्रिनेन्द्र भगवानोंने क्लेंब उदयका फल नानापकारका कहा है वह सब मेरा स्वमाद नहीं है

में तो एक अफेटा जाननेवाला, जायक स्वभावका पारी हूं ! उत्थानिका-लागे सामान्यमे पुण्य तथा पापके संबद्धा

उत्पातका जान सामाचन पुण्य तमा पानक नारा-म्बरूप कहते हैं:-जस्स ण विज्ञदि रागो दोसो मोहो व सब्बद्ध्येमु !

णासयदि सुढे अपुढं समग्रहदुक्तस्य भिकाबुस्स (१९५०)) यस्य न वियन गणी देवो मोठी वा नवेरत्वेषु (नास्त्रति सुममग्रम गम्मुगर् गन्य निष्ठो, ॥ १५० ॥

अन्यसहित सामान्यार्थ—(जन्म) जिसके भीना ' सन्य दक्षेष्ठ) मर्थ दक्ष्मी (रागी दोशी सोशी बा) राग, हेप. मोह (ण) नहीं (बिकार्ड) मीन्द हैं उस (समग्रुहरुक्तस्त) सुत्व ब दुःसमें समान भावके धारी (भित्तमुस्त) सायुके (सुर्द न्यहर्ट) शुम ॥। अशुम कर्म (णासवदि) नहीं आते हैं।

विद्योगार्थ-मीउके परमवर्ष रुख्य स्वरूप शुक्रभावसे विपरीत रागदेव तथा मोट माव है। जो साजु त्योपन रागदेव मोदने रहित राजोपवीगमे युक्त है वट हमें ग्रुम तथा जग्रुम संस्टरोमें रहित ग्रुह आत्म्यानमें पेदा होनेवाले सुव्यान्तनें सुतिहरूप एक जाकार मतातासमई भावके बटते जपने भीतर सुरा दुस्म रूप हंपा विपादके विश्वरोही नहीं होने देवा है पेसे सुरा दुस्म समायके भारी सायुक्ते सुन्न अग्रुम कमेंक जासन नहीं होता है। यहांपर श्रुम अध्यम भावके रोकनेमें समये जुद्दोपकीयको मावसंबर तथा भावसंवर के आधारमे नवीन कमों हा रुकना सो द्रव्यसंवर है यह ताराये हैं। भाषारमे नवीन कमों हा रुकना सो द्रव्यसंवर है यह ताराये हैं। भावार्थ-पूर्व गावार्थ वह उत्पन्न हैं कि विवार उत्पन्न हैं

भावार्य-यहां गावार्य यह बताया है कि तिसरे बुद्धिपूर्वक व्याप या शुम कह्यों में मन, जबन, कावकी महात नहीं होती है ऐसे हारियरोगी सापुक पुण्य व चाप दोतों क्यों का नाहत नहीं होती है। सो कावस तुपावारों लेकड़ दाई गृहस्तांपराय गुण-स्थान कर्यों का वाप दो तो है। सो कावस तुपावारों लेकड़ दाई गृहस्तांपराय गुण-स्थान कर्यों का वाप की होता है चरनु वह हतना कम है कि यदि आगत वा वंद गरी करें तीभी पेना कह सके हैं। महां प्रदिष्ट प्राथी अधिक कर्यवच होता है। यहां मयो नत यह है कि साम्ब-भावरें विकार ही हुप्यनांगे में परा का कारण है। तिसने निश्चायनका जनन मात्रके गोवीको अपने समान देश विवा है, हुप्टनवित सक्को हाद एपप्पाद अपने हिना दे हमी है। हुप्टनवित सक्को हुप्य एपप्पाद अपने हिना है हमी है। हाइनवित सक्को हुप्य एपप्पाद अपने हिना है। सानि होती है।

इस मुद्दोषयोगके बनने ही उपनि बरने हुए यह जानगा ऐसी समाम अवस्थाको या नेना है नहां कर्योका विन्दून भी भागव नहीं होना है। बानवक सब्दरण बाला मुद्दोषयोग है वही भार सरह हैं नेना श्रीन्यानचार स्वानीन साववानकन्याने दिन्सा है – निकामहिनातना मेहियानातात्वात्वा

ानमाद्रमस्ताना वद्ययकारायस्यः । भयति नियमभेगां गुटनस्योगवदायः । सम्बन्धिकदार्वद्यद्यपृत्तीस्थानातां । भयति रहेति स स्थितस्यः वर्धेमोदाः ॥ ॥

भवति सनि व संविध्वयस्यः व ग्रेमाशः ८ ४ ॥ - भावर्षि-त्रो भेदविद्यनवं यनसं भवते व्यायप्या सहिसाने । १४६] श्री पंचास्तिकाय टीका । नीन होने हें उन्हींकी निश्चयते शुरू जात्म तत्त्वका छाप होंग्र है—तप ये सर्व जन्म इट्योंसे निश्चयने दूर रहते हैं ऐसा होनेत

उत्थानिका-आगे अवोगिकेबलिनिके गुणस्मानही बरेह पूर्णे महारसे पुण्य पापका संवर होमाला है पेसा कहने हैं-

क्मोंसे मुक्ति होगाती हैं।

जस्स जदा खलु पुण्यं जोगे पावं च णिट्य विरद्स्स । संतरणं तस्स तदा सुद्रासुदकदस्य कम्पस्स ॥ १९९ ॥ यगः यगः गतु पुण्यं क्षेत्रे वाधं च जाटन रिस्तस्य ।

र्गराण तथा त्रा शुभागुभक्तत्व वर्षणः ॥ ९५१ ॥ अन्ययमदिन सामान्यार्थं-(मशा) निम समय (मान शिः इ.म.) निम साधुके (मोगो योगोर्थे (सन्तु) निश्चवहरते (पूर्ण व्

दरम) निप्त साधुके (भीग) बोर्गामें (शत्यु) (नेशयकरते (गुग्गे च् पार्य) पुग्य और पाप मात्र (मिल) नहीं होने हैं (तरा) तिम समय (नम्म) उस साधुके (शुरुशहुर्हचरम्म) गुम या भगुन द्वारा

प्राप्त (कामम्म) कमैन्यका (संवर्त) स्वर होताना है। विद्यापार-निमके बाब और बजाब पर पर न पुर सार्वे हैं इस भगवान प्रमारमाहे साम्बन्धे वार्ष्य र पनर हामाना है

इमिनिये पुरम् और बारमे रहित करता एक पर पासपासी रिकेतास बर्मीडा पूर्ण सबर होजाता है। यह भर कहा है हि निविदार बहुद्ध साम्याडी अनुसात साव सहर है और पदाने है अध्यवदारकता इच्छापन है।

माराये-वर्णाय ताकावे आयात्वया संक्षत्रा वयन दे तथाहि युनिदारने दम नावाको जीवहर्व अवर्णाय सुगन्यानक रनतापर्य गरा

नुशनदान दम राजाका चान्त्रक् अथाय गुणस्यानक स्वताम सम इन्दरमुक्ती स्थानका की है । वच्यक्षी अदावक वार्णक सारमध्य है

49.४८] श्री पंचास्तिकाप टीका । भावर्थ-चे संत पुरुष साम्यवान तथा धन्य हैं जो परभावोंके

होड़ देते हैं और लोक अलोकके प्रकाशक निर्मेल आत्माका मनन करते हैं। गृहस्थ हो या साधु हो जो कोई अपने आत्मामें स्हण हैं अर्यात् अध्यात्ममें लीन हो स्वातुमब करता है वह गीप्र हैं। सिद्धपद पालेश है ऐसा श्रीनिनंद्र भगवान करते हैं। यदि संहरन

खत्तम हो और साधु हो तो उसी मनसे या परम्परासे मीशका काभ कर सक्ता है। तात्वयं यह है कि संवरकी प्राप्तिके लिये **इमें आ**त्मच्यानका अम्यास बढ़ाना चाहिये । इस तरह नव पदार्थीके कड़मैवाले दूसरे महाअधिकारमें सेवर पदार्थके व्यारत्यानसे तीन गाथाएं पूर्ण हुई-सातवा अंतर खधिकार समाप्त हुआ । खस्थानिका-आगे शुद्धात्माका अनुभव रूप शुद्धोपयोगसे सामने-बीग्य जो निर्मश अधिकार है उसमें "संवर भोगेहि जुदो" इत्यादि सीन गाथाओं से समुदायपातनिका है। अब निर्कशका स्वरूप कहते हैं ~ संबरजोगेहिं जुदो तथेहिं जो चिह्नदे बहुबिहेहिं। कम्माणं निज्ञरणं बहुगाणं कुणदि सो णियदं ॥१५२॥ मकरपोगान्या यसरक्योभियनेदने बद्विधः । कमणा विक्रीको बहुवाना क्यांति स नियत ॥ १५९ ॥ अन्यत्र सहित सामान्यार्थ-(जो) त्री साधु (संवर त्रीगेर्हि

जुरो, भारतपर और योगास्त्राप्त या जुडोपयोग सहित है और (बहुविहेटि नवेटि) नानावकार तपीके हारा (चिट्टरे) पुरुपार्य बरता है (मो) वह (बहुवार्य क्यायां) बहुतमे कर्मीकी (णिक्षर्यं) भिनेता (गियद कुपारे) निश्चयसे कर देता है।

कर्मकी तिर्वेशक कथल बन्नामा **है।** युग्दाओं की सीलक पर्य तीय शतात प्रदिक्ष कारण शिरवास्त्य, अविती, धाराप, कार्य मानि शिक्त बीकर अपने जिल्ली यह हा संकण अ में गड़िक गुपे भागाणी उलाउ करनी है वह निध्य ^{स्थ} न्यञ्चलकाणी मान्याके क्याहरणको समाप्तक निर्मित **र**ित कोल साबि है। जिन मेड्र जिलालंड प्रशासि कर्नीसे पूर्व कारीकी तर िक मूच अन्यान्धि सर्वे अन्यान्धिः, सर्वे कर्नेसीस्त नरी^{त्र} नार्वेधे तथा वर्षे अन्य जाना वृति पुत्रा स्थापका विभागात्री क्राच्याके आजिया केवन अस्टाय क्यून नवस्य कार्यों है है का लाहें - नवाह वर्षा अस्ताके बहाई अनुई वर्षा अ चल है। इस क्षेत्ररूप बाला मुन्ह बीयवर्ग महि भारत सरकारी कर रहे हे कर करते हुए भारतिहाँ भरिताहें। बर्च भरिता कर्री ित, कर रूप है। को बालचंद्रको बादमाओं में सादी करा है।

१९२] भी पैतारिकाय बीका ।
हम्भी विभा काम है । बाग्यमें स्थान ही निमाक काम है
ऐमा उन मुग्ने ब्याग्यन किया नवा है यह ताममें है।
सामार्थ-इस सामार्थ चाक्रमें अस्म क्या है में ग्रांट

हिन्द रहार कार्य कार्यक्ष बत्ता कराई है वह साधा तात त्या है भट कार्य किंग्सा कराई हुमाओं है कार्य से वर्ग बाव कराइ है। कार्याक्ष कार्य कर्मात कर्माक स्वार कराई के कराई किंग्स कार्य

क्ष्य कार्यानुकर्णात्वास्त्रम् वृत् वृत्त्व वृत्त्व क्षात्रे सूर्वि । सम्मानका स्त्रीत त्राप्ति पुत्रु सन् विच्यात्व सन्दर्ध ३१४० साम्र ६ तरः चार्ति ३०,८७ स्त्रात्त अस्ति स्त्रीत्ते दीन





'१५८ ो श्री पंचास्तिकाय टीका । क्ट्रकर रह जाते हैं कि यह पंचमकाल है इसमें ध्यान नहीं हैं। सक्ता है । उनका यह विकल्प सर्वेशा मिथ्या व अरुचिवर्देष है। कर्मोंके बंघके निवारणके लिये भारमध्यान ही एक मुख्य उपाय 🚺 तथा जहां साम्यमाव है वहीं आत्मध्यान है तथा वहीं कमोंकी निर्मा होती है । नेता श्री पद्मनंदि मुनिने प्रत्यसप्ततिमें वहा है-साम्प्रमेकं परं कार्यं साम्यं तत्थं परं स्मृतं । साम्यं सर्वोपदेशानामुपदेशेः विमुक्तपे ॥ ६६ ॥ साम्यं तहीधिनिर्माणं, शश्वदानंदर्मदिरं । साम्यं शुदारमना कर्षं, द्वारं मेश्विकसञ्चनः ॥ ६७ ॥ साम्यं निःशेषशासामां, सारमादुर्विपश्चिताः । साम्यं क्रमेमहोकक्षताहे दायानलायते ॥ ६८ ॥ साम्यं शरणमिल्यानुर्योगिनां योगगायरं । उपाधिरचिताशैनदीयसन्पन्नारणं 🛮 🗚 🕷 मायाध-एक समताभावको ही करना योग्य है। साम्यभावकी परमनन्द कहा गया है। सर्व उपदेशीमें साम्यभावका उपदेश ग्रं-क्तिका कारण है। यह समनाभाव रत्वत्रयमई भावमे रचित है, मटा भानदका मंदिर है।समनामात्र हाझ आत्माका स्वभाव है तथा भीक्ष महत्त्वश द्वार है। समतामावद्गी ही विद्वार्गीने अनेक गार्खीद्रा मार कहा है। यह समनामात्र ही क्योंकी महामेनाको जनानेके वियं दावानन अग्निक समान है। योगियों विवे ध्यानक गोपर मन्तानावको ही शहल कहा है -यह समतामाव कर्नकी उपान निमें र्राचन सर्व दोविके नाशका कारण है।

ान गंचन सर दोलांक नाराका कारण है। इस नंध्य नव पहावेके कहतेवाले तुसरे सहा क्षतिकारी नितर्शक कहनेवा मुख्यतासे सीत साचालीके कारा कारवी कार व्यक्तिपुर पूर्व हुक्या। उत्पानिका-आगे निर्विकार परमात्मके सप्पष्ट अदान, ग्रान स्था चारित्रकप निश्चम भोक्षमांसी विकशण क्य पदार्थके अधिकारों "ने सुहे" इत्यादि तीन गाथाओंके हारा सगुरायपान-निका है-प्रथम हो वेषका स्वरूप बहते हैं--

जं शुरपमुहपुदिक्षं आवं रची करेदि जदि अप्पा। सो तेण रदिद् योगे पोत्मक्रसम्मेण विविद्वेण ॥१९५॥ य गुलानुमपुर्वेचे भारे क्ला कोलि बकावा। य तेल अपनि बढा प्रकारमेण विकिन्त ॥ १५५॥

अन्वय सिक सामान्यार्थं-(नार्र) नन (रसो) यह कर्मेक्य सिंदित रागी (अन्या) आत्मा (उदिण्धं) कर्मीक उदवरी मात (क्षं) निस (ग्रुट्न) शुम (अनुद्रन्द) अग्रुप्त (गार्च) मानको (क्रेर्द्रि) करता है (स) बही चारमा (नेण) उस भारके निपित्तरी (विरिद्रेण) नामा मक्षम (गोप:अक्टप्येण) शुद्धन कर्मेशि (क्षंगे हबरि) धंप रूप होतासा है।

विशेषाधै—वह आगा वदावि निशंवनवसी शुद्धदृद्ध एकः
स्मानका प्रारी है नया प्रवाहतनवसी अत्रादि कार्यवनकी उपापिके दशमें सामी टीना हुमा निर्मन् जान तथा वानंद सामें
पूर्णांद्धा स्पान कव नो शुद्ध अध्या उसके स्वकृत्ये दिशासक इतमेंते निष्म को उदयंदे शाम शुद्ध अध्या अशुन्न साव है उसकी अपनी आमानुगुनिया दिया हुआ प्रत्या है तब बढी आत्मा उस सामादि विश्वाबके हमा नानावद्धाः वस्त्रवाणा योग्य पृद्धक-कोंने वस माना है। यहां यह वहां है कि गुद्धासाठी परिणितिसे विरोन नो शुन्न नया जशुन्न भाव है हो आदम्य है टबक् 'रेंं ९८] श्री पंचारितकाय टीका । इंट्रेंडर रह जाते हैं कि यह पंचयकाल है इसमें घ्यान नहीं हैं सक्ता है । उनका यह विकल्प सर्वेषा मिष्या व सहविवर्देड हैं। इमोंके संपक्त निवारणके लिये जातमध्यान ही एक मुख्य उपत्र हैं।

तथा जहां माण्यभाव हे वहीं आत्मध्यान हेत्यां वहीं क्यों हो निंग होती है। जिसा श्री प्रयोदि मुनिने एक्ततमतिने वहा है -- साम्यमें पर्य कार्य साम्यं तट्यं परं कर्यं हा है -- साम्यमें पर्य कार्य साम्यं तट्यं परं कर्यं हा है -- साम्यं तर्योपिनमांणं, शम्बदानंदमंदिरं । साम्यं तर्योपिनमांणं, शम्बदानंदमंदिरं । साम्यं मुत्तापत्री कर्यं, हार्र मेन्द्रिक्तमाः ॥ ६० ब्र. साम्यं निर्मेरशास्त्राक्षार हार्या हिप्तिक्रसाः । साम्यं निर्मेरशास्त्राक्ष्यं हार्या हिप्ते हार्या निर्मेरशास्त्राक्ष्यं हार्या हिप्ते हार्या हार्या हिप्ते हार्या हिप्ते हार्या हार्या हिप्ते हार्या हिप्ते हार्या हार्या हिप्ते हार्या हिप्ते हार्या हिप्ते हार्या हिप्ते हार्या हार्या हिप्ते हिप्ते हार्या हिप्ते हार्या हिप्ते ही हार्या हिप्ते ही हिप्ते हार्या हिप्ते ही हिप्ते हार्या हिप्ते ही हार्या हिप्ते ही हार्या हिप्ते ही हिप्ते ही हार्या हिप्ते ही हार्या हिप्ते ही हिप्ते ही हार्या ही हिप्ते ही हार्या ही हिप्ते ही हिप्ते ही हार्या ही हिप्ते ही हार्या ही हिप्ते ही हिप्ते ही हार्या ही हिप्ते ही हार्या ही हिप्ते ही हिप्ते ही हार्या ही हिप्ते ही हिप्ते ही हिप्ते ही ही हिप्ते ही हिप्ते ही ही हिप्ते ही हिप्ते ही हिप्ते ही हिप्ते ही हिप्ते ही हिप्ते ही हिप्ते ही हिप्ते ही ही हिप्ते

भीस महत्वहा द्वार है। समनाभावको ही विद्वानीने अनेक सार्तीका मार कहा है। यह समनाभाव ही क्योंकी महामेनाको अन्यनेके नियं दावानक अभिनेक समान है। योगियोंके दिवे प्यान के गोपर एक समनाभावको ही शारण कहा है-यह समनाभाव कर्मकी उपा-पिम गीवन सब देशोंके जावका कारण है। यान प्राप्त का नियं नियं नियं के स्वान कर स्वान के स्वान स्वान

अधिकार पूर्ण हवा।

सदा आनंदका मंदिर है। समतामात शुद्ध आत्माका म्बभाव है तथा

वरपानिका-जामे निर्विकार प्रकारमाके सम्पक्त अदान, द्वान हमा पारित्रकृप निभय कोद्यामंत्री विक्रमण वंच परायके अधिकारमें "नं सुर्व" इत्यादि शीन वाचाओंके द्वारा समुरापपान-निका है-सम्पन हो वंचका एक्टन कहते हैं---

स सुरमपुरसुरिण्णं भावं रचो बरेदि जदि अप्पा ।
 सो तेण द्वदि वंधो पोनान्यक्रमेण विविदेण ॥१९५॥
 पुनानुस्पुर्शनं अतं न्यः वरोति यदात्म ।

य गुभागुमपुराण भाग गणः चगान यदातमा । मा तेन भागति बदाः पुरानवर्मणा विविधेन ॥ ६५५ ॥

अन्वय सहिन सामान्यार्थ-(मिटी) नव (स्तो) यह कर्मेश्व सहित सामी (अप्या) आस्मा (उदिण्मे) कर्मोके वदवसे प्राप्त (क्षे) निस (शुद्ध) शुन्न (जद्धस्य) अशुम (यां) आक्षो (क्षेरे) करता है (स) बही आस्मा (तेण) उस मावके निमित्तसे (विश्वेष्ट) माना महार (योगालक्ष्मण) पुद्रक कर्मीसे (क्षेत्री इदिंश) क्षेत्र हुन्न होनाता है।

विशेषाध-वह कामा यथि निश्चवयो हुन्हर हुन्न स्थापका भागे हैं नथा उद्यहतनवस्ये असादि बुक्रेस्टर्स क्रा. भिक्त वससे मागो गेना हुना निमेक श्राय कर कर्मन क्रान् स्वाने भिक्त को उद्योग सामा उपहें कर्मन ने गुण्या स्वाने भिक्त को उद्योग साम शुण्य कर कर के हुन्छ क्रा क्रा स्थापन कराने भिक्त को उद्योग साम शुण्य कर कर कर कर कर स्वाने प्रशासक होता नरामाहर क्रा क्रा क्रा कर कर्मीने यस सामा है। यहां कर कर हुन्ह क्र क्रा क्रा क्रिक्टर १६०] श्री पंचास्तिकाय टीका । निमित्तसे नैसे तेलसे लिस पुरुषोक मलका वंघ होता है वैसे इस

सो द्वयवन्य हैं यह सुजका अभिवाय है।

भावाय-इस गायामें आचायने बन्यका स्वरूप बताया है।
पुदलकार्मण जातिकी बगणाएं सब्ज ओक्से फेटो हुई हैं। वे बगणाएं
सात्यकी योगप्रक्तिक परिणमचसे खिंचकर आस्माके सब मदेशोंमें
आकर छानाती है जयान एक क्षेत्रावगाहरूप सम्बन्ध कर लेती

अशुद्ध रागी जीवके साथ कर्मपुद्रलोंका सम्बन्ध हो भाता है।

हैं, इस हीको द्रव्यवन्य कहते हैं। इस बन्यके होनेके निमित्तकारण इस आरमांके ग्रुम तथा जहान आव हैं। इस मावींको माववन्य कहते हैं। ये भाद आरमांके स्वामाविक माव नहीं हैं जीपाधिक माव हैं। आरमाका स्वमायिक आव शुद्धोपयोग है नो वंपका नासक हैं। पूर्व गांवि हुए मोहनीयकर्मके विवेक जयांत् कर्मसमूर नव

द्रवय, क्षेत्र, फाकादिक निमित्तते उदय होते हैं तब जात्माका भाव म्बय राग, द्रेप, नोह, कृष हो जाता है। यही भाव कर्म पेष होनेके निमित्त हैं। प्रिय्वादर्शन और कोषादि बवाय पंपके मूल कारण हैं इन ही के कारण नी वप होता है उसमें दियति तथा अनुनाग पड़ नाने हैं। जिनके विष्यात्व भाव होता है वे शुम प

जनुसान ५५ तात है। त्वत्व क्षित्वाच काव हुए व व व व व व व त्वाच कावती के अवकार पुष्टिमें करते हुए उनमें तत्त्वय होतावे हैं। शुद्ध आमरीक परिवासिकों तथा अतीन्द्रिय सुम्यकों न पहचा-नते हुए वे दिवा कृत्व व मोलाहिक बाल मयांबाके कोममें पड़े हुए ही मुंबे जिया करों हैं जिससे उनके साह कर्मका बंग पहला

हुए ही सब 13 या करते हैं जिससे उनके गाह कमेंका येप पहता है परन्तु में सप्पन्टडों होने हैं वे अद्धानमें मसारको व उसके सबै कार्यको ट्रेंय नर्यात त्यामने बोम्य समझने हैं। क्यायीके उदयके हात उनके पाने संस्कारके बया गान होय होना है जिनको वे होन्छ सेन करने हैं कथानि जान्यबनकी मंदनाने उन सामहेन मारीको दूर मही बर सक्ते हैं किन्तु उनके बदामें हो नाना कथार पन, बदन, कपाके बनेन वनने हैं जिनमे में पंचाई मान होनाने हैं, पान्तु पायक्टिटिक सम्मोद निस्सादिक्षी अपेक्षा बहुन एनके होने हैं इसने उनके बच भी बहुत कम स्थितिय बहुता है-जिनका जिल्ला सामाय कपाने जान्या उदमा उदमा बया भी हनका होना मान्या समाये कालोको पंचाक असावके निये मान्यव स्वाहमें होने स्वताह समाये कालोको पंचाक असावके निये मान्यव स्वाहमें होने स्वताह समाये कालोको प्रावहण बगास्वाह सामहित्य बाहर दीनसामवाहका अपन्यान करना चाहिये। यही अपनाम समाने देए हुए सोइक्सेक अनुसाम वा प्रचान वाक्तिको नियेत कर देगा। बहै उनमें अधिन तथा पायानकान वाकिको नियेत

मूच महारक्ष काम्यहरूप वय शुव व अशुम कार्योपे अहंकार वृद्धिम होता है। जेमा स्वामी वृद्धुहाकार्यने समयमारामें कहा है— सही करेंद्र आंद्रेस अभ्ययमाणेय तिरिवणेदार ।

देशमणुवेशि सच्ये पुण्य पार्व अयोगीयह ॥ २८५ ॥

भागार्थ का श्रीव रूपान्ति अध्यवसानके कारण सर्व हो नियंत्र नरक, देव व सनुष्य सम्बन्धी जनेक प्रकार ग्रुप तथा असुन भावेकि अथवा कर लेला है. ये अशुद्ध भाव भेरे स्वभाव हिं

मारिन जोवाविमि य सर्ने उ एवं मञ्चर्यासद्ते । ॥ ए.यं बंधनं वा पुरवस्त य वधनं हेर्दि ॥ २७३ ॥ १६२] श्री पंचास्तिकाय टीका । भावार्थ-में नीवोंको मारता हुं ऐसा जो द्वेष रूप भाव है

जिलाता हूं ऐसा जो ज्ञुम राग रूप मान है वह पुण्यका नांधने-वाला है। बाहरी पदार्थ बंघके कारण नहीं हैं। बन्धके कारण भीवके अपने ही औपाधिक मात्र हैं इसलिये इन मानोंको दूर करना चाहिये । उत्यानिका-आगे वहिरग व अतरंग बन्धके कारणका उपदेश करते हैं-जोगणियितं ग्रहणं जोगो मणवयणकायसंभूदो । भावणिभित्तो यंथी भावी रहिरागदीममोहतुदी ॥१५६॥ योगनिमित्तं घटणं योगो मनोवचनरारमभनः ।

वह पापका बांबनेवाला है तथा नी नीनोंकी रक्षा करता हूं-उनकी

भावनिभिक्तो यन्त्री भावो रतिगगंद्वप्रमोत्युवः ॥ १५६ ॥ अन्वय सहित सामान्याथ-(नोगणिमितं) योगके निमित्तसे कर्म-पुद्रलोंका ब्रहण होता है। (बीगी) बीग (मणवयणकायमंमुदी) मन, बचन, कायकी कियासे होता है। वधी) उनका वध (भाव-

णिमित्तो) भाषोक निमित्तमे होता है। (भाषो) वह भाष (रदिसग-दोममीट मुदो) शति, शग, द्वेप व शोहमहित मबीन होता है ।

रिशेषार्थ-क्रियारहित व निर्वि€ार चेनन्य श्रोतिकृप भावमे भिन्न मन, सबन, कायकी वर्गणाके आवस्त्रनमे व्यापाररूप सुआ आगमपदेशों हा इलनचनन रूप लक्षणधारी योग है, मो बीर्यात- 🤇 राय कर्मके क्षयापदाससे कर्मीको ब्रहण करनेका हेतु होता है। / रागादि दोषोस रहित चनन्यके बदासकी परिणतिसे भिन्न मो दर्शन-मोह और घरितमोइमें उत्पन्त हुआ माद सो रित, रागदेव मोह

१६४] श्री पेपासिकाय दीका ।

पुराना प्राप्त हो हे एवंच सामायकाय सुनार ।

श्री तमा तो दू राजो कामायकाय जामे । ११६ ॥

प्राप्त मन, वयन, कामी मुना इस श्री के भी र पुरा (राफी सारे साम काकि उद्यों), जो क्यों हो सी देने में काम सर्गि है उपयो योग करने हैं ।

बरण्यां बदी बोग है जिससे इस्ट्रीझ भारत होता हैं, तथी प्रश्तिका परेपात्रक होता है। बोगोंक तील परिश्वतरी अधिक बसंदर्भवाग स.से है नवा गेड् परिश्वतरमें क्या आगी हैं कर्येंड सैंग बींड गाननामों ही प्रदेशान करते हैं।

चार भागताल को भरताल घर व का भी भेगाराल को भंदेरी बड़ा है -अह इतिहार अफाने व बना वर्गावर्षकामाहरें के कुर्याद वरस्तुमाल अहमान हे आबादिकारी के मान का मोर्टाक सहात्वामाल अहमान है आबादिकारी के मान की

जैतार के स्वयं के राष्ट्र वेशा हो सहित है जहां असी भागी में अन्द्र बर्गात कार्यकार के द्वीचे अस्तव पहेला के की अन्द्र राज्यात कार्यकार है असर वी सेताय कर्तीक कराज स्वरंक सुरक्तिक करिया के वर्गिक साहित और करिया

स्माने का व हरी है। स्मानकानेका एडं शहरका स्वाप्त हरीयाहि ह स्मान का हुकर या कार्य इसकार शहरायाहि है।

अपू के के प्रकल प्रवास के इंग्लिंग के इंडर अलाह के लिए के लिए के प्रकल के प्रवास के प्रवास के लिए के प्रवास के

कार्याच्या । पान कार्या, हे अपूर्यांक्य के शहर विशेष किया है। अब ्रांच्या से सम्बद्ध के शहर है तह शिवासी हैं। इ. स्थाद कर्यों से सम्बद्ध के शहर है की स्थाप के स्थाप के स्थाप की स्थाप की स्थाप की स्थाप की स्थाप की स्थाप क

१६६] श्री पंचारिनकाय टीका ।
अधिकतासे अधिक व क्यायोंक संद हीनेसे कम अनुमागवंच होगा

भोंडी मंदतासे अधिक व क्यायों ही तीवतासे कम अनुमागरण्य होगा । जेसा श्री गोग्गटसार क्ष्में अंडमें कहा है— शुह्रपपदीण विकोटी तिन्ये असुद्वाण सांकिटोसेल । पियरादेण जहण्यों सह्याया स्वाद्यपपदीणी ॥ १६३ ॥ मातार्थ-मातार्वदायीय आदि शुन फटियों का तीव अनुमाग बन्ध विश्वस्थाय या संवद्यपपदी तथा मंद अनुमाग सिंहरामात्र का तीवक्षणयसे होगा तथा आसातार्वदाय आदि अशुम मटिवों का तीव अनुमाग सिंहरामावसे व मंद अनुमाग विश्वस्थायसे होगा । इस तरह यहां यह बताया गया है कि योग और क्याय ही

तथा सातावेदनीय, शुभ नाम, उचगोत्र व शुभ लायु कर्मोंने इपा-

हस तरह यहां यह बताया गया है कि योग और क्याय है।

सार महार बन्यदे कारण है । क्योंकि कसाँका फळ अनुमारके
आनुसार पड़ता है । इसलिये आत्महित सोगीको उचित है कि वह
अपने गावेंमिं विद्युद्धि १४स्ते, शांति भावको बारे । दया, अना,
संतोप, परोपकार भाव व मंद इंदिय विपवका शा रक्ते । न्यायपूर्वक परको किश न पहुंचाता हुआ जीवन बितावे । नितना काय
मंद होगा उतना ही पुण्य कमिने अध्क य पापहनीमें कम जनुमार
पड़ेगा । इसका फळ यह होगा कि अनतक यह संसारी जीव
शक्तिका लाभ न कर सके तक्तक इसको सुसके कारण काहरी
सामान प्राप्त होते रहेंगे-दुअन्ते कारण करप परा्पिके सम्बन्धि
वचता रहेगा । इसीजिय अधिकानिय क्रिके ग्रहस्थोको नित्य दान
पुनादि कार्योमे ठीन रहनेकी आज्ञा दी है—

नादि कार्योमे लीन रहनेकी जाज्ञा दी है— देवाराधमपुत्रमादिवहुषु व्यापारकार्येषु सत् । पुष्यापाजनहेतुषु श्रांतदिनं संजायमानेष्यपि त

१६८] श्री पंचारितकाय टीका । फहे गए हैं जो कर्म रागादिकी उपाधिसे रहित व सम्यक्त शारि

माठ गुण सहित परमात्म समावके ढक्कनेवाछे हैं।इन द्रश्यकर्मका कारणके भी कारण रागादि विकल्पसे रहित शुद्ध आत्मद्रव्यकी परिणतिसे भिन्न भीव सम्बन्धी रागादिमाव हैं-क्योंकि भीव मंत्रंधी रागादि भाव कारणोंके अमाव होनेपर उन चार द्रव्य पत्रयों या कारणोंके रहते हुए भी जो जीव सर्व इष्ट अनिष्ट पदार्थोंने ममता भावसे रहित हैं वे बन्धको नहीं प्राप्त होने हैं। यदि नीवके रागा-दिमार्वोके विना भी इन द्रव्य प्रत्ययोंके उदय मात्रसे बन्ध होनाता हो तो सदा जीवके बन्ब ही रहे क्योंकि संसारी जीवोके सदा ही कर्मीका उदय रहता है। इमलिये यह जाना जना है कि नवीन इस्म कर्मीके बन्धके कारण उदय प्राप्त इव्य प्रत्य है, उनके भी कारण भीयके रागादि भाव हैं। इसलिये यह सिद हुआ कि न फेवल योग ही र बंधके बाहरी कारण हैं किन्तु द्रव्य प्रत्यव भी वधके वाहरी कारण हैं। भावाध-इस गायामे आचार्यने यह दिखलाया है कि पूर्व-बद्ध इट्यकर्म भी उदयमें आते तृए वधके कारण होनाते हैं-परन्तु वे उसी समय वयके कारण होगे जब आत्माके भावोंमें विकार भाव रागद्वेष मोह रूपमे उत्पन्न होगे । यदि रागादि विकार भाव न हों और यह आत्मा अन्य परिवातिमें जीन रहे तो वे द्रव्यक्रमें उदय होकर झड जायगे, नवीन वधके कारण नहीं होंगे। जेसे कोई नीव क्षयोपदाम सम्यग्द्राटी है और वह लगातार ६६ मागर तक ऐसा श्री बना रहता है-इस जीवके देशघाति सम्यक्त प्रज्तिका ही उदय 'है, अन्य ६का उपसम है। चार अनतानुबधी क्याय और मिध्यास्व व सम्यामध्यात्त्व सर्वधाती प्रकृतियें हैं । इनके निषेक्र इस ६६मागरके

१७०] श्री पंचाास्तकाय टीका । रागादिमान भी न होंगे । इन कमोंकी स्थिति धटाने, अनुमाग

पटाने व इनके बन्धका जमाव करने व इनकी निर्मेश करनेका एक मात्र उपाय शुद्ध जात्माकी ओर सन्युखता है। नो जात्मव्यानी व स्वात्मालुमवी हैं वे ही कर्मोकी वड उस्ताइते हुए कर्मोसे विजय पाते हुए चले जाते हैं। गासामें यह भी बताबा है कि जो दृष्य प्रत्यय मिध्यात्वादि

मंधे पड़े हुए हैं उनके भी कारण रामादिमान ही ये । रामादिमान बोंसे ही उनका भी मंघ हुआ या वे ही शमादिमान नबीन द्रव्य-कर्मोंके भी संघके कारण हैं। सारपर्य यह है कि जिसतरह बने आत्मानुभवका पुरुपार्थ

करना चाहिये । सम्यसारकस्त्रामि श्रीजमृतवेदाचार्यं कहते हैं— करमिय समुपाचिकत्तम्येकता या । अपतितमिद्यमस्त्रमधितदस्य्यद्यसम् ॥ स्तत्रममुभवायीऽजन्त्वीतन्यविदम् । ॥ बहु व क्षत्रु यक्षाहत्यमा साध्यसिदिः ॥ २० ॥

भावार्य-जिस तरह होसके सम्बन्धमंत्र, ज्ञान, चारित्रकी एकताको प्राप्त होकर उस एकतासे न गिरती हुई व ब्यनना चैतन्यके निकट्ठण, तथा प्राप्ट प्रकाशमान ब्यामनाविन्दा हम निरन्तर अनु-भावत्र कर्म, तथा प्राप्ट प्रकाशमान ब्यामनाविन्दा हम निरन्तर अनु-भावत्र कर्म हमाने विद्यास प्राप्त स्वापने विद्यास प्राप्त हम्मनी विद्यास प्राप्त स्वापने विद्यास प्राप्त स्वापने विद्यास प्राप्त स्वापने विद्यास स्वापने व्यापने इंट्रकर युक्तिकी प्राप्ति नदी होसकी ।

म्रांत नहीं होसकी । इस तरह नव पदार्थेक कहनेवाले दूसरे महाअधिकारों पंपके व्यास्थानही मुख्यवासे तीन गायाओंके डारा नवमा अन्तर अधि-कार पूर्ण हुआ ! पीविका—जाने शुद्धात्मशुमन कव निर्विक्टण समाधिसे सापने योग्य व कागम मावासे समादि विकल्पोसे रहित शुक्रप्यागते सापने योग्य मोशक जाधिकसमें नामायुं चार हैं। इनसेंसे
माया नोग्न, केरलजानको उत्पत्ति, जीव-मुक्तपना नवा मारहंत पर
इनका एक हो कार्य है, इन चार नामाँखे युक्त एक्टेग नीग्नके
व्यान्यावधी गुप्तजाते "हेंदु नामाये" ह्वादि सुन वो हैं। उसके
पीछे अयोग केशके गुप्तचानके जीतेम सम्बन्धे ग्रेप अपाति द्वायकर्मींचे नोम्न होती हैं ऐसा चहते हुए "वेशक्याणमनमा" इत्यादि
सून दो हैं। ऐसे चार गामाओं कहत हुए "वेशक्याणमनमा" इत्यादि
सून दो हैं। ऐसे चार गामाओं कहत हुए "वेशक्याणमनमा" इत्यादि
कर्मींचे नोम्न होती हैं ऐसा चार गामाओं कहत हुए "वेशक्याणमनमा" इत्यादि
कर्मींचे नोम्न होती हैं ऐसा चार गामाओं कहत हुए "वेशक्याणमनमा" इत्यादि
कर्मींचे नामायानी स्वायाणमं स्वायाणमं स्वायाणमं स्वाप्त
कर्मांचे नामायानी स्वयुव्याणनेक हैं —

हेदुमभावे जियमा जायदि जाणिस्स आसवणिरोपो ! आसवमावैण विजा जायदि कस्यस्स दुणिरोपो !!१५८:!! सम्मास्सामावेण य सम्पन्न सन्वसीयद्रस्ती य १ पावित हेदिवरहिट अन्यतार सुहण्योने !! १५० !! न्यावे दिवासाय सन्ति आसवस्योप । असवस्योप किस वर्षे हम्मावद्योगे !! १५८ !!

हमाग्रमक्षे स्माने स्वानेवदशी व । प्रामीनिकार्गरमानावाक समानेनन् ॥ १८९ ॥

अञ्चयसहित सामान्याधि है हुमानों) मिरणाश्व आदि द्वाय कार्नेक दश्य कव करणांक व शहनेका (विश्वसा) नियमसे (वाणिमा) नेद निवानी जान्मार (आसविनोधी) समारि जानव सार्वोच्चा रहना होता है। (आयवानोच्च) समादि जानव सार्वोच्चा (समास जानव पाने कार्योच्चा (स्वाप्ति कार्यक सार्वाच विना (समास नवीन द्वाय कर्मीच (द्वा) भी (विनोधी) रहना हो जाता हैं। (य) क्या (क्यास आयोचा) जार पानिवासमांक नाड

१७२] श्री पंचालिकाय टीका।

होनेसर (सञ्चण्ट्र) सर्वेष्ठ (य) बीर (सञ्चलेगद्रश्मी) हार्र लोहस्रे देसनेवाला (इंदियरहित) इंदिवाँही पराधीननामे रहिन (अन्वावर्द) भाषा या विभा रहित व (अणेत) अन्त रहित (मुट) सुन्नहो (पविदे) पा लेता है।

प्रशेष उत्तरमें कृतने हिं-क्यों के आवश्याम शान्त मंतागे जीवज्ञा जो हायीपशिमक विकृत्यक्रय भाव है वह अनारिकालमें मोहक उदयके बदा शाग्रदेय मोहकर पिणमां हुआ अगुद्ध होग्हा है यही भाव है । अब इस भावमें मुक्त होना किसे होता है मी क्ट्रते हैं। जब इस आवमें मुक्त होना किसे होता है मी क्ट्रते हैं। जब यह त्रीव आगमकी भाषासे कार आदि लक्षिकों भात करता है। तथा अव्यास्त भाषाने गुद्ध अग्याके मन्तुम्य परिणासकर स्वमंबेदन शानको पाता है तब वहने मिर्च्यास्त आदि तात पर्वत्य सिवामक होनेपर पित उनका सबोपश्चम होनेपर पित उनका सबोपश्चम होनेपर सित पर्याप्त स्वाप्त स्

विशेषार्थ-मात्र क्या है व उसमे मोल होना स्या है-इम

अनंत ज्ञानादि । वस्त्य ह इत्यादि भावना व्यस्त्य आत्मार्क आश्रित धर्मस्यानको वाक्त आगममें कहे हुए क्रमसे असयत सम्यग्दिको आदि लेकर चार गुणस्थानोके मध्यमेसे किमी भी गुणस्थानमें दर्श-नमीहको खयकर क्षायिक सम्यग्द्रश्री होनाता है। फिर मुलि अव-स्थाते अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोमें च्यकर आग्या सर्व कर्म प्रकृति आदिसे भिन्न है ऐसे निर्मेश विवेकसे उमोतिक्त्य प्रयन्त गुरुद्धाना अपूर्वन करता है। फिर राणदे रहा चारित-भिन्न हो स्वेकसे उमोतिक्त्य प्रयन्त सुक्त आदिस-भिन्न हो स्वेकसे उमोतिक्त्य प्रयन्त सुक्त आदिस-भिन्न हो स्विक्त सुक्त खारित-भिन्न हो स्वेकसे अस्तान सुक्त अस्तिन भिन्न हो स्विक्त सुक्त खारित-भिन्न हिस्स सुक्तानमानुन कर्म स्व

भीतराय चारित्र हो भाग कर लेता हैं भी चारित्र मोहके मारा करनेमें समर्थे हैं। इस बीनराम चारित्रके द्वारा मोहकमें हा क्षम कर देता हैं-मोहके समके पीछे सीण क्याय नाम चारहवें गुज-स्मानमें अंतर्जुर्सने कान ठहर कर दूसरे गुफ्क्यानको प्याता है। इस प्यात्रके कानायल, वर्जनायल, व अंतराय इन सीन पातिवा कर्जों हो एक साथ इस गुज्यवानके अंतर्में जड़ मृत्ते दूरकर केयल-वान आहि क्षेत्रचाह्यवानक्ष्य मान-पीक्षड़ी धास कर सेता हैं। यह साथ है।

भावार्ध-इन दो गायाओंमें आचार्यने भाव-भोक्षका यह स्वरूप प्रमुख है कि जारमा अपने स्वभावमें होमावे अपनि सर्वहरू सर्वेदर्शी, व अनेतमुली व परम बीतराय होमावे-बात्माकी पर-मात्मा अवस्थाका नाम मात्र मोध है। जिस समय ज्ञानावाणादि चार पातिया कर्म आत्माकी सत्तासे बिल्युक छुट जाते हैं छत्र आत्माका निज स्वभाव भगट हो नाता है । इस स्वभावकी मगटता उसी समय होती है जब आत्मस्यभावके धानक कर्म न तो कोई सत्तामें दीय रहें और न इनके नवीन बंधके कारण ही वियमान रहें-पढ़ते वह जुके हैं कि मूज वर्षके कारण मिष्य दर्शन, अवि-रति क्याय तथा योग हैं । यह आत्मा कव शाधिकसन्यण्डारी होमाता है 📟 मिरवाउदीनरूपी धारण विस्त्युल सदाफे लिये जातः रहता है। अब यह महाबती साचु होनाता है तब अविशतिहरू कारण भी नहीं रहता है, जब की जह पायमें यहेच जाता है सब क्याय भी नहीं रहता-मात्र योग अर्डत परमात्याके नेरहवें गण-स्थानमें रहता है परंतु क्षत्रायके विना वह बोग क्योंको स्वीचने

१७४] श्री पंचास्त्रिकाय टीका ।

हुए भी उनको एक समयसे अधिक नहीं रोक सका है। विना कपायके कर्मोमें स्थिति ही नहीं पड़ती है। इसनरह इन कारणेकि जपाय होनेपर वेपके निभिन्न कारण राग हैप मोहमान आहमार्ने नहीं होते हैं। आश्रमके रुक मानेपर व पिछड़े क्रमें पनंत्र्यान तमा शुक्रप्यानकी अनिसंधे सरक होमान पर यह महारमा जीक्सुक परमारमा या मायमोशक्त्य होमाना है और तब आहमापीन जती-न्द्रिय आनंदका भोग बिना किसी बिन्य बागुके अनंतकाल तक

िन्द्रय आनंद्रश्वा भोग विना किसी विन्न वायाके अनंतकाल तक करता रहता है। इस गामामें आचार्यने अरहंत पदरर लज्य दिन्याया है। इस पदर्शे चार अपातिया कर्म-चेदनीय, आयु, नाम, गोज दोर रहनाते हैं इससे द्रव्य मोझ इनके भी दूर होनेपर होगी परन्तु गावोंमें विकार फरनेवाले कर्मीक नष्ट हो जानेवर शावगील तो होगई वर्मीक मूल संसारका कारण गोहनीय करें हैं, इसको तो इन्होंने पहले हो नप्तनुत्यन अरहात सकरप आप्त सकरपमं इहा है—

संसारभीद्रतीयल्हा शोचयतिश्व अर्मीविनाः ।
संसारिन्दा दरी हात्या पदमारमेति आगितः शहर ॥
सर्वशः स्वेचीममु सर्वद्य पदमा विभूतः।

सर्वभागः नदा बन्धः सर्वसीरवारमको जिनः॥१६॥ रागव्यादयो वेन जिताः क्रोमदासदाः। कालकार्राविनिमुक्तः सः जितः परिकारितः ॥२१॥ येन दुः वार्णये योगे मानानां प्रापिनां दूया-सांत्यमुलः कृतो चर्चः संकरः परिकारितः ॥२६॥ भावपि-वाणियोने वो गोहनीय कृति होसार कृति हैं।

इसके नाश करदेनेसेवे मसारियोंसे उत्स्छ आत्मा होगए हैं इसलिये

जरर्रत मगवानको परमास्ता बहु गया है। वे सर्वेष्ठ माननेवाटे, गर्व तरफ करपायक, पारे दिशाओं में मुगवा दर्शन देनेवाले, झानकी अपेशा गर्व प्यापक, मिनकी दिल्याकी मर्व आगवाक होगाती है, जो सात्रा बन्दरीक हैं, सर्व प्रश्नर सुगति है स्वाक्ष्मोंके जीतनेवाले जिल हैं। निमने गरादेशादिकों व कर्मक्रियों यहा सीतिकों जीत दिया हैं व जो कालवक्ष्म कर्माट्ट संगाके अन्तर्गे हुए गर्या हो उसे ही कि कहा गर्या है, उसी करहेवडों संकर कटा गर्या है व्योक्ति उसार में प्रमान हु सक्त्यी समुद्रतें इन्ते हुए ग्रावियोक उद्यारामें प्रमान हु सक्त्यी समुद्रतें इन्ते हुए ग्रावियोक उद्यारामें पीता प्रमान हु सक्त्यी समुद्रतें इन्ते हुए ग्रावियोक उद्यारामें पीता प्रमान कराई स्वाचा है जो दवा और सुक्त्या मूळ है। देने माय-मोइक्टम कर्माई स्वाचा सत्र ही प्याप्ता और है। इस सरह मावनीवक्रम सन्हर्फ करने हुए हो गायाएं करीं।

परवानिका -भागे बेहनीय आदि गेप अपातिया कर्म चारके विनाहारूप जो सबे इध्योदी निजंता उसका कारण जो व्यान है उमका स्वरूप कटने हैं-

हमणणाणसम्बागं साणं जो भ्रणणहण्यसंतुर्च । त्रापदि जिल्लाग्रेट् सभावसर्ग्हटस्म साधुस्म ॥१६०॥ व्याजातसम्बद्धः वत्र तो न्यन्त्रसम्बद्धः ॥१६०॥ सम्बद्धाः सम्बद्धाः वार्षः ॥१६०॥

अन्ययमहित माधान्यार्थ-(मभावनहिद्दम) शुह्र स्वता वर्द भागे (मानुम्म) सानुहे (ण कांग्रेट्ट) निवेगक्का आगण (आण) तो ज्यान (त्यादि) ज्या होता है वह (व्यवजाणतम्मण) रहेन और ज्ञानमे परिपूर्ण मार्ग है तथा (अज्यारव्ययनुत्त थी) यह अन्य इट्टरमे मिना हुआ नहीं है।

१७६] श्री पंचारितसाय शहा ।

विभेपार्थ-पूर्व गायांने निष माप्रगोशका केप्यीमगवानका मणैन किया गया है वे निविकार परमानंदनई अपने ही आज्ञाने उग्पन्न गुमामें तूम हो जानेये इवे विचाद रूप सांमारिक सुमा त्या दु मोद्र विद्यारोमे मुक्त हैं । देवनजान न देवनदर्जनदी रोद्यनेगने आयरणेकि विनाशमें केपण्यान और केवलार्शन सदित है, सहज-शुद्ध नेतन्यमायमे परिज्ञान करनेमे तथा उदियोक ब्यापर आदि बाएरी द्रव्येकि आजन्यनके न रहनेमे वे परद्रव्योह संयोग रहित हैं, अपने स्वयूपमें निश्चल दोनेसे स्थिर चनन्य स्वमावके बारी हैं। उनके ऐसे आत्मस्यभावको तथा ध्यानके फल स्वरूप पूर्व संचित्र क्मोंडी स्थितिके विनास और उनके गलनेको देसकर केवली मग-बानफे उपचारमे ध्यान बढ़ा गया है क्योंकि निर्मशक्त कारण घ्यान है और निर्मश बहा पाई जाती है, यह अभिपाय है है यहा शिष्यने प्रश्न किया कि केदली भगवानों के नी यउ पर-

द्वरारे आलस्यन प्रश्ना हुआ हि करना गर्माना न स्व सर इंदरीरे आलस्यन स्तिन स्थान करा है भी स्रेट क्योंकि केविलिंदि स्वान उपचारों ही ब्हा है परन्तु चित्रकार आदि प्रस्मोनें यह कहा गया है कि उप्तान्य अर्थान् अपनंज्ञ तपन्त्री द्वय परमाणु मा भाव परमाणुक्ती भावकः देववज्ञानको उत्तल करने हैं यह स्थान परदायके आलंब में रहि है कैसे घटता है ? आचार्य इसीका समा-धान करने हैं। द्वय परमाणु उाठस्त्रे द्वयको सुरमाको तया भाव परमाणु दाठस्त्रे मानकी मुस्तनाको लेना योग्य हैं, पुरस्त्र परमा-कृष्टी लेना योग्य नहीं है। सवाविसिद्धिको टिप्पणीमें यही व्यास्थान कहा गया थी। यहां भी इन विवादम पड़े बावनका वर्णन किया माना है। यहा द्वयर शब्दम्य आत्म द्वय हेना योग्य हैन्या परमापुर। वर्ष है समद्वादिशी उपाधिमें १८७ मुक्त बराया-बार्याज्य सुरम्माचा शाम द्वाय परमाणु है। बहाँ सुरमास्त्रा स्मीजिय में गहें हैं है वह निर्देशक समाधिक विषय है। ऐसा

ह्रव्य रुप्ता, क्राइट्डा व्यास्थान नातना । मात्र प्राच्मे उस्परी आग्य-ह्रव्यक्ता, यसपेत्रम क्रान परिवास रेना योग्य है। इस मात्रका प्रस्ताक नम्बान ग्रामारि विद्याप शतिक ग्राम परिवास सो भाव प्रस्तु है। इसमें गुरुपताना स्वीतिये हैं हि वह इश्वित कींट समसे विक्रवींका विवय नर्रो है। प्रेमा भाव प्रसाशका व्यास्थान मात्रना योग्य है।

हिना गुरुपयना रूपीतिय है। वि वह दीक्षेत्र शर्र समस्त्री (बेक्टरांक्षेत्र) विषय नरी है। देशा आब सम्माशुक्त ज्यान्यान मानना योग्य है। यहां यह आह है कि प्रयम सहस्त्राक्षेत्र तिरोहि निये अपने चित्रारों नियर करनेके टियं, सम्रा विषयाभित्राय काच स्थानमे घय-नेके नियं सम्मा गुक्तिक कागण ऐसे चयरमोटी साहि पाह्रव्य

नेविद्दे निर्दे प्रत्यक्त कुर्व स्थान स्थान कुर्व स्थान निर्दे हैं, वस्तु वब वब्दवर्थ क्षिट्रे वाह्रव्य स्थान काने बोब्ब होने हैं, वस्तु वब व्हन्तर प्यानके अस्माहमें निक्त क्या होने बोब्ब होने हैं, वस्तु वब वहन्तर प्यानके अस्माहमें निक्र कर्म के विद्या के कि विद्या कि विद्या के कि विद्या कि विद्या के कि विद्या के कि विद्या के कि विद्या के कि विद्या कि विद्या के कि विद्या कि

हार। क्षण नाम ना जवान गर अन्तर्मणी नी वयास क्षण्ये वारण काना है या अनुनव पाना है, मी स्था मध्य हो बाता है। इस नाह प्रमाय अम्बा महिल निज्ये तेवा व्याह्मसम्म स य य सम्बद मार्थ्य मार्थी जनकर प्रेयंक सर्वाये रिवार नहीं कार नोम्य हैं।

नोग्य है। भावार्थ यहा यह कथन है कि सम्पूर्ण द्वस्य करीला क्षय

,oc.] श्री पंचारितकाय टीका 1

होना भी ध्यानमें ही होता है-सर्वीष्ट्रहत्य मोशका भी धरण ब्यान है। केवजी मगरान में। चार मानिया कर्न नाग कर नुके हैं और निनको होत चार अपानिया कर्न नाहा करना होत है-बाह्य-बर्पे प्यानका बुछ उपम नहीं करने हैं-उनका तो बुछ हुद स्वरूप होग्हा है वह मानो ध्यान ऋप ही हैं । इमीमे वर्डा प्यान उपनार मात्र है. वयोकि वहां व्यानका फल निर्मराका होना देखा भाता है इमीलिये बड़ां ध्यान मात्र उपनारमे स्टागमा है। केवली

महाराम अपने स्वमावमें ही विराममान है, पूर्वज्ञान तथा दर्वनमें पुर्ग है. उनका यह स्वमाव ही निनेराक्षा कारण है। अग्हेत मग-बानमें आत्मस्वमावका रंजनात्र भी विशेष नहीं है। तेरहर्षे व चीद-हुनै गुजम्मानमें सुरम बोगोंडा परिजयन व अयोग मानडा होना ब कमोरी निर्मरा होना देखकर ही तीसरा स्त्मक्रियापतियाति व चीथा व्युपरतक्रियानिर्शते शुरुव्यान बहा गया है। वास्तवमें

मुक्तिका उपाय स्वरूपमें रत होना है जैमा श्री अमृतचंद्र नाचा-

र्यने समयमारकलशामें कहा है-निजमहिमरतानां भेदविज्ञानगरा। भवति नियतमेषां शुद्धतस्वीपलमाः व थचःलतमसिलान्यद्रष्यदृरे स्थितानां । मचित स्रोत च सस्मित्रज्ञय कर्ममेस्स ॥ ४.६ ॥ भावार्थ-नो भेद विज्ञान व स्वपरके विवेककी शक्तिसे अपने

आत्मा ही महिमाने रत हैं उनको अवस्य शुद्ध तत्त्वका लाभ होता है। इम शुद्ध तत्त्वक टाम होनानेपर जो सर्व अन्य द्रव्याँसे 🛭

निश्रकतासे दूर तिउने हैं अयोन मात्र आप आपको ही घ्याते हैं उनका द्रव्यकर्मीये मुक्ति होनानी है।

परपानिका-भागे सर्वेगे छुटना बड़ी द्रव्यकोश है ऐसा इटने ट्रें---

जो संदरेण जुचो जिज्ञारमाणीय सञ्बद्धम्माणि । बरगद्देदाटम्सो सुपदि अर्व नेण सो मीवसी ॥१६१॥ कः भरेल कुने निर्माणक शर्वकर्मीय । ब्यास्टर्वकर्माच्या धुवित अर्थ तेन म जोसः ॥ १६१ ॥

अन्यव सहित सामान्यायं—(यो) यो कोई (संबरेण हातो) पाम संसर सहित होता हुमा (चव) और (सन्वक्रमाणि) सर्वे क्योंकी (मिजनसाणी) निर्मस करता हुमा (ववपदवेदाउस्सो) चेद-नीय क्रमें कीर कायुक्रमेंकी सब करता हुमा (ववपदवेदाउस्सो) चेद-क्योंचे ये संसारकी (युवारे) व्याग देता हैं (तेण) इस कारणसे (में) वहीं गीय (मोनक्यो) मोक्ष स्वक्रप होगाता है अबवा अमेह नयम वहीं पुरुष मोक्ष हैं।

विशेषायँ—गरहवे गुणन्धानवनी केवती यगवान आयमीश हो माने पर, निर्विष्ठार त्यानामानुश्येष माधने योग्य पूर्ण भवरको इसने हुए, नधा पूर्ववेष कर प्रमाण गुरू आत्माव्यावसे सापने योग्य विश्वालेक मिकन कर्मोको पूर्ण निक्रमका अनुश्य करने हुए सब उनके नोवनसे स्वस्तुमने गेग्य रह तमात है तब वित्र वेरत्योय, नाम, गोन्न इन तीन कर्मोको मिबी आगु कर्मको निर्वालय स्वित्र होती है तब उन तीन कर्मोको व्यक्ति स्थितिको बाद्य कर्मके नियेष व मासाकी स्थितिको विनाद्य करनेक नियेष टर. क्यार, प्रमार, लोकपूर्ण कर्मक तर उपसे केवलीमपुरवातको करके अथवा यदि उन तीन कर्मोको विश्वति आगु कर्मके मामन नी होनी है गो केवलीमपुरवान कर्मोक

१८०] श्री पंत्रास्त्रकाय टीका । करके भाने शुरू आस्तामें निश्च बनेतरून सूरमक्रियानियानि

नाम सीमरे जुजन्यानको उपचारमे करने हैं। किर मधीलिपुन-स्थानको उन्दर्ध कर अभोगिपुनस्थानमें आने दि। यहां गर्दे कारानेट मदेशीमें आव्हाररूप एक आकारमें परिवान करने सुर्यम सम-स्ती भाकप्रव मुनास्तृतस्यके आव्वादमे नृत, वर्ष शीन कीर गुनके

मण्डार सम्बद्धित्रक्षित्रा चीचे जुद्धायान नामके परम यथाच्यात भारिशको मान करते हैं। फिर इस गुगरबानके अंतिम दो समयमेंसे पहले समधी शरीगदि बहत्तर पहतियों हा व अन्त ममयमें वेदनीय, आयुज्य, माम, गीत्र इन चार कर्मीकी नेरह प्रकृतियों हा नीयमे अन्यन्त वियोग दोमाना है इमटीको द्रव्य मीश करते हैं। सर करीमें अलग होनेपर सिद्ध आत्मा एक समयमें लोकके अग्रमायमें नाकर विरा-जनान होताने हैं । दारीरोंसे छुउनेपर मिद्ध आत्माकी गति धुमाप हुए कुम्हारक चाकको तगह पूर्वके प्रयोगमे, लेपमे रहित तुम्बीकी साह कमोंकी सगति छुटनेसे, परंडके बीनकी तरह बन्धके टूटनेसे व अम्निकी शिखाकी तरह उध्वेगमन स्वभावसे उपरही होती है। वे सिद्ध भगवान लोकके आगे गमनमे कारणमन धर्मास्तिकायके न होनेसे नहीं माने हैं-को बायमें तिछे हुए इंदियके विषयोसे अतीत व्यविनासी परमसुव्यक्ती अनत कालतक भीगने रहने हैं। भावार्य-इस गाथाने श्री कुन्दकुन्द महारामने द्रव्यमोक्षका स्वरूप बताया है। आत्माकी स्वामाविक अवस्थाका रहनाना ही

मोस है, तब आत्माके प्रदेशोंमें कियो भी बातिकी पुरूकवर्षणाका सम्बन्ध नहीं होता है—बुद्ध स्कटिकके समान व निर्मकनकटे समान व शुद्ध रहेंके वस्त्रके समान आत्मा पूर्ण स्वच्छ होनाता है। मीस दोनेपर जातमा स्वमावशे सीया उत्तर महीन्य गमन सहकारी पर्मेइच्य हैं वहांतक आक्षा नोवक जममागके उनुनातक्यमें पूर्व
इर्गारेक आकार टहर आता हैं। ध्यंत्रेष्टम सम्यंप न रहनेसे होई
विकारी मात्र या दरका या सांसारिक सुख दुन्छ सिद्ध सालामार्म
गहीं होने हैं। ये पूर्ण झालपन व पत्त बीनाग रहते हुए निरंदर
जात्मीक अनुनवमं जबनीन रहने हैं जीर न्वामायिक सुखका मोग
काने हैं। इस ही सिद्ध आलाको निषक प्रमाला, परासा, ईबार,
परामयिक, परामयेव, परास आहता व परायुक हहते हैं। सिद्ध
लात्मा अपनी सवाको कान्य सिद्धित्त सिन्द स्वती हैं-किसीमें सिक
वादी जाने हैं। जैसे ये बनादिसे बन्द आलाकोसे मिल ये वेसे
वे कांन्त कान्यक मिल हतने हैं। इस मंगवान प्रमुख अब कोई
सक्तर वान्यनक मिल हतने हैं। इस मंगवान प्रमुख अब कोई
सक्तर वान्यनक मिल हतने हैं। इस सम्यान प्रमुख अब कोई

निर्मणपुद्धो होर्ड कविका संस्तानि कामकाराणि । सावर कामुरुप्यो हिम्मणियासिका सिक्षा ॥ ६३ ॥ माणातमार्थादोगी कंतुनावरूपित हिम्मुला हिन्द अध्यावाहसहरथा वरमधुर्वामित संस्तानिक ॥ ६८ ॥ रिवासोसं सार्थ जानक सिन्धेद करनकस्मारित । मानान्त हर्व अध्यानकार्यालयास्य ॥ ६६ ॥

भावाध-र्जन धुवनमें पूजनीय करून भगवान होहर फिर शेष इनेह जानेती स्ववस्त्र नेमा पढ़ने कभी नहीं हुआ मा नेमा मिक होताना हैं और कोक कामामार्ग निवास करता है-से प्रक्र मारान आवाधमन नहीं हरने, हन्या पहला वहीं हरने, उत्तर आवाधमा नहीं हरने, हन्या पहला बढ़ी हरने, उत्तर आवाधमा नहीं हरने, हन्या पहला निवास

૧૮૨] श्री पंचास्त्रहाय टीहा । भगवान दिन। दिनीकी बदायनांके तथा दिना दिनी अनके माँ-लोक भनोकको व अनेतगुण पर्याय सहित सर्व मूर्नीक तया लगु-सींह द्रायोंको मानने देखते हैं। द्रव्यमोत्र वास्तामें बालके निम स्वक्रपका निकास है । इमीजिये ग्रहण करने सोम्य है । इमतरह द्रव्यमोदाक्षा स्वरूप दो मूर्जीने कहा गया । मार-मीश व इत्यमोक्षेके कवनकी मुख्यताने चार गायाओं में दी स्वर्जीक द्वारा दशवां अंतर अधिकार पूर्ण हुआ । इमप्रकार इन तारपर्यपृतिमें बहुने ही "अभिवंदिऊण निरसा" इस गापाठी आदि लेकर भार गायाणं व्यवहारमोशमार्गके कपनकी मुख्यतामे हैं फिर सोलह गायाओंमें श्रीव पदार्थका व्याप्यान है। किर चार गायाण अमीव पदार्थके निरूपणमें हैं । फिर तीन गायाओंमें पुण्य पाप आदि सात पदाधाँकी पीटिकाकी सूचना है। फिर चार गाथाण पुण्यपाप दो पदाधाँके वर्णनके लिये तथा छः गायाएं शुम व अशुभ आसदके व्याव्यानके लिये हैं । पश्चात तीन सुत्र संवर पदार्थके स्वरूप कथनके लिये फिर तीन गायाए निर्मरा पदार्थके व्याख्यानमें फिर तीन मृत्र वध पदार्थके बहनेके लिये, पश्चाद चार सूत्र मीक्षपदार्थके व्याप्यान करनेके लिये हैं। इसतरह दश अवर अधिकारोंके द्वारा पनास गाथाओंने मोक्षमार्गके अगरूप तथा दर्शन और ज्ञानके विषयरूप जीवादि नव पटार्घोदा कथन है। इस तरह इस कथनको प्रतिपादन करनेवाला दूसरा महा अधिकार समाप्त हुआ। पीठिका-इसके आगे मोक्षप्राप्तिके मुख्य कारण निश्चय व

ब्यवहार मोक्षमार्गमई चुलिका रूप विशेष व्याख्यानमें तीसरा महा अधिकार है । जिसमें "भीवसहाओ गाण" इत्यादि वीस गाधाएं

हैं। इन बीम मायाओंक मध्यमें केवनज्ञान, केवनदर्शन स्वमाव शुद्ध भीवका स्वरूप कृषन करते हुए भीवके स्वमावमें स्थिरतारूप चारित्र है सो ही मोक्षमार्ग है, ऐसा बहते हुए "नीवसहात्रो णाणं" "इत्यादि प्रथम स्वलमें सूत्र एक, फिर शुद्धात्मके वाश्रित स्वसमय है तदा मिय्यास्य व रागादि विसाव परिणामेंकि आश्रित पर समय है ऐमा कहने हुए "बीवसहाव णियरो" इत्यादि सुत्र एक है। फिर शुद्धान्माके अद्धान भादि रूप स्वसमय है उससे विरुक्षण पर समय है उसीका ही विशेष वर्णन करनेकी सुख्यतामे " भी पर-दर्जेहिं " इत्यादि गाचा दो हैं, पश्चान रागादि विकल्पोंने रहित स्वसंवेतन स्वक्रय स्वसमयका ही फिर भी विशेष खुनासा करनेकी मुज्यतारी " भी सब्बसंग " इत्यादि गावाएँ हो है फिर बीतराग सर्वज्ञ द्वारा चटे हुए छः द्रव्यादिके सम्बङ् श्रद्धान, शान व पंच महामत आदि चारित्रकाप व्यवहार मोक्षमार्गके निकापणकी मुख्य-सासे 'धम्मादी सहहणं' इत्यादि पांचवे स्वलमें मूझ एक है। फिर व्यवहार रत्नत्रय हारा साधने योग्य अभेद रत्वत्रय स्वहूप निश्चय मोक्षमार्गको कहने हुए "णिच्छयणयेण" इत्यादि गावाएं दो है । फिर निसको शुद्ध आत्माकी मावनामे उत्पन्न व्यतीदिय सुम्य ही ग्रहण करनेयोग्य मान्द्रम होता है वह ही याव सन्यग्द्रशी है। इस व्याख्यानकी मुख्यतामे " जेण विजाण " इत्यादि सुन्न एक है। आगे निश्चय रत्नत्रयमई मार्गसे मोहा तथा व्यवहार रत्नत्र-यमई मार्गमे पुण्यवंघ होता है इस ख्यनकी मुख्यतासे "दंसण-णाणचरिताणि " इत्यादि आठवें स्वन्त्में सूत्र एक है। आगे निर्विद्रस्य परमस्माधि स्वरूप सामाथिक बाग संयनमें टह-,. **

१८४ । श्री पंचास्तिकाय टीका । रनेको समर्थ होनेपर भी जो उसको छोडकर एकान्त्रसे सराग चारिज्ञके आचरण करनेको मोक्षका कारण मानता है वह तह शूल परसमय ऋहलाता है तथा नो उस समाधिकप सामायिक संयममें 'तिष्टना चाहकर भी उसके योग्य सामग्रीको न पाकर अशुमसे यचनेके लिये शुभोषयोगका आश्रय करता है वह सूरन परसमय

कहा जाता है, इस व्याख्यानरूपसे "अण्णाणादो वाणी" इत्यादि

गाथाए पांच हैं। फिर तीथँकर आदिके पुण्ण व जीव आदि नव पदार्थके कहनेवाले आगमका ज्ञान प्राप्त करनेसे व उसमें मक्ति करनेसे बद्यपि उस कालमें पुण्याश्रव रूप परिणाम होनेसे मोक्ष नहीं होती हैं तथापि उसीके आघारसे काळांतरमें आसव रहित शुद्धोपयोग परिणामकी सामग्री शास होनेपर मोक्ष होती है इस इ.स.नकी मुख्यतासे "सपदत्थं" इत्यादि दो सूत्र हैं। फिर इम पंचा-स्तिकाय माधत शास्त्रका तात्पर्य साक्षात मोक्षका कारणरूप वीतरा-गता ही है, इस व्याल्यानको कहते हुए ''तग्हा णिव्यु'दिकामो''

इत्यादि एक सुत्र है। पश्चानु संकोच करने हुए आस्त्रको पूर्ण करनेके लिये "मग्मण्यभावण्टु" इत्यादि गाथा मूत्र एक है। इस नग्ह बारह स्थलेंकि द्वारा मोक्षमार्गका विशेष व्याख्यान करनेके त्रिये तीसरे महाअधिकारमें समुदाय पाननिका है। प्रस्थानिका-आगे गाथाके पहले आधे भागमे जीवका स्वभाव व दुमरे आधे भागमे जीव स्वमावमें स्थिरतारूप चारित्र

मोशमार्ग है ऐसा बहते हैं-जीवसहाओ जाणं अपहिहददंसणं अजन्णमयं l

चरियं च नेमु णियदं अन्यित्तमणिटियं मणियं ॥ १६२॥

जीवस्थनातं ज्ञानसप्रतिहतदर्यनसनन्यसयः । व्यक्तिः च सर्वेनियनसस्तित्वसम्मित्तं समितं ॥ १५२॥

अन्यप महिन सामान्याप-(जीवसहाओ) जीवका स्वभाव (अप्पटिट्र) अनेदित (वाण) प्रान तथा (हंगण) द्वंत है ये दोनों (अपणामधे) जीवते विज्ञ नहीं हैं (च) और (तेष्ठ) हम दोनों अस्पट झान्दोलमें (विचये) निभ्रष्ठ कृष्ये (अधिवास) हहना सों (आलेदिये) सामादि दोषोंसे सहित बीतराम (वरियं) चारित्र (अधियं) कहा गया है। यही बारित्र भोदमार्ग है।

विशेषार्थ-इस गायाका दूपरा अर्थ वह है कि नेसे केवल-ज्ञान व फैवलटरीन मीवका स्वभाव है विसे अपने स्वस्थपमें स्थिति-रूप बीतराग चारित्र भी जीवका स्वयाव है । सर्व बस्तुओंमें प्राप्त अनंत स्वमादीको एक माथ विदीप रहण नावनेको समर्थ केवलजान है तथा उनरीके मामान्य स्वरूपको एक साथ ग्रहण करनेको समर्थ केवलदर्शन है ये दोनो ही भीवके स्वमाय है। यद्यपि ये दोनों आन वर्शन स्वामाविक शास मामान्य विशेष रूप चैतन्यमई भीवकी मनाम मना, रुक्षण व प्रयोजन आदिशी अपेक्षा मेदरूप है तथापि द्वरुप, क्षेत्र, काल, आवकी अपेक्षा अभेद है व तेसे ही पूर्वमें वहे हर नीब स्वभावमे अभिन्न यह चारित्र है मी उत्पाद, स्वय. जीव्य रूप हैं-इदियोदा व्यापार न होनेसे विद्धार रहित व निर्दोष है। नथा श्रीकंक स्वभावमें निश्चन स्थितिरूप है क्योंकि फहा है " स्वरूपे चरणे चारित्रम् " अर्थानु आत्मसा वर्षे सन्भय होना चारित्र है। यह चारित्र दो प्रश्नारका है-एक परचरित. ठग्नम स्बचनित । परचरित वह है कि मी स्वय

जीतः स्त्रमाननियतः अनिवतगुणपर्यायोऽध परसमयः । यदि कुरते स्वक समयं प्रशस्त्रति क्रमंत्रन्थात् ॥ १६३ ॥ अन्त्रयसहित सामान्यार्थ-(जीवो) यह जीव (प्रहाबिगयरो) निश्रयसे स्वमावमें तिष्ठनेवाला है (अथ) तथापि व्यवहारनवसे

श्री पंचास्तिकाय टीका ।

266]

(अणियद्गुणपञ्जओ) अपने स्वमावसे विपरीत गुण व पर्यायोंमें परिणमन करता हुआ (परसमओ) पर समय या पर पदार्थमें रत होनाता है। (नदि) यदि वही जीव (सगं समयं) अपने आसीई आचरणको (कुणदि) करे तो (कन्मवंबादो) कर्मोकेयन्यनसे (पटम-स्सदि) छट माता है । विशेपार्य-यह नीव शुद्ध निश्रयनयसे विशुद्ध भानदर्शन

स्वमावका धारी है परन्तु व्यवहारनयसे मोह रहित शुद्धारमाकी मासिसे विपरीत अनादिकालसे मोहकर्मके उदयके वहासे मतिज्ञान आदि विभाव गुण व नर नारक आदि विभाव पर्वायों में परिणमन करता हुआ पर समय अर्थात् पर पदार्थीमें रत होताहुआ पर चरि-तवान होरहा है। जम बह जीव निर्मेष्ट विवेक उबीतिसे उत्पन्न परमारमाकी अनुस्रृतिकृष बारमाकी भावना करता है तर स्वसमय रूप आत्माके चारित्रमें चलनेवाला या रत होनेवाला होता है। इस तरह स्वममयका व पर समयका स्वरूप जानकर जो कोई अब निर्विकार म्यमवेदन रूप स्वसमवर्गे लीन होता है तन यह फेवलग्रान आदि अनन्त गुणोकी पगटतारूप मोक्षमे विषरीत जो बंध है उसमें छूट जाता है। इससे यह भाना जाता है कि स्वानुभव सक्षण स्वसमय-

रूप या नीवके स्वभावमें निश्चल चारित्ररूप ही मोक्षमांगे हैं। भावार्थ-इम गावामे आचार्यने दिग्नाया है कि बास्तवर्षे यह सम्बद्धी श्रीय श्री संबंधी नहीं है सबा अनुवाधि है व प्रसाद्धान्यमान की साथ है वह र सामानुभवके बानके निवाद परिव साथ करनाइमें नहीं स्थान करता हुआ निविद्धा करनाइम व पाणिक प्यवद्धार्थ अन्त्रम कर्याम हुआ हुन हिस्सा वाशिक्षी अर्थेसा स्वत्रमय रत नहीं है तथायि अन्यान व शानहीं अर्थेक्षा वह स्वस्त्रमय रत नाम है वह अन्यवद्धान नामता है व अन्यान स्वत्रम विद्यास साथ है । अन्यवद्धान स्वत्रम निव्यास करनाइम है का अर्थेक्षा है स्वत्रम साथ है। अन्यवद्धान संद्धानम स्वत्रम नाम अर्थेक्षा स्वत्रम १९०] श्री पंचास्तिकाय टीका ।

और भी अन्य यंपको करता है, जब क्याय रहित होकर शीनभैर गुगस्थानमें शुद्धोपयोगी होनाता है तब तुर्वे पातिया कर्मों क्र सर-कर भार भीश क्टब अस्टेंड यस्मान्या होनाता है । साराय पह है कि पर पराधेंमें सम्मान भी आसमाकी तुर्देशा होगुंकी है जसभे स्वानेका जयक करता थोगब है ।

श्री पद्मनंदि मुनिने एकस्य सप्ततिमें कहा है-सर्रीचं पूर्व रहनं सर्वशास्त्रमहोर्द्धः । रमणोधेन रार्धन, तरेकं यहमें रिचर्त सहदेश तदेवेसे पर तस्य तदेवेसे पर पर्य। शब्दाराध्यं सहीकं सहीकं वर्र महा ॥ ४४ ॥ शन्त्रं जन्मत्रदश्चेदि सदेवैद्यं रातां मर्ते । द्यागिनां द्यागतिष्ठा हि तदेवैकं प्रदेशमं ॥ ॥५ ॥ श्मुश्रुवां तदेवैकं मुक्ते. पत्था व बापरः । धानम्द्राद्वि न चान्यत्र स्विताय विधाप्रयो । 1 1 र्ममार्चे।स्पर्धांत शहा तप्तस्य देशिया । यव यारा गर्द शांतं सदेव दिमशीतार्थं है ४३ है सर्वेशं परं पूर्व-मनस्यं बार्शायितिको । सदेव सॉलरण्डारकारि सार्थ निश्चे वर्ष व नतेत्र महता विचा कहरामंत्रकारेष है। भागार्थं तर्रावधन्त्रं अध्यक्षाचित्रिकारार्थं 🛊 📳

भीवाय नवं प्राप्तवसूत्रका एक मानवर्ग ही उगव रून हैं, एन दी गुन्दर नवाचीने ब्री गुरू सभी रह है, ब्री एक रून रून है, ब्री एक उभन कह है, स्थीने ब्री एक मानवन नाम है, ब्री एक राम उद्देशि है, सन्यक्ती युक्की

छैदनैवाला बदी यह शस्त्र है, ऐसा साधुओंकी मान्य है; योगियेंकि योगकी स्थिरता उसीमें है, वही एक योगियोंका क्योजन है। मोहाके चाहने बालोंके लिये वही एक मुक्तिका मार्ग है अन्य नहीं. उस तस्यको छोडकर अन्य कहीं भी जानन्द नहीं सरफता है। बही एक उत्तर किला है जहां क्षेश्युओंका गमन नहीं होना है। यदी तस्त्र कर्मोदी सेनाका तिरस्कार करनेवाला है। यही एक नहीं विचा है. बढ़ी एक उत्तम मंत्र है तथा बढ़ी एक केछ भीषधि है जो संसारके रोगोंको बाद्य करनेवाटी है ।

इसतरह स्वसमय और परसमयके भेदकी शुचना काने हुए गापा पूर्ण हुई ।

प्रत्यानिका-आगे पर समयमें परिलमन करते हुए पुरवदा ग्बद्धप फिर भी मगढ परने हैं ~

जो परदय्यम्य सुद्धं अगुद्धं शागेण गुणदि कदि आहे। मो रागवारेनभट्टी परवारेयचरो दबदि वीनो ॥ १६४ ॥ 1. Here makens one work off are a

et enn trener vent en amin min at a en e अन्तय साहित साहत्याच हुन हुन भी भी की (शाम शामाक्षे पाद व . . . म विकास पाट पटे हार अग्रह का ब द्वाबार अद्यास वास्त्र वरण है या अब बर (जीका मात्र सरविश्वास । चलाक वर्शियमे च्राराधन

प्रयोग्ध्यतः ६३ वर्गित्रदे यन्त्रयाचः १६१६ ताम न है। ferreid al abf mit ber bie atiebe attennene.

भएन शुद्ध मध्यपुरवासे भ्रष्ट रोका किस्त । वर सम्पन्न स्वाप्त

१९२.] श्री पंचास्तिकाय टीका । रागभावसे परिणमन करके ज्ञाम और अञ्चम द्वव्योमें उदामीनदारूप

अपेक्षा शुद्धोपयोग ही स्वचारित्र है—जो शुद्धोपयोगद्धप आत्माके अनुमवसे हरकर अन्य पदार्थोने राग या हेप करता है वह परमें आचरण करनेवाला अशुद्धोपयोगी है। अधिरत सम्यन्दर्धनकी अपेक्षा जो शुद्धात्माको पित्रमें कर्पका जो शुद्धात्माको पित्रमें होल है व स्वकर्णने राग करनेकी सक्ति ग्रात कर चुक्त है वह स्वचित्र है तथा जो आरामके ज्ञान अहानसे रहित निर्याद्धी अनासकारी प्रित्र मा प्रात्म होता है। स्व

वास्तवमें परमानन्दका स्थान अपना ही आत्माका अनुमन वै इसन्दिये नो अपना हिन बाइने हैं उनक्को उचित है कि सर्वे विकल्पोंसे मुंद मोडकर एक शुद्धात्माका ही अनुभव प्राप्त करें । इसीसे स्व-चारित्रक्षी प्राप्ति होगी। श्री दयनदि ग्रुनि एक्टबसतिसे कहते हैं—

झुद्धोपयोगसे विषरीत सर्व पाइटबींके सम्बन्धमें शुम्र मा अशुम मान करता है सो ज्ञानानंदमई एक स्वमावक्रप आत्माके तरवने करने-करम अनने ही चारित्रसे झुट होकर स्वसंवेदनमें रामग क्रियाँत विवसणपर चारित्रमें बरुनेबाला होनाता है, यह सुनन्न अभिनाय है। भाराप-इस गायानें भी यही मान है कि नो आनवादमें सन्साल नहीं है, वह परम आचरण करिनेबाल है। चारित्रकी

पैऽम्यासयंति कथयंति विचारयंति। स भावयंति च सुदृषुंदुरातस्तर्य ॥ ते माशसम्बयस्तृतस्तरोतध्ये। शिपं प्याति नवक्षेयस्त्रध्येम्यः ॥ ८० ॥ भावापं-नो कोई आस्तरत्वस्त्र अम्यास करते हैं, उसीझ इसन् करते हें, उमीझ विचार करते हैं, तथा वास्तर उसदीकी

्धी नैत्राधिकात्र सैका ह रामभारते परिणयत करके जात. तीर चारान प्राचीने उपारीनारण

शुद्धीप्रयोगमे जिल्लीत साँव परदानोहि सम्बन्धने शुक्र या भारत मार मन्त्रा है भी प्रानानंदगई एक श्वयावद्भाव अवस्थि तथ्यों मधीन इत्य आपी ही पारियमें प्राप्त शोहर अमेरेरानी साथ कियाँ ित्तालपर वर्षिको च रनेक वर हो लगा है, यह सुप्रका मनियाप है।

मारापे-इस साथाने की बड़ी मात्र है कि ती मारमतारापे सामुग्द गरी है, वर प्रथम आवश्य अल्लेबाटा दें। मान्यिकी भ्योधा सुदीवधीय ही अवसमित है-मी शहीवधीयस्थ मारगर्क अनुबन्धे इत्का अन्य बदावीने शत का देव करता है यह वरने

आयरम बरमेव य अञ्चोत्रशेमी बैश्वितित मन्दर्शनही अरेशा भी शुद्धाःमधी पीचानदः व अञ्चलदः व्यक्तप्रवाण चानित्रमें सीन है व स्वयुष्टियों स्थल अस्तेकी जाति पान कर चुका है वह स्यवित है नथा नी आस्माहे ज्ञान अञ्चलमे रहित निस्वादटी

अनात्मधानी विशयमा च व्या पश्वतिन है। यान्त्र में परमानन्द्रका स्थान अपना ही अल्माका अनुमद है इमलिये तो अस्ताहित च नते हैं उनक्षे उचित है कि सबै विक्रप्तोंने मुद्द मोर्डकर एक शुद्ध न्याका दी। अनुभव प्राप्त करें । इसीमें स्व-

चारित्रही पाणि होगी। श्री न्यनदि मुनि म्हद्वमस्तिमें कहते हैं-पेऽभ्यःसर्थातं कथयति जिचारयंति। स भाषयांत च सुहमंदुराहनतस्यं ।

ते माक्षमश्रयमनुनगर्गतसीस्य । भित्र प्रयासि नवकेवललक्ष्यिरूपं ॥ ८० **॥**

भावार्य-नो कोई आत्मतस्वका अभ्याम काने हैं, उमीदा कथन करने हैं, उमीका विचार करने हैं, तथा बारवार उसहीकी

२२४] श्री पंचानिकाय टीका । स्टीन न होने हुए नहीं पात की है बद्द संसारमें अवन्तरहरूपी कराय समा मिध्यादर्शनके आधीत हो संसारमें अवन्तरहरूपी

हुआ इष्ट पदायाँने राग तथा अनिट पटायाँने हेर करता है इनमे

निरंतर पापका आसव करता है व कभी सुन्दके क्षेत्रसे दान, पूना, नप, तपदि मंद कपायमे करता है तक पुण्यका भी जामक करता है, परन्तु इन तीय या मन्द्रक्षपाय कृप मात्रीमें मिध्यास्य द अने-तामुनंघी क्यायकी मलीनता होती है । इससे ये सब माव संप्तारके मदानेवाले हैं-मोक्षके कारण कमी हो नहीं सके तथा यदि मात्र चारित्रकी अपेक्षा गांधाके अधेषर विचार करें तो पेमा भाव झङ-कता है कि एक शुद्धोपयोग ऋष स्वात्यानुमव ही भोक्षका कारन है अर्थान् कर्मधंषका जलानेवाता है। यत्र बुद्धिपूर्वक व्याताके मावमें सममाव है, बीतरागता है, निर्विश्चल्यसमाधि है तब ही ध्यान है। न उम समय मुनिके महाबतादि व्यवहारचारित्रका विकल्प है न श्रावकके माग्ड बत, देवपूत्रा आदि पर्कमेका विकल्प हैं-अयीत् बुद्धिपुर्वक ध्याताके भावमें न शुभोषयोग है न नशुभोषयोग है। सम्यग्दारी मलेशकार मानता है कि मितने अंदा परिणामोंमें वीत-रागता रहेगी और वह निश्चय रत्नत्रय गर्भित होगी उतने अंश **ही** कर्मकी निर्मर। होगी व जितने अंज सरागता रहेगी उतने अंज कर्मोंका आसव तथा बन्ब होगा इसलिये ज्ञानी जीव नव शुद्धा-रमानुभवसे छुटकर शुभ वा अशुभ कार्योंमें मन, बचन, कापकी प्रवृत्ति कर रहा है तब वह चारित्रकी अपेक्षा स्वसमय रूप व आपर्ने 🛚 आप आचरनेवाला स्वचरित रूप नहीं है किन्तु आत्म-मृनिद्यको छोडकर परमें रत होनेके कारणसे परमें आचरण करनेवाला परच





२००] श्री पंचास्तकाय टीका ।

उत्धानिका-सागे अवापे पहले जीवादि नव पटार्थोडी पीटि-काके व्याख्यानमें "सम्मतं णाणजुर्न" इत्बादि व्यवहार मोझमार्गका

व्यास्यान किया गया तथापि निश्चय सोक्षमार्गका यह व्यवहारमार्ग सायक हे ऐसा बतानेके लिये फिर भी बहते हैं—

धम्मादीसहरूणं सम्मतं णाणमंगपुन्वगरं । चिद्वा तबंदि चरिया चवदारो मोक्खमगोत्ति ॥१६८॥ धर्मादिश्रद्धान मध्यस्य ज्ञानमञ्जलेष ।

धमादिश्रहान सम्यक्त ज्ञानमञ्जूनगर । चेटा तपित चर्चा व्यवहारो मोक्षमार्ग इति ॥ १६८ ॥

अन्ययसहित सामान्याथे-(धमाती) वर्ष बादि छ: द्रव्यींक (सहहणे) अद्धान करना (सम्मत्ते) सम्यक्त है । (अगपुडवगदे) ग्या-रह अंग तथा चीदहपूर्वका जानना (वाणे) सम्यादान है । (तथेंदे)

रह अंग तथा चीदहपूर्वका जानना (वाल) सम्यादान है । (संबंध) तपर्में (चिट्टा) उद्योग करना (चरिया) चारित हैं (ववहारों मोक्ल-सम्योधि) तह स्वतन्तर योधसर्थ हैं ।

मगोति) यह व्यवहार बोधमार्ग हैं । विद्योपार्थ-बीनराग मंदेश हारा ष्टे हुए श्रीव आदि पटा-धौरे सम्बन्धमें मले प्रकार अहान करना तथा जानना ये दोनों

सम्बन्दर्शन और सम्बन्धान गृहस्य और मुनियोमें समान होते हैं परन्तु साधु त्रवस्थियों हा चारित्र आचार सार आदि चारित्र प्रेथॉमें बहे हुए मार्गके अनुवार पथत और अपमत छठे सानयें गुणस्था-नेक्डे योग्य पाच महाजन, पाच ममिनि, तीत गुप्ति य छः आदस्यक कार्ति रूप होना हे । गृहस्थोंका चारित्र जवसकारपयन बार्स्स

नके योग्य पाच महाजन, पाच मिनिन, तीन गुनि व छः आदश्यक कारि रूप होना हो। मुह्म्भींका चारिज उपासकारण्यन साध्यें करी हुई गीनिक अनुपार चयम गुणस्थानके योग्य दान, शीन, पूना या उपना भारी रूप या होने, जन कादि ग्यार स्थान रूप होता है। यह स्यवदार भोक्षामींका स्थान है। यह स्यवदार भोक्षामींका स्थान है। यह स्यवदार भोक्षामींका स्थान है। यह स्यवदार







२०८] श्री पंचारितकाय टीका ।

उत्थानिका-व्यागे यह दिखलाते हैं कि जिसका श्रद्धान स्वामाविक मुखर्मे है वही सम्बद्धा है—-

जेण विजाणिद् सब्यं पेच्छिद्धि सो तेण सोवसमणुहवदि । इदि तं जाणिद्धि भविञ्जो अपन्यसत्तो ण सहहिद्धि॥१७१॥ येन विज्ञानारि गर्वे पर्यापे स तेव सीस्थयद्वपति । इति तज्ञानारि अयोऽभय्यमाची न ब्रह्मे ॥ १०१॥

दित तरानाति अप्योऽभव्यानचो न श्रहते ॥ १०६ ॥
अन्यपसहित सामान्यार्थ—(सो) यह लात्मा (जेन) भिप्त
कैयव्यतनते (सव्वं) सपको (विभाणिद) विशेषपने जातता है
(पेच्छि) देखता है (नेण) तिसहीसे (सोश्वर) सुसको
(अगुहबनि) भोगता है (अविशो) भव्य शीय (ते) उस सुसको
हिन्दी उमी प्रकार (लाणिदि) जान लेता है (अगठससतो) जमव्य
शीय (ण) नहीं (सदहदि) अद्यान करता है ।
विशेणार्थ—यह भीय लोड अलोड स्टो प्रकार करनेगाले केव-

विशापाय-यह भेड़ लोक अलोकको प्रकास करावाल करकामने संगय, विषये य अन्ध्यनसाय रहित तीन लोकके
तीन काल्यत्ती बन्नुसमुदको नानता है तथा लोकालोक प्रकासक
केवलदर्गनमें सता माल उन सबको एक साथ देखता है तथा उन्हों
केवलकान, केवलदर्गनकं हांस इन दोनोमें अभिन्न सुम्पको नितंतर
अनुस्त्र करात है। तो इन तरहके अनन्त सुम्पको महाप करित
योग्य प्रकार करना है सा अपनेन गुगम्पानकं अनुसार उसको
अनुस्त्र करा है वर्ग महत्व तीन है। अभव्य नीकके ऐसा अद्वान
नहीं होता है। भिम्याद्वीन आहि सान महत्त्वीके उपस्त्रम, स्वान

पदान वा क्षयमे मन्बस्टिशी सब्ब जीव चारित्रमोहके उपदान या इयोपदानके अनुसार यद्यपि अपने र गुणस्थानके अनुकृत विषयोंसे



जहांतक संमव हो शुद्ध जातमार्गे ही श्रद्धा व ज्ञान सदित चर्या हरे। .सदि उपयोग बीर्यंकी क्मीसे, स्वात्मानुमवर्गे अधिक न टहर सके

हो उसे भी पंचपासेटीकी भक्ति, खाव्याय, दान, धर्म गोठी व बरोपकारादि शुभोपयोग्में लगाकर अशुमसे रोके, तथापि शुभोपयो--शको साक्षात् मोक्षका कारण न मानकर उसको परम्परासे मीक्षका

कारण य साक्षात् ।पुण्यवंशका कारण जाने । सारपर्य यह है 🏂 निश्रयसे आत्माधीन स्तात्रय ही ग्रहण करनेयोग्य हैं। 🚎 श्री पद्मनंदि मुनिने एकरवमावनादशकमें कहा है---

चैतन्यैकश्वसं वित्तिवृंदर्शमा सीवं मेक्षदा । - ' -- । लब्द्या कर्यविक्वेचितनीया मुहुमुँहुः ॥ ४ ॥

मोझ एव सुंबं साधातचा साध्ये मुमुखुमि । े संसारेः तु तथास्ति यहस्ति यसु तथ तत् ॥ ५॥

भावाध-चेतनाफे स्वमावमें प्यन्ता वाकर अनुमृतिका पाना यग्रपि'दुर्लभ है तथापि यहीं मोक्षको देनेवाली है। इसे जिस तरह बने पाइर इमीका बाग्यार चिन्तवन करना चाहिये । साक्षात् मोक्ष

ही सलकः प है। मोक्षके चाहनेवालोंकी उमहीका सापन करना चाहियें । संपारमें यहां वह सुख वहीं है-यदि कुछ सुख है लो वह मोक्षश सख नहीं हैं.ो . 🕝

इस तरह शुद्ध रहंनज्ञयमे योदा व अशुद्ध रत्नत्रयसे पुण्यकंप होता है ऐसा करते हुछ,गाया पूर्ण हुई । ा पीडिका-इनके,पीछे सुरुग परसमयका व्याख्यात करनेकी

पांच गायांपं हैं। उनमें. . उसका सुञक्रप कथन है फिर ... याथामे इसीका सकीच तीन गाय जेरि

ेलिका है।

ब्यन,

















रामगतिमें मादर भी वश्यराय भवस्य मुनिका भागन ही नाता ी ! तारवें यह है कि स्थमसय ही वाम बन्यानहारी है-उमीका भागाम साला मोग्य है।

भी पद्भिति मुनि एक्स्यमसितमें बद्भे हैं-पेऽस्टासदेति कार्यनि विचारवंति । मंभाददेति च मुहुमुंदूरात्मतस्यं ॥

मारामरायमञ्ज्ञमार्गतसीर्वं

शिमं प्रयोगि मयबेवललव्यक्तं ॥ ८० ॥ भाषार्थ-त्रो बारवार जात्मतस्त्रध्य अन्याम करते हैं, उसीका इयन बरने हैं, उमीशा विकार बरने हैं, तथा उमीका ध्यान करते

है ने शीम ही अनंत्रशानादि नव केंद्रतविषद्धप गहान य अनंत सुना ह्म अदिनामी मीशपदको पर्व आने हैं।

देग्यानिका-आर्ग पहले सम्रथे में बात कही है कि मी षीर्यक्रादिही फ्राक्तिमें सीन है बद उमी भवते मोशको नहीं पाता है, मात्र पुरुवश्य ही कामा है। इसी ही अधेको दढ़ करने हैं-अररंतसिद्वचंदियपायणभन्नो परेण णियमेण ।

जो क्लांट नरोकम्य सो मुख्योग समादियदि ॥ १७२॥ सर्गित्रचेन्द्रपाचनलय परेण निष्मत ।

य बराउतिक स्थास सुरक्षीत सम्रद्रभ । ३०९ ॥

अन्ययसदित सामान्यार्थ-(तो) तो (अरहनिम्हर्गिदेय-पवपणमनी अग्रन, मिट, अर्दन्यतिमा व निजवाणीचा अस होता हुआ , परेण । उत्तम प्रधारमे (ववोद्धम्म) तपक आवरणको (मृजिंद करता है थीं) वह (जिथ्मेज) नियममें स्थलोग) देव-सोक्यो (समादियदि) पाप्त करता है ।













.

